मिथिला चित्र प्रवेशिका

भाग : 1-2

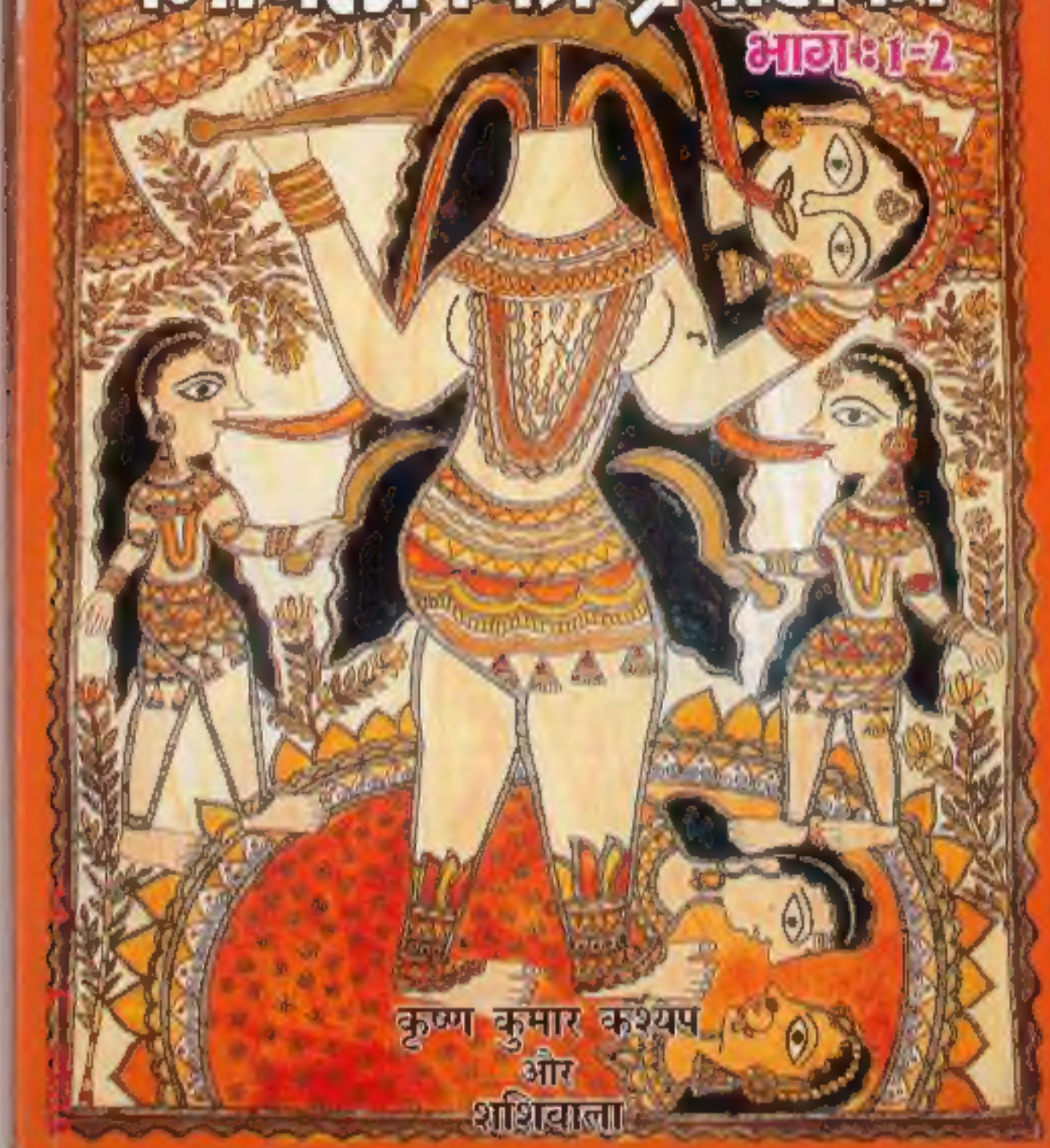

कृष्ण कुमार कश्यप
और
शशिबाला

मिथिला चित्र प्रवेशिका

(भाग 1-2)

लेखक :
कृष्ण कुमार कश्यप
और
भारतीबाला

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय, दरभंगा बिहार - 846001

प्रकाशक :

भारती विकास मंच
बाहेला, खगरिया सराय, दरभंगा
बिहार – 846004

कॉपी राइट : कृष्ण कुमार कश्यप और शक्तिबाला

मुद्रण वर्ष : अक्तूबर, 2009

सम्पर्क-सूत्र : (मोबा.) 9931669959

मूल्य : तीन सौ रुपये मात्र।

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

भूमिका

'मिथिला चित्र प्रवेशिका' का मुद्रित रूप काफी प्रतीक्षा के बाद अब आपके हाथों में है। यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था, किन्तु अभी तक **भारती विकास मंच, बरहेता** में "जीवन और शिक्षण" की हमारी योजना के तहत प्रशिक्षण ले रही छात्राओं के लिए इन पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियों से काम चलता रहा। बिना मुद्रित हुए ही इन पुस्तकों ने हजारों स्त्रियों को आर्थिक जीवन में लगाने में सहयोगी पायी, यह सोच कर मन को सन्तोष होता है।

मैंने अपने शैशव काल में एक संकल्प के साथ काम करना प्रारम्भ किया। संकल्प यह कि "जीवन और शिक्षण" के अपने कार्यक्रम में कभी किसी छात्रा से पारिश्रमिक नहीं लूंगा और साधन के लिए कभी सरकारी या गैर सरकारी भ्रष्ट व्यवस्था के आगे घुटने नहीं टेकूंगा। यह दोनों ही संकल्प आज के समय के लिए प्राणघाती है, और हमारे साथ भी कुछ वैसा ही हुआ। लेकिन भीतर और बाहर के भीतरघा हमलों के बाद भी हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में कामयाब रहे। आज मिथिला के गाँवों में, सभी जाति और धर्म की स्त्रियाँ मिथिला चित्रशैली में रंगांकन के काम में भरपूर जुटी रहती हैं और सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में उनका मूल्यांकन निराला कह कर नहीं होता है। गाँव-गाँव में शिक्षित-अशिक्षित बालिकाएँ और पारिवारिक स्त्रियाँ रोजगार के इस क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं, किन्तु यह बहुत कम ही लोगों को ज्ञात होगा कि इस सम्पूर्ण उद्योग के टिके रहने या इसके विकास के लिए हमारी सरकारें बहुत उत्साही नहीं रही हैं। शायद दिन से ऐसा ही होता आया है। सत्ता किसी ऐसे व्यक्ति के काम की सराहना नहीं कर सकती है जो स्वयं अत्यन्त साधारण पृष्ठभूमि से आता हो। यह उपेक्षा तब और बढ़ जाती है जब वह काम भी उपेक्षितों या वास्तविक बालकों के लिए किया गया हो। जो भी हो, हमारा खुद का जीवन भले संकटों से जूझते बीता हो, किन्तु लोग कहते हैं कि हमने जीवन में एक बड़ी सफलता पाई, और यही सफलता हमारे जीवन की सार्थकता है।

लेखक, मिथिला की यह कला सन् 1966-'67 में पहली बार मधुबनी जिले

के जितवारपुर और रांटी गाँवों से बाहर व्यवसाय के लिए निकली। महज तीन-चार वर्षों में ही यह कला भारत की सीमा लाँघ गई। यूरोप और अमेरिका के लोग इस अनोखी चित्रकला को आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगे। उन्हें तब और आश्चर्य हुआ, जब उन्हें ज्ञात हुआ कि इन चित्रों के रचनाकार मूलतः स्त्रियाँ हैं। उन्हें लगा, इन स्त्रियों के चित्र विकास के चित्रों से कहीं आगे हैं। लेकिन देश-विदेश तक फैली उस नये परिचय के साथ एक गलत नामाकरण भी फैला। अदूरदर्शी सरकारी पदाधिकारियों ने इस कला को **"मधुबनी पेन्टिंग"** कह कर मिथिला के शेष अंश के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया। मिथिला से बाहर के लोग यह मानने को तैयार ही नहीं होते थे कि यह कला पूरे मिथिला की है, मधुबनी जिसका एक भाग है। इस गलत नामाकरण से शेष मिथिला और मधुबनी को भारी नुकसान उठाना पड़ा। एक ओर सरकारी और स्थानीय प्रयास इस कला को 'मधुबनी कला' के रूप में स्थापित करने का तो दूसरी ओर हमारे जैसे कुछ लोगों का दल इसे **"मिथिला चित्रकला"** कहने की ओर रहा है। इसी क्रम में हमें लगा कि यदि इस कला को नयी संसृष्टि से संस्कारित किया जाय तो सम्भव है कि गलत नामाकरण की भूल से इस कला को उबारा जा सके।

परम्परा की कोख से उपजी इस कला में 1966 से पहले व्यवसाय नहीं जुड़ा था। सन 1970 में पहली बार भारत सरकार ने इस कला को लोकचित्र की मान्यता प्रदान की और मधुबनी में अपना विपणन केन्द्र खोला। अल्प समय में ही यह कला अन्तर्राष्ट्रीय कला - बाजारों में अपनी एक पहचान बना सकी। देश-विदेश से कला-प्रेमी और व्यवसायी मधुबनी आने लगे। लगा कि कला का यह उद्योग कुछ ही समय में मिथिला की आर्थिक दशा बदल देगा, किन्तु सब कुछ मधुबनी के एक सीमित भाग में ही सिकुड़ा रहा। चित्र-उत्पादन में भी गुणात्मक विकास का प्रयास नहीं हुआ। दूसरी ओर, इस व्यवसाय में मात्र दो उच्च जाति की स्त्रियाँ ही संलग्न थीं, जिनके घरों में इन चित्रों का पारम्परिक उपयोग होता था। विडम्बना यह थी कि अधिकांश कलाकार अपनी ही सुन्दर रचना के बारे में ग्राहकों को ठीक से बता नहीं पाती थीं। इस परिस्थिति में न तो इसका बाजार बहुत व्यापक हो सकता था और न बाजार अधिक दिनों तक टिकाऊ रह सकता था। ऐसी परिस्थिति में मैंने निश्चय किया कि -- इस कला से सम्बन्धित शिक्षण-सामग्रियाँ विकसित की जाँय ; चित्रशैली में उपयोगिता

मूलक वस्तुओं (जैसे वस्त्रांकन) का उत्पादन और उनका बाजारीकरण किया जाय, देश-विदेश के लोगों को (जो इसके ग्राहक भी हैं) इस कला के गूढ़ शैक्षणिक पहलुओं से परिचित कराया जाय और लोककलाओं को रुचित लोगों की एक **क्रमाकृ शिक्षण-पद्धति** के रूप में विकसित किया जाय।

मिथिला लोकचित्र को रुचित लोगों की कमाई का माध्यम बनाने में भारती विकास मंच की सह-संस्थापिका श्रीमती शिवा और संस्था के गर्भ से उभरी विशिष्ट प्रतिभा श्रीमती शशिबाला, सुश्री अनीता दास, विनीता दास और संगीता गोरकी ने उल्लेखनीय कार्य किया। शशिबाला ने तो अपना तन, मन, धन सब अर्पित कर संस्था के कार्यक्रम को सफल बनाया किन्तु और भी बहुत स्त्रियों-बालिकाओं ने इस महान कार्य में सहयोग दिया, जिसे भिनाक नहीं जा सकता है।

यह सच है कि मधुबनी के क्षेत्र में सर्वप्रथम महिला कलाकारों ने मिथिला के अनुपम चित्रों को चित्रक-पटल पर रखा और आज भी चित्र-निर्माण के कार्य में सर्वाधिक कुशल कलाकार मधुबनी में हैं, किन्तु यह भी सच है कि इस शैली में वस्त्रांकन का कार्य सर्वप्रथम भारती विकास मंच, डरहेला ने मधुबनी संगीत क्षेत्र मिथिला में लागू किया और आज भी वस्त्रांकन के कार्य में सर्वाधिक कुशल और बहुसंख्यक कलाकार दरभंगा के क्षेत्र में हैं। इससे बाजार का सन्तुलन तो होता ही है, साथ ही एक भाँग की कमी होने पर कलाकार दूसरी विधा में काम करने लगती हैं जिससे रोजगार का सन्तुलन भी बना रहता है।

इस दिशा में सबसे बड़ी कमी अभी तक एक ऐसी पुस्तक के प्रकार की थी जो वस्त्र-चित्रांकन करने वाली महिलाओं को आकृतिक चित्र बनाने में प्रशिक्षित कर सके। **मिथिला चित्र प्रवेशिका** के प्रकाशन से अब इस समस्या का निदान हो सकेगा। मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग -1 का प्रकाशन सन 1999 में ही हुआ था। इसके तुरंत बाद इस पुस्तक का प्रकाशन उचित था किन्तु सीमित साधन की स्थिति में हमें एक ऐसी पुस्तक का प्रकाशन आवश्यक लगा जो नव प्रशिक्षित या अल्प प्रशिक्षित बालिकाओं को भी वस्त्रांकन के रोजगार में लगा सके। इस कारण हमें भाग 2 की जगह पर **मिथिला चित्र-कौर, भाग 3** का प्रकाशन करना पड़ा। बहरहाल, कहते हैं, देर आये दुरुस्त आये। अब आशा है कि इस पुस्तक से बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो सकेगी।

ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद कि उसने हमें अपने लक्ष्य के साथ यूरोप

के देशों तक मिथिला - कलाविद्या के प्रसार का अवसर प्रदान किया। अब आशा है कि इस पुस्तक का अंग्रेजी और इटालियन भाषाओं में भी अनुवाद हो सकेगा। मुद्रण के लिए अभी और भी कई हस्तलिखित पुस्तकें प्रतीक्षा में हैं, किन्तु मेरे जैसे साधनहीन साधक केवल आशा ही कर सकते हैं, किसी को वचन नहीं दे सकते। हमें प्रसन्नता है कि इसने मिथिला की स्त्रियों के हित और अपनी माटी की संस्कृति के संवर्द्धन में अपने जीवन को लगाया।

कभी-कभी मेरा मन भी उद्वेलित है और लगता है कि मैंने जानबूझ कर संकट का जीवन मोल ले लिया। उस समय मेरी शिष्या और इस पुस्तक की सह-लेखिका शशिबाला मुझे समझाते हुए कहती है कि कोई भी कष्ट असल में कष्ट नहीं होता। कष्ट का अर्थ है आपका निश्चय है। यदि आपने अच्छे काम का निश्चय किया है तो फिर कष्ट के लिए चिन्ता क्यों, वह तो कार्य की एक प्रक्रिया मात्र है। यह ऐसी बात है जिसे मैं आज तक ठीक से समझ नहीं पाया और मेरी शिष्या मुझे प्रेरणा देती है। भगवान उसको ऐसी निर्मल बुद्धि बनाए रखे और मेरा भी धैर्य-वर्द्धन हो ताकि अभीष्ट के यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति दे सकूँ। ..... शुभमस्तु !

गांधी जयन्ती
2 अक्तूबर, 2009

कृष्ण कुमार कश्यप

अनुक्रम

ओनामासीधं	09	कुशल कवर	64
कथनी	11	दुपट्टा	65
पाठ-3		प्रतीक	66
कमल	13	**आकृति-खण्ड**	
सूर्य के खण्ड	14	**अनुभाग -1**	
सूर्य	15	आकृति - रचना	68
माप	18	कपाकन : श्रीगणेशजी	77
छायी	20	**अनुभाग - 2**	
सुरमा	21	मिथिला चित्र में देवाकृति	81
मयूर	22	श्रीगणेशजी	82
चकरी	23	महादेव	83
चकरी से शंख	25	अर्धनारीश्वर	88
गर्भाधक	30	ब्रह्मा	91
बीस	34	विष्णु	93
अरिपन	37	विष्णु के अवतार	94
पूरैन	38	मत्स्यावतार	95
पताका	39	कच्छपावतार	99
देवोत्थान अरिपन	42	वाराह अवतार	101
कलश	45	नृसिंह अवतार	103
गौशाला	47	वामन अवतार	105
कमलदह	48	परशुराम अवतार	107
कौआ	50-51	रामावतार	109
उपार्जन और रोजगार	54	कृष्णावतार	111
मुट्ठी	55	बुद्धावतार	112
कोर (बोर्डर)	60	कल्कि अवतार	117
रोबाल पैट	62	हनुमान	119
मसनद (बोल्स्टर)	63	चित्रगुप्त	120

देवराज इन्द्र	122
कामदेव	127
कार्त्तिकेय	129
नारद	130
अनुभाग - 3	
शक्ति	133
महाकाली	135
छिन्नमस्ता	137
महालक्ष्मी	141
दुर्गा	143
महासरस्वती	146
त्रयना योगिनि	148
सीता - कथा	150
कृष्ण-लीला	159
खण्ड - 2	
अनुभाग - 4	
मिथिला चित्र में मानवाकृति	168
खण्ड - 2	
अनुभाग - 5	
मिथिला चित्र में दानवाकृति	174
अनुभाग - 6	
मिथिला चित्र में जीवाकृति	178
सामा-चकेवा	191

ओनामासीधं

पाठ - 1

श्रीगणेशजीके इस मंत्र — ओनामासीधं का शुद्ध रूप ॐ नमः सिद्धं है. परम्परागत शिक्षा-पद्धतिमें, शिशुओंको अक्षर ज्ञान करानेके प्रथम चरणमें श्रीगणेशजीके इस मंत्रके साथ गुरु जी भूमि पर उनके एक प्रमुख आयुध 'अंकुश' का चित्रण करते हैं. अबोध शिशु जैसे तैसे, अपने ढंगसे, तरह तरहके अंकुश बनाते हुए, तोतली बोलीमें ओं नमः सिद्धंको ओनामासीधं कह कर बोलते जाते हैं और इस प्रकार शिशुके विद्याभ्यासका श्रीगणेश होता है।

श्रीगणेशजीके अंकुशके कई रूप हैं —

श्रीगणेशजी के अंकुशों का अभ्यास मूलतः छात्र की अंगुलियों में लोच लाने के लिए कराया जाता है। अंकुश का एक सरल रूप यह भी है —

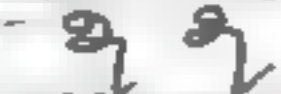

अंकुश के इस रूप में ज्यामिति के पूर्ण अर्धांकित सरल रेखा लम्ब और क्षितिज रेखा, पाँच चिन्हों का समावेश है। अतः प्रारंभिक अभ्यास के तौर पर ज्यामिति के इन पाँच चिन्हों का अभ्यास कराना चाहिए। गणेशजी का यह अंकुश विश्व की समस्त पंक्तियों और सभी प्रकार के चित्रांकन का बीज रूप है। इन पाँचों चिन्हों के विविध रूपों में परिचित छात्र सुगमता पूर्वक भिन्न भिन्न चित्र बना सकते हैं —

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

(6)

(7)

नोट — चिन्हों के प्रयोग 'कलमदानी' के रूप में चित्र के अलंकरण के लिए किया जाता है।

कचनी

पाठ-२

कचनी का महत्व मिथिला चित्र में वैसा ही है जैसा कि शरीर में प्राण का। कचनी के कारण चित्र प्राणवन्त लगते हैं। कचनी का अर्थ है 'कचना' महीन महीन काटना।

मिथिला चित्रशैलियों को प्रमुख तीन भागों में बाँटा गया है। तीनों भेदों में कचनी यद्यपि कुछ सामान्य 'कचनी' के प्रयोग दिखाई पड़ते हैं।

दो कचनी/सही कचनी

दोहरी कचनी

भरल कचनी

लहरी कचनी

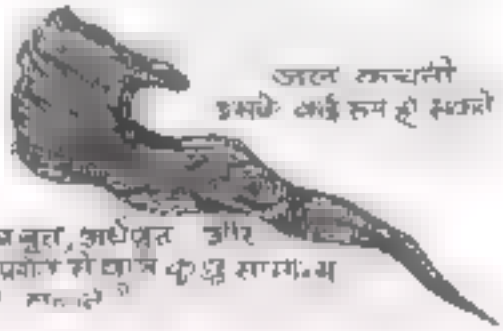

जरल कचनीमें
इसके कई रूप हो सकते हैं।

जरल बुटा, आधेपात और
कचनी के प्रयोग को छोड़ कुछ सामान्य
चित्र भरा गया है।

पाठ-३

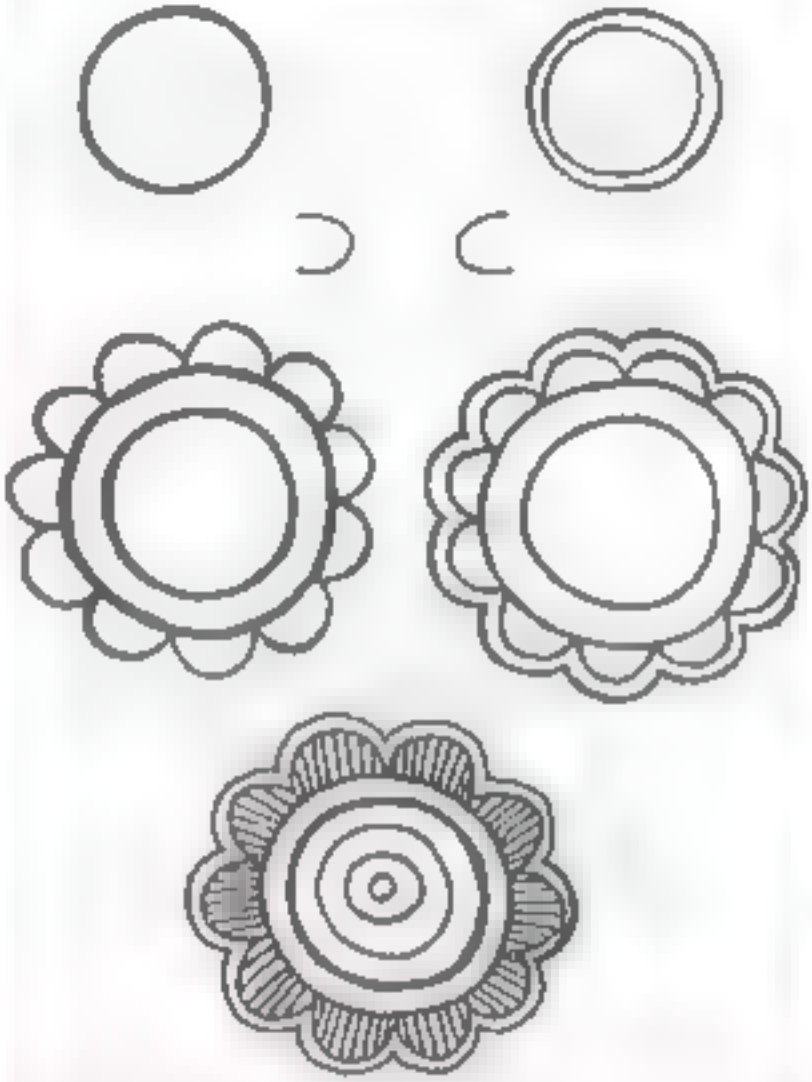

कमल

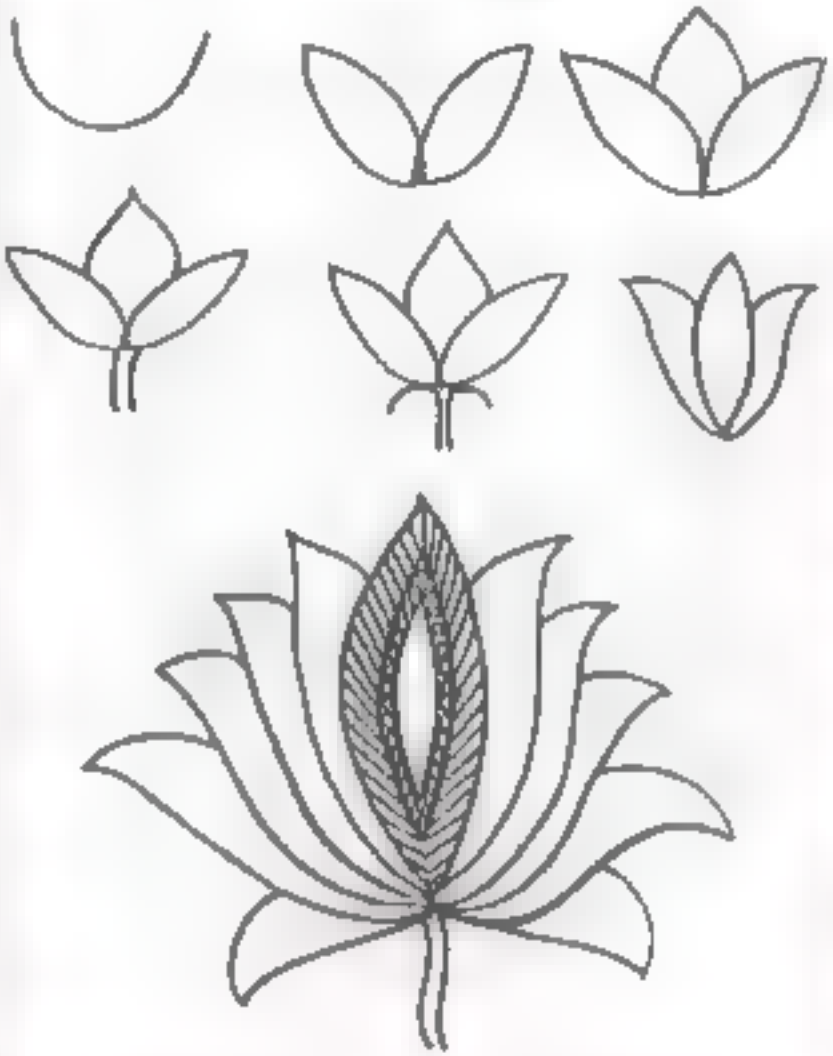

सूर्य के खण्ड

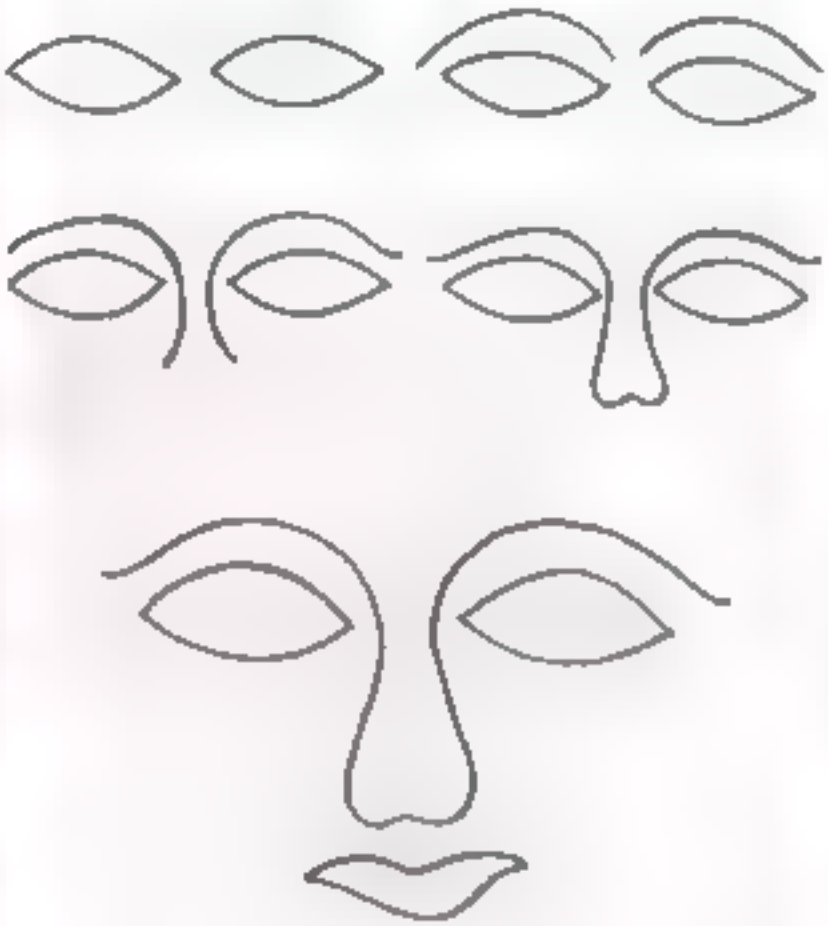

सूर्य

सूर्य

माछ

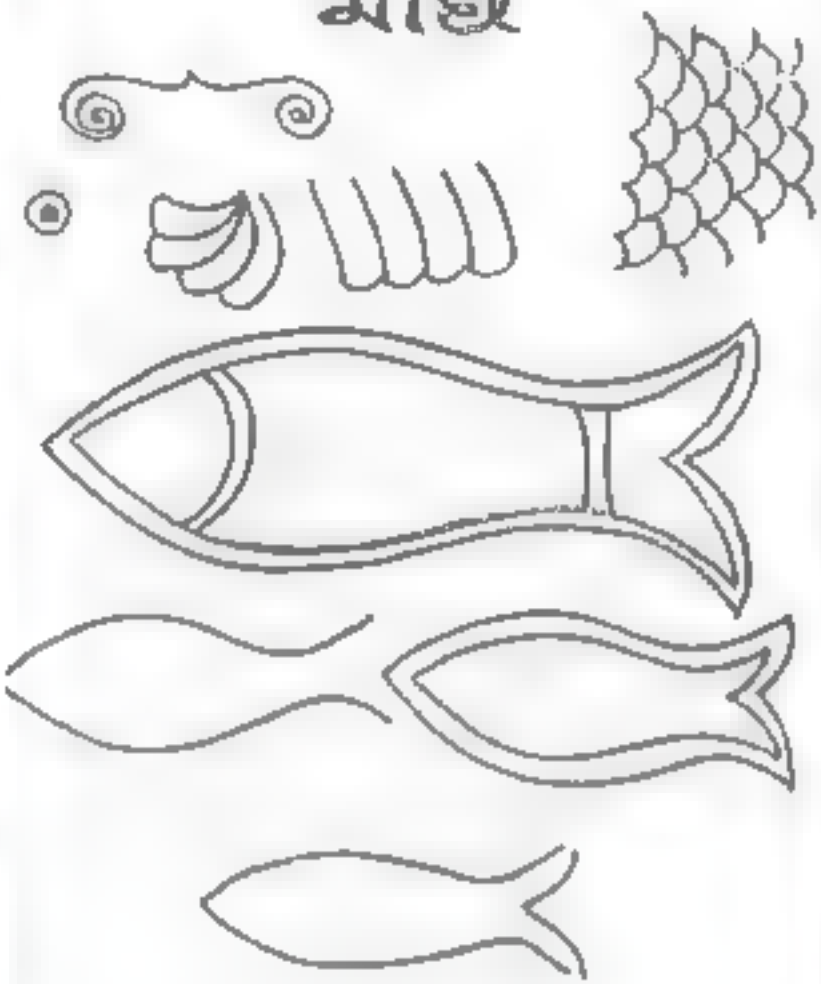

हाथी

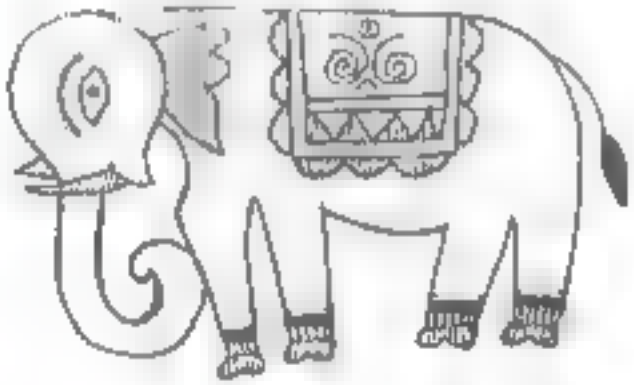

सुग्गा

मयूर

चकरी

पाठ - 4

चकरी चलते हैं चक्रवात का केंद्र
गुर्यको या सौंपकी कुंडली जोड़ी अवर्त का सादृश्य
केवल सिनेमेल चेंबरी जोड़ें ही नहीं बल्कि मशीनके
विभिन्न भागोंमें रहनेवाले जोड़ोंके द्वारा भी किया जाता
है। एसेंबलिंगकी ही एक और विधि - **गोदनामें** _
चकरीका बहुत उपयोग होता है

चक्रवातका उपयोग विभिन्नविध और देह पर
जो इनका विस्तृके रूपमें उपस्थित होता है उसके लाभ जोड़ोंमें
लिखाकर तथा [illegible] आदि है जहां पर जोड़ रहते
रहते हैं केवल सदस्यों के कई दीवारों पर गोचर आती
योजना तो चकरी रेंगसे चकरी बनाए जाते हैं

आगेके पृष्ठों पर चकरीमें **तामा** ⑥ ⑨
लगा कर विस्तारीकरण दिखाया गया है।

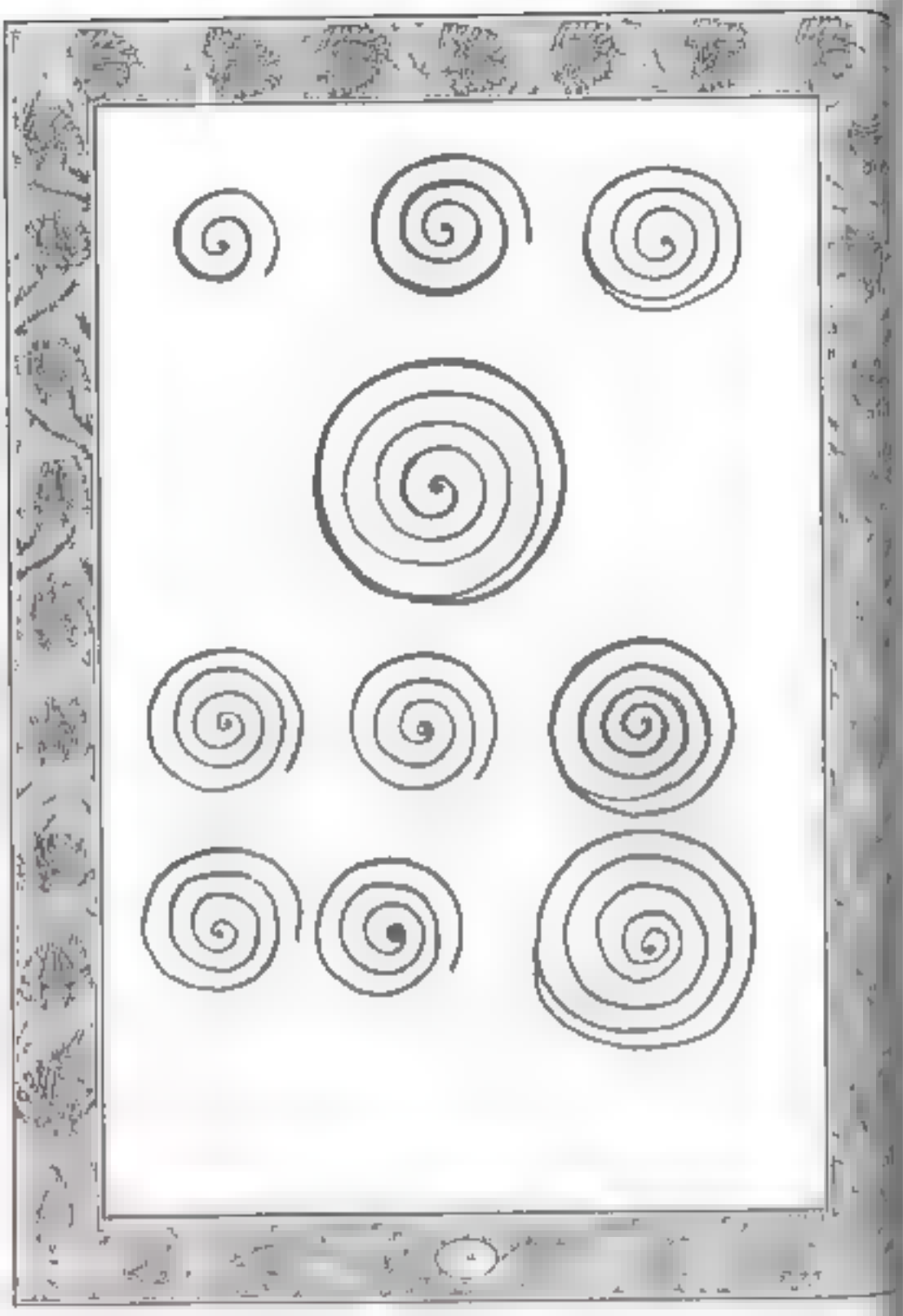

चकरीसे शंख

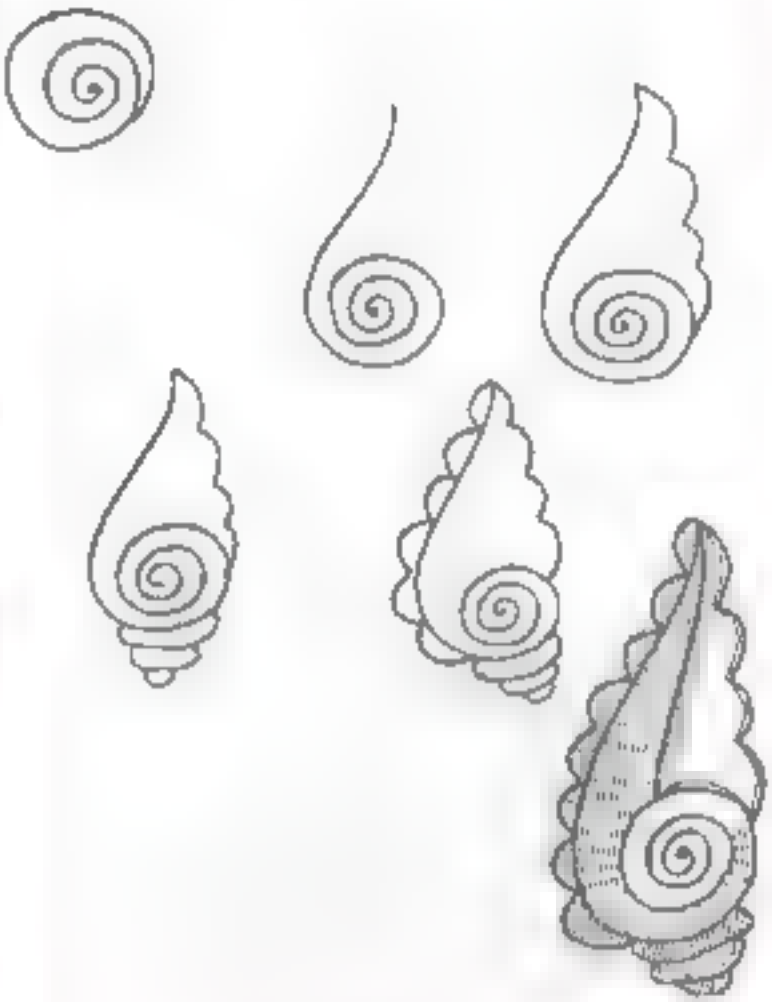

आपने कई सरल अलंकरणों से परिचय प्राप्त किया अब आप त्रिभुज ⏚ सोहाग ~~~ करें गोले ○ तारा ✶ हीरा ◇ बिन्दु • के मेलसे चक्राकार अलंकरण करें

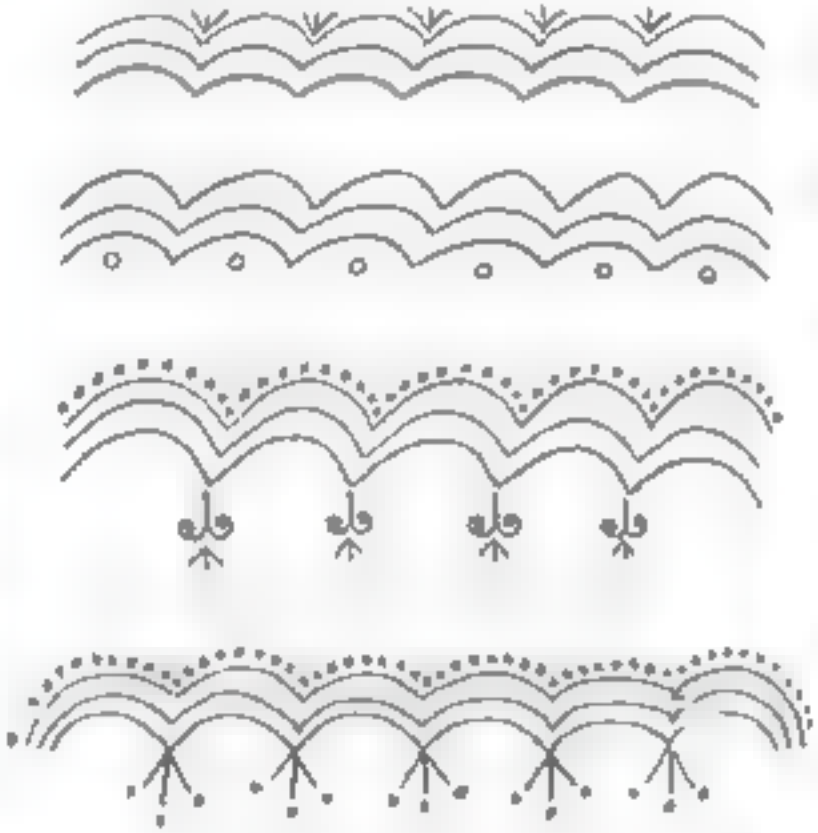

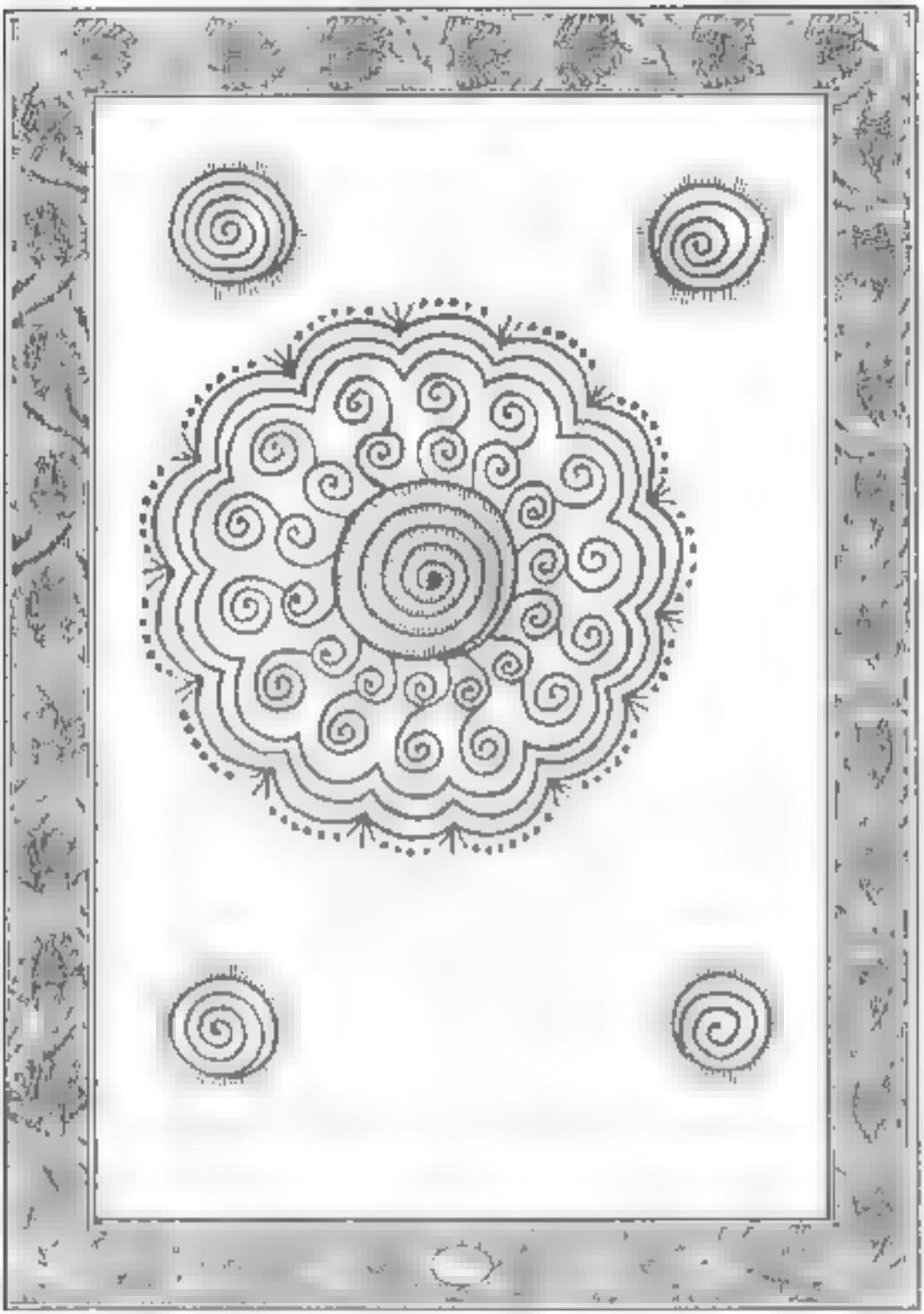

पाठ-5

गर्भचक्र

गर्भचक्र [illegible] एक अतिप्राचीन कृति है, जो आजसे लगभग साढ़े पैंसठ वर्ष पूर्व तक प्रयोगमें था।

उन दिनों, परिवारकी कोई कन्या अथवा पत्नीका रजस्वला होनेपर उस अवसरपर परिवार कोई शुभ मुहूर्तमें शास्त्रोक्त विधिपूर्वक भूमि पर 'ऋतु आरपन' बनाती थी। इस आरपनमें पाँच पुरैन — दो दो पुरैन बाँये दाँये और बीचके पुरैन पर गर्भचक्र, नीचे बाँस, फूल सहित बनाए जाते थे।

गर्भचक्र बनानेके पीछे कामना यह

हानी थी कि जो वरन्या 'अर्बिता' हुई है, वह अपने जीवन में एक पुरुष (पति) के संग सुख पूर्वक रहते हुए गर्भ सुख प्राप्त कर सके। ऋतु अरिएन धरतीमाता की अभ्यर्थनामे नव-२ सन्तानके लिये बनाए गये

इस पाठमें भूलभुलैया परिपत्रकाने गर्भचक्र को दस खण्डोंमें विभक्त कर के सुगम अभ्यासको सुगम बनाया गया है। अन्तमें चक्रके खण्डोंमें दर्शाये क्रमानुसार दस कृतियों को हल पूर्ण किया है

गर्भचक्रके खण्ड

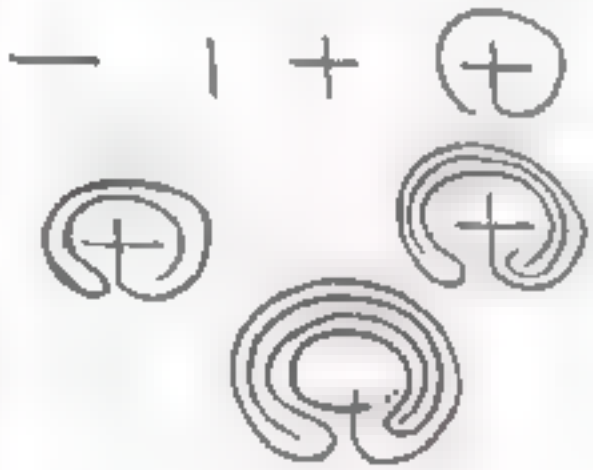

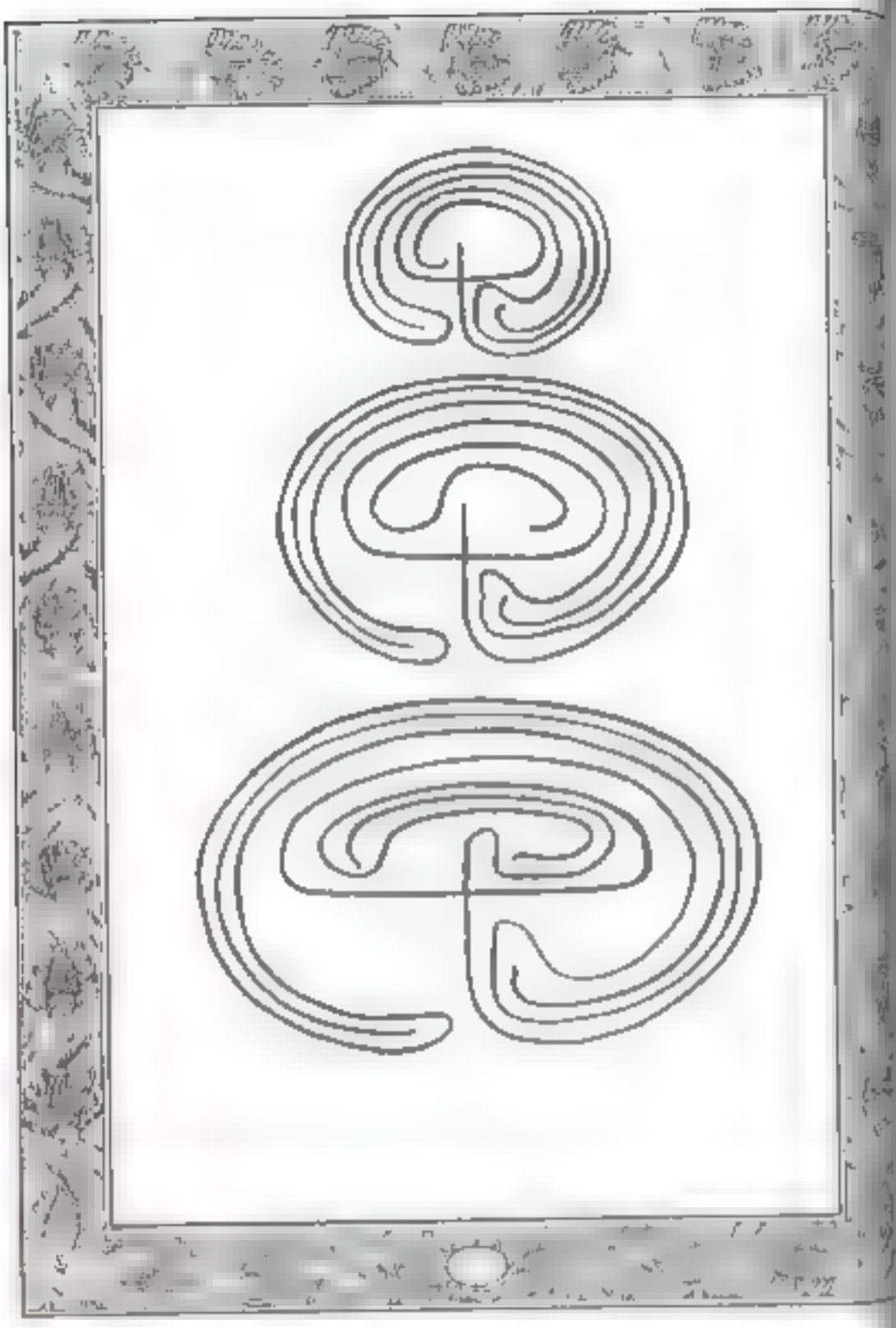

गर्भचक्र

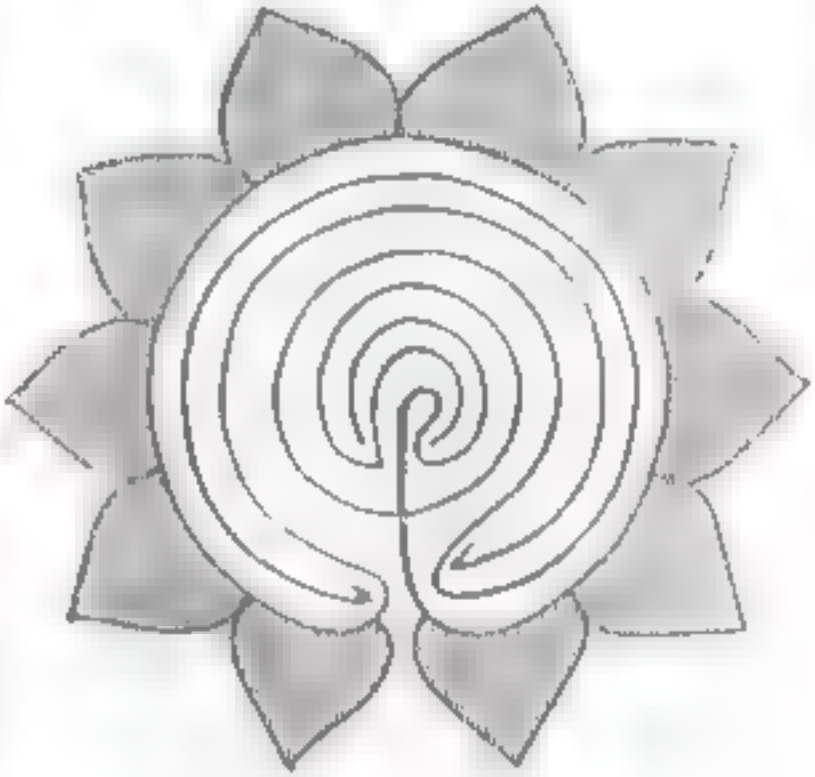

बाँस पाठ - 6

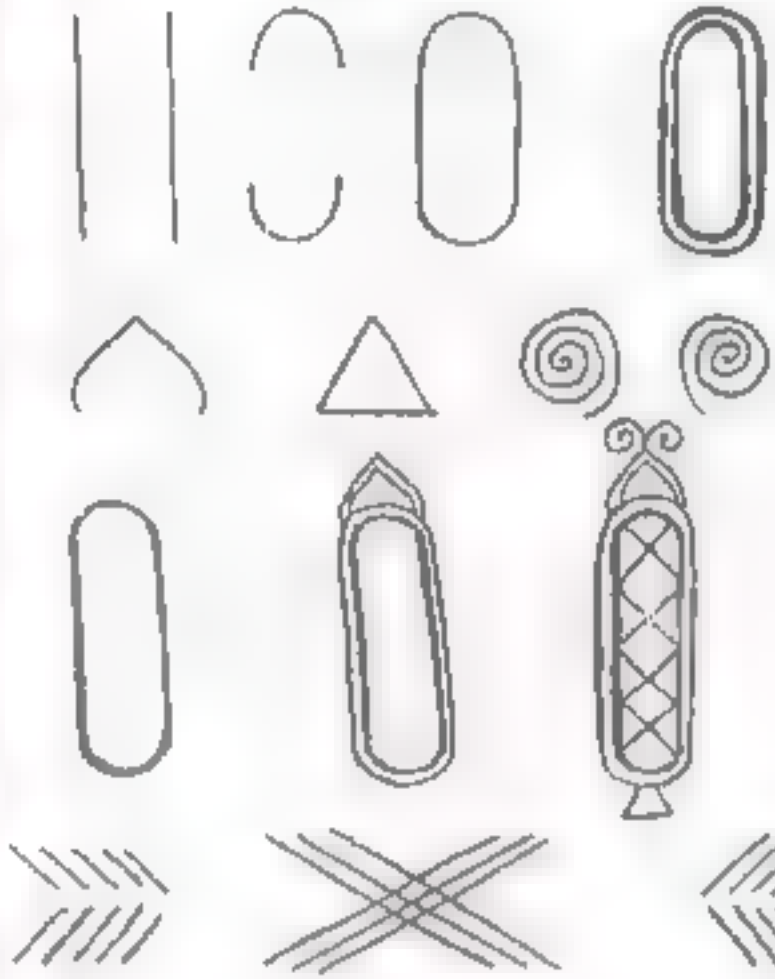

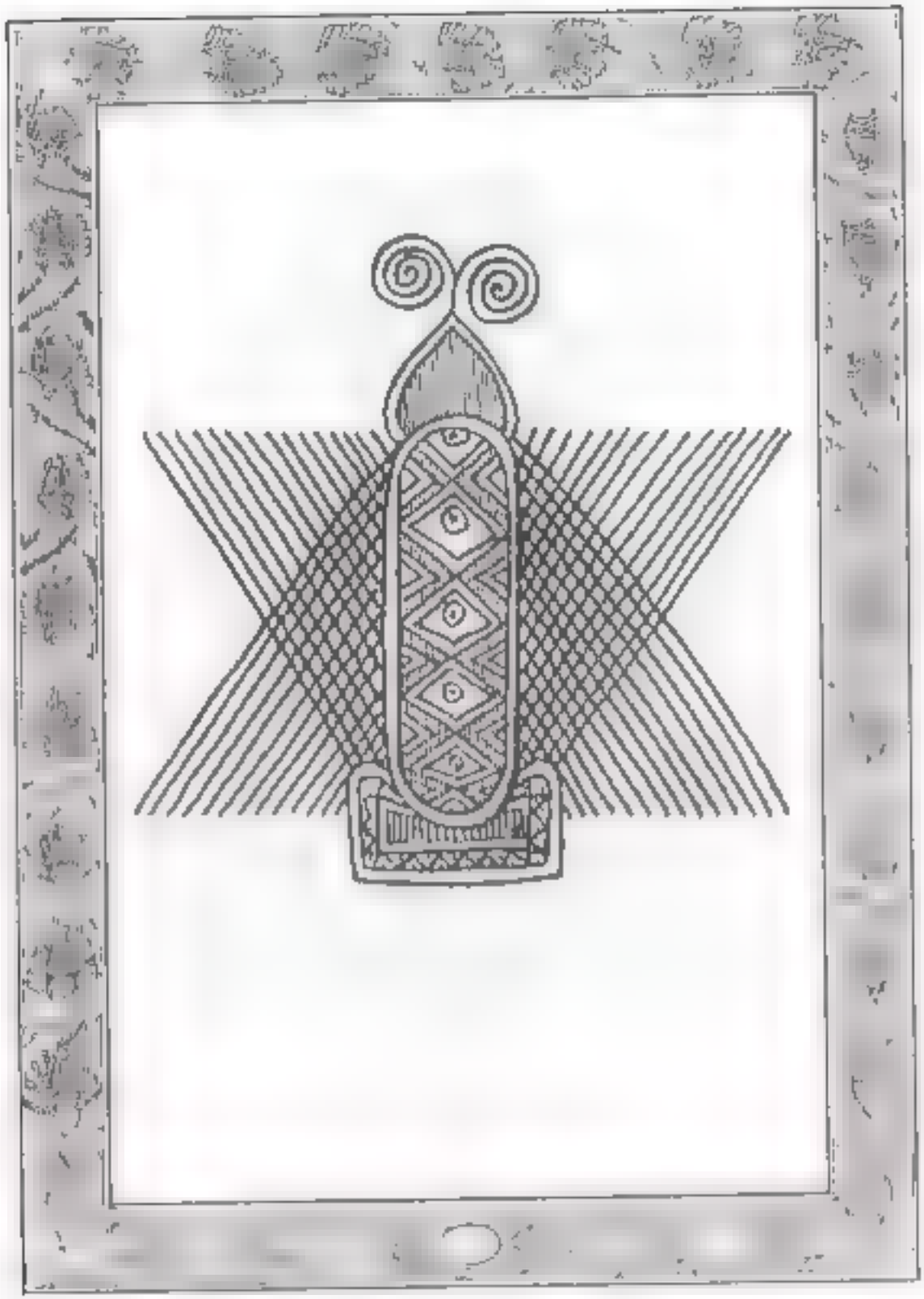

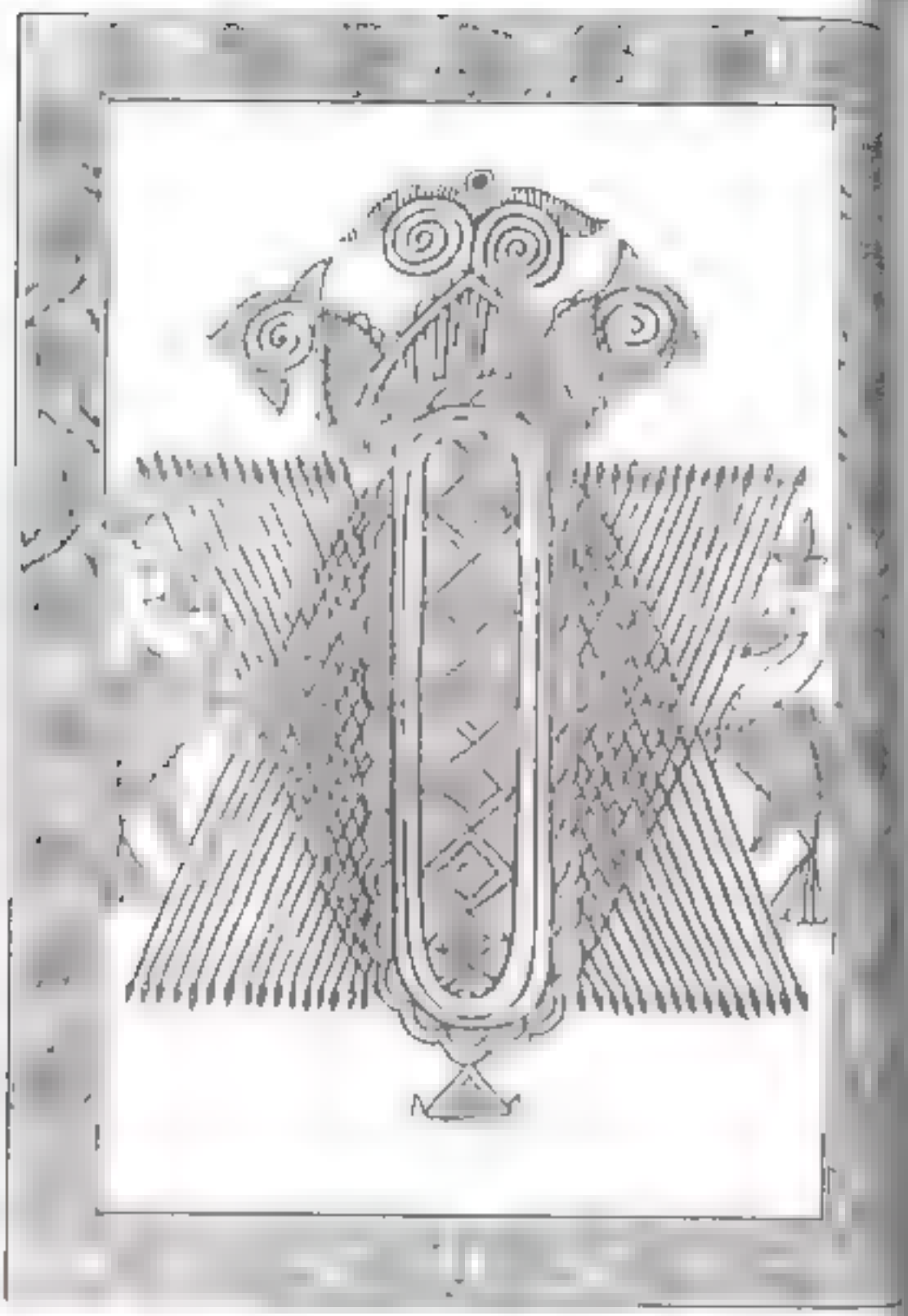

अरिपन

पाठ-7

[illegible] अरिपनका [illegible]

[illegible] सांस्कृतिक [illegible], धार्मिक [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

घुरैन

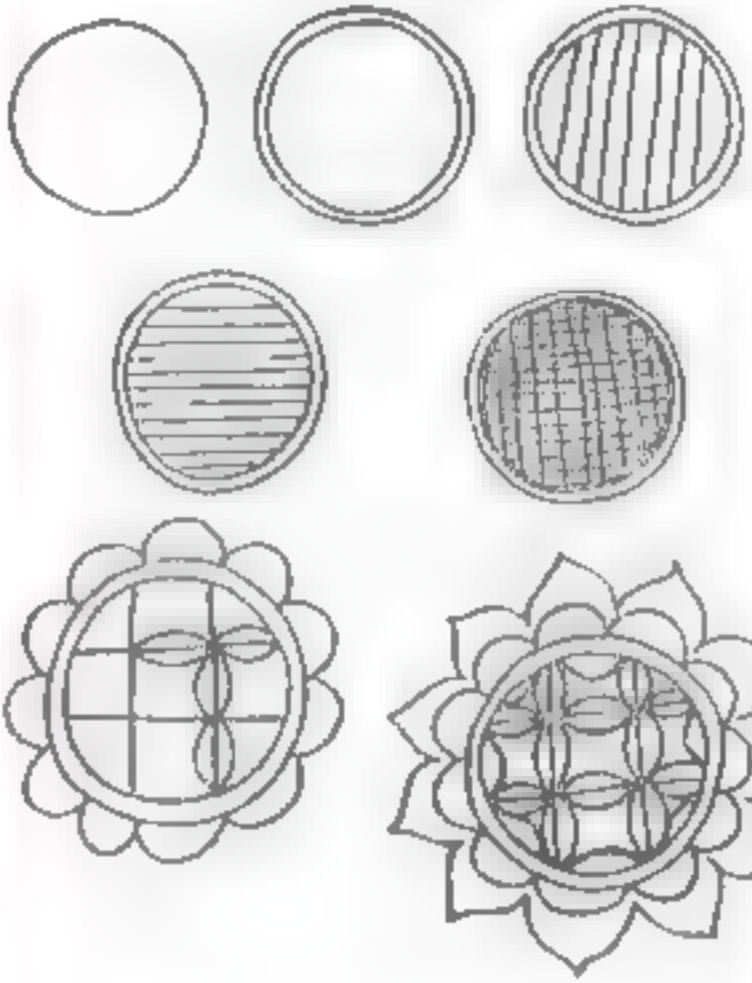

घनमा

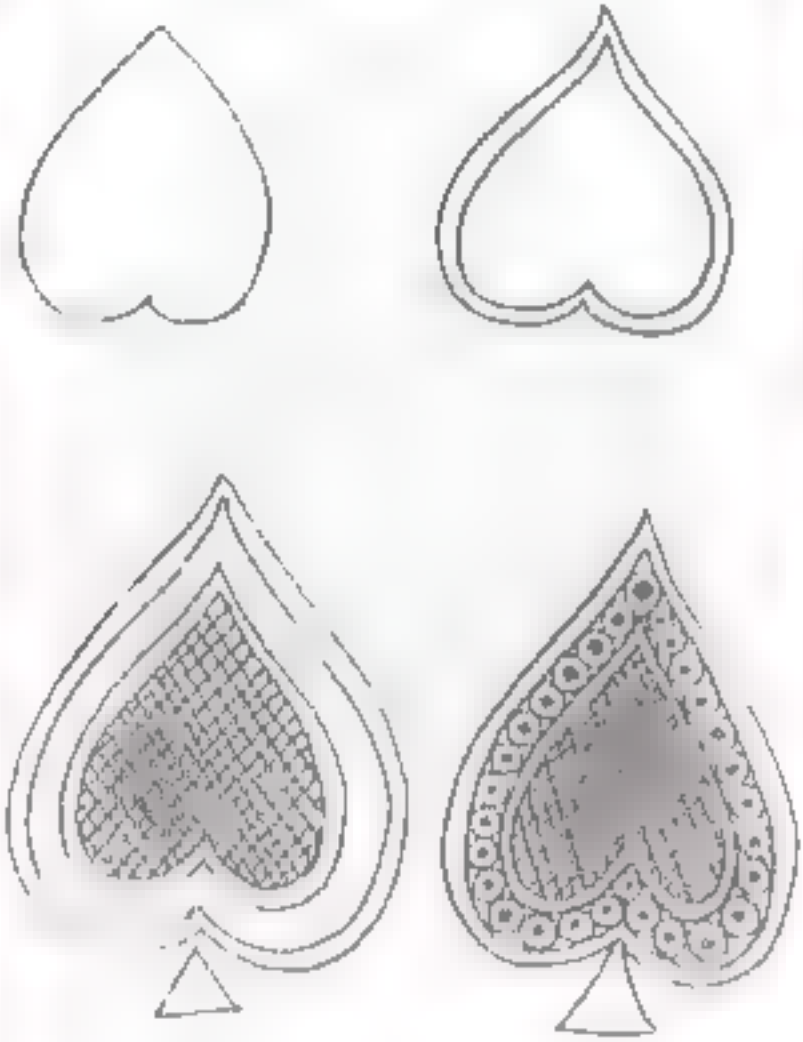

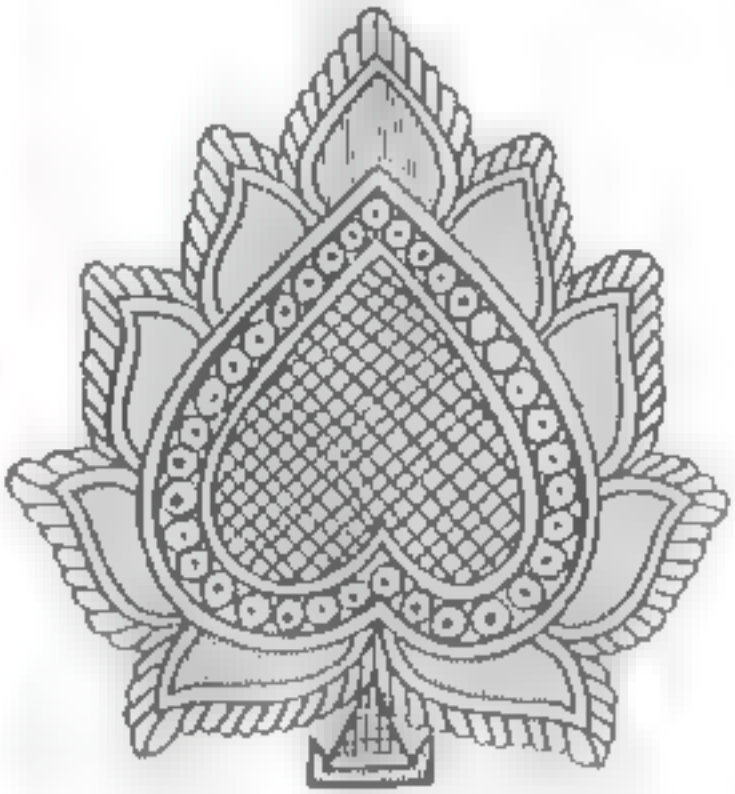

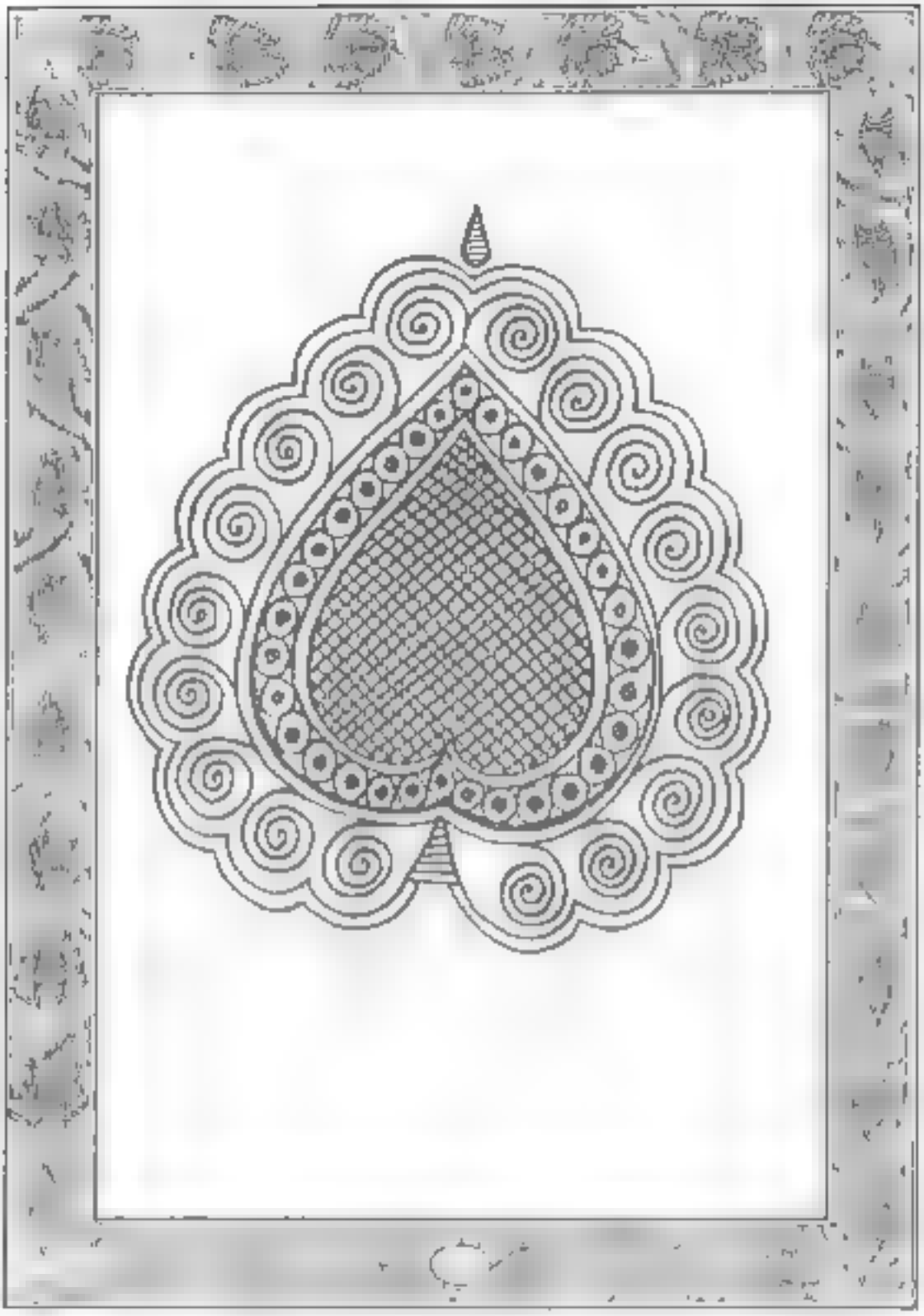

देवोत्थान अरिपन

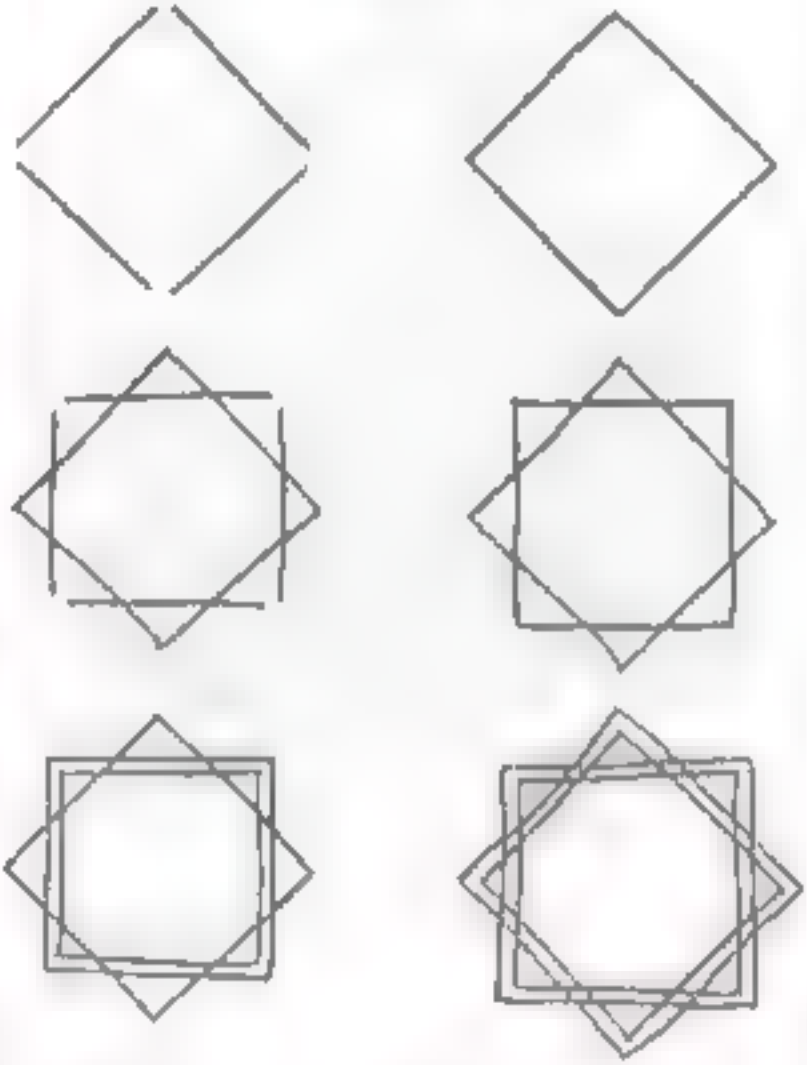

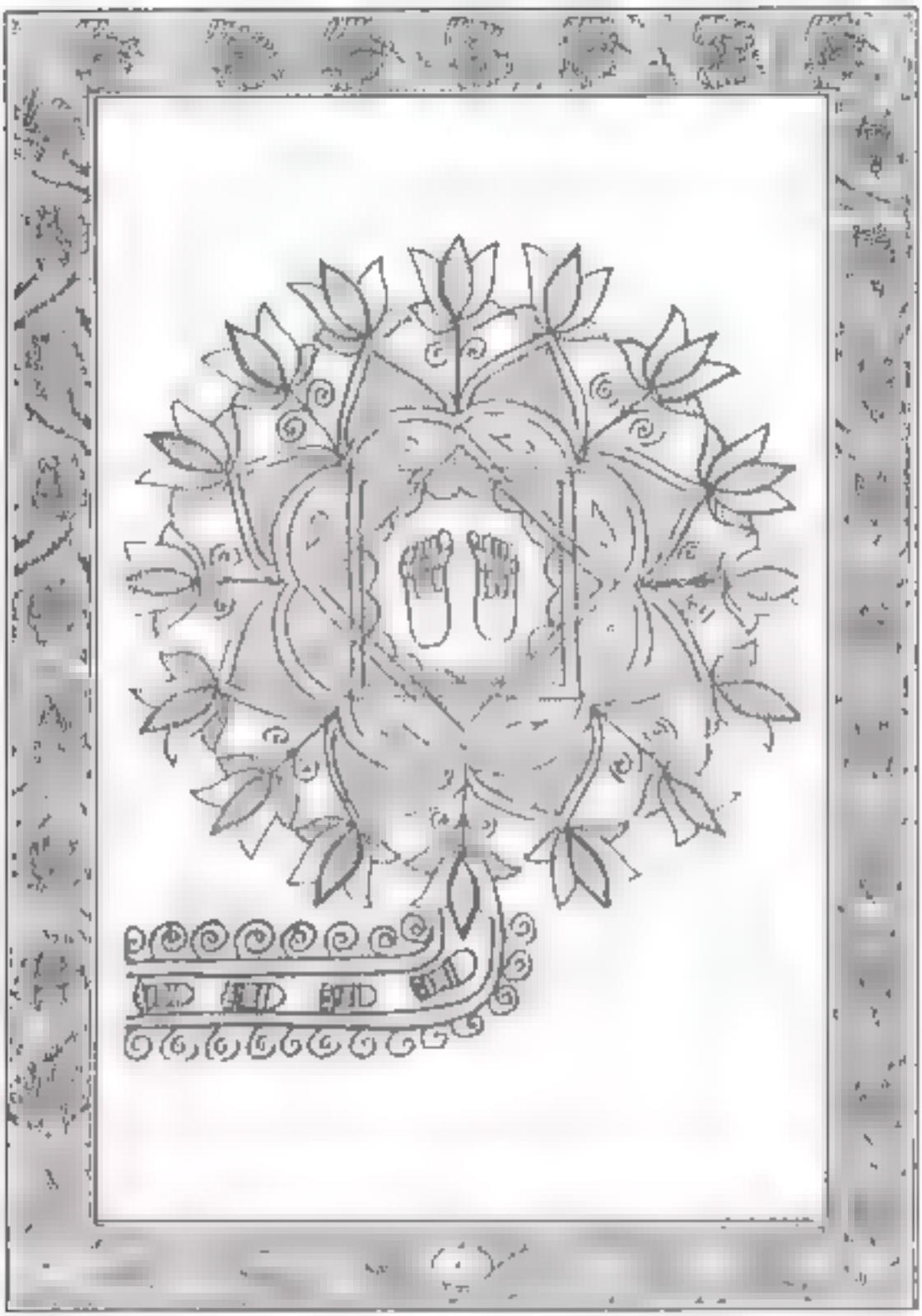

देवोत्थान अरिपन

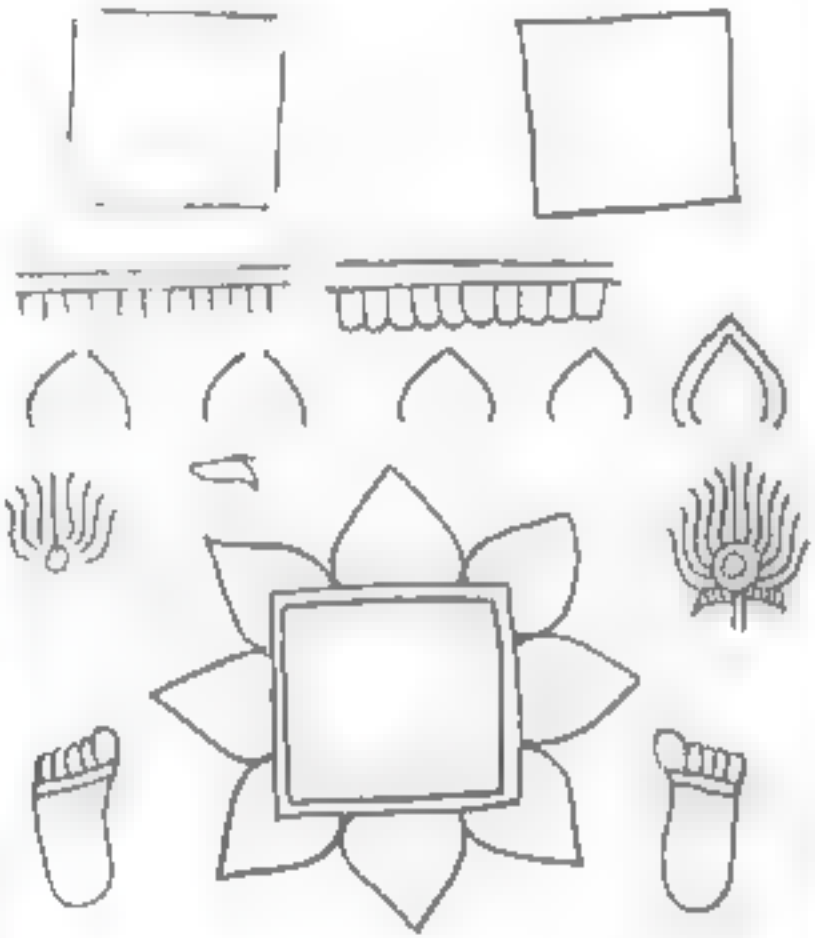

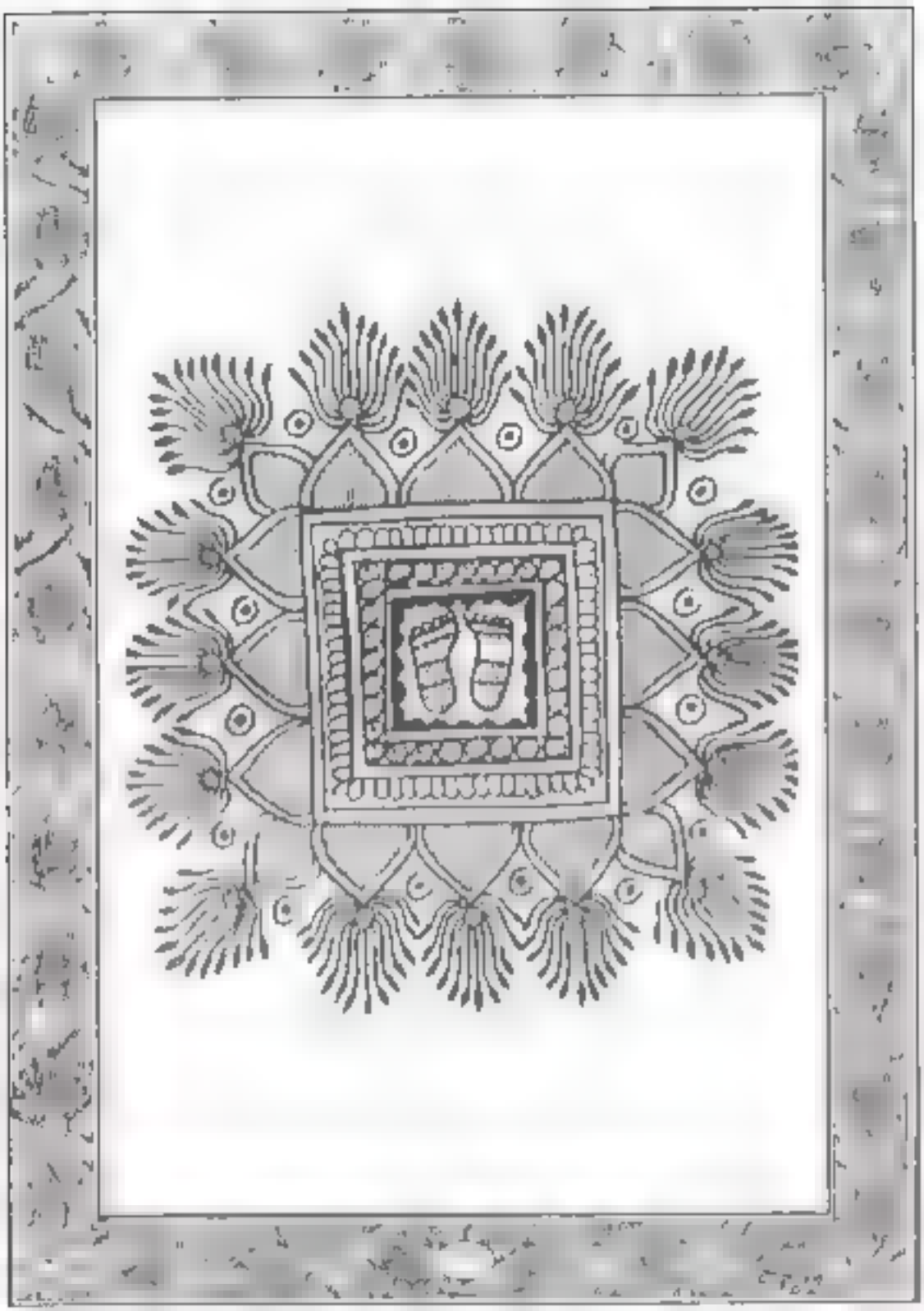

ककवा

चौशंख

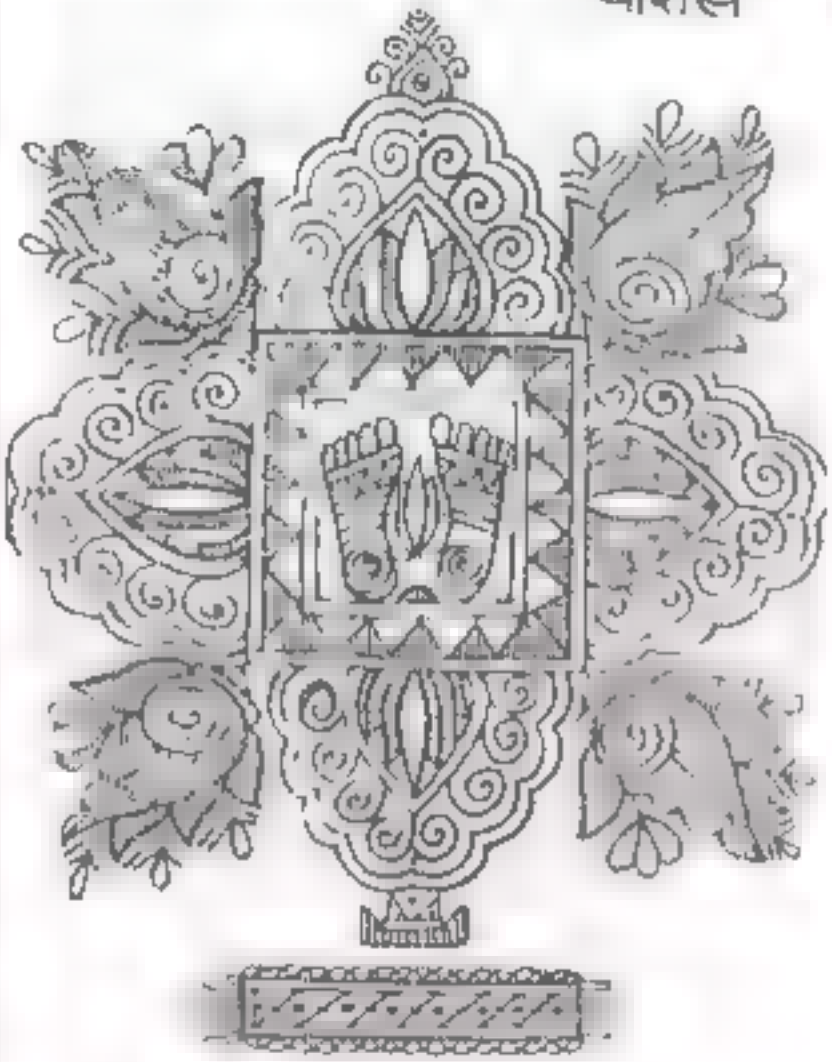

कमलदह

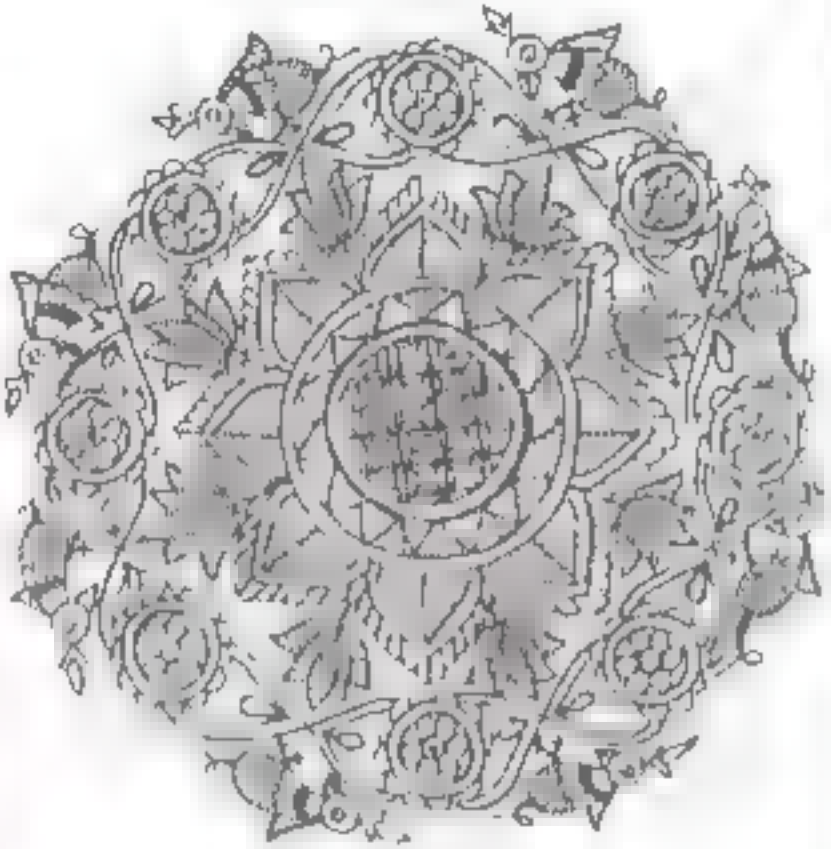

कमलदह

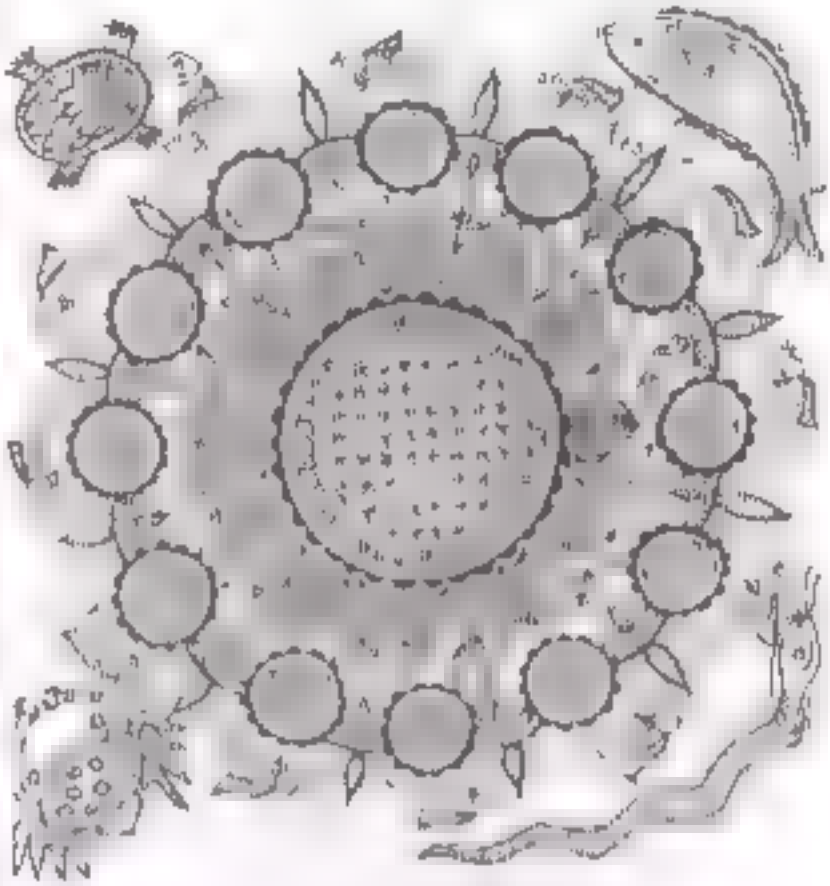

नवीन

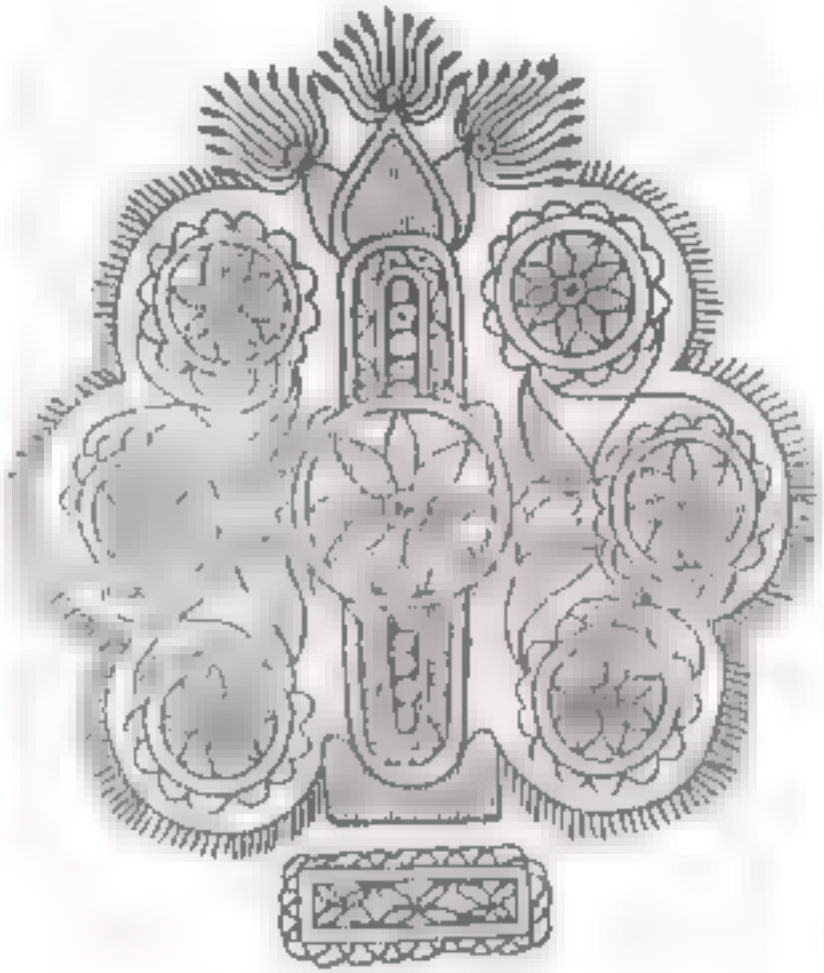

कोबर

कोबर मिथिला चित्रशैलीका सर्वाधिक विख्यात और मनभावन चित्र है यह एक पारंपरिक वैवाहिक चित्र है जिसका चित्रण भूमि दीवाल और कागज पर दोनोंको समयमा है।

[illegible] के [illegible] के परिणामें अब किसी कन्याके विवाहका आयोजन होता है तो विवाहके कई दिन पूर्वसे ही उस घरका चित्रालेखन प्रारम्भ हो जाता है जिसमें विवाहके मुख्य वरमें वर वधूका विवाह होता है उस कक्ष विशेषको "कोबर" कहा जाता है इस घरमें बनीसवाले एक विशिष्ट चित्रको भी 'कोबर' कहा जाता है।

कोबर घर अनेक प्रकारके चित्रोंसे सज्जित होता है। घरके भीतरी पूरबके दीवार पर

"कौवा" का विस्तृत चित्र भी देखा जाता है जिसके समक्ष भूमि पर बैठ कर वह लघु कृत्य पकवान्न विशेषतः कार्य माध्यमित करते हैं भोजन के अन्य दीवारों पर बीस करें, लक्ष्मजल, दूध बनाना इस प्रकार्यिका ग्राम अवधेजा चौर अनेक प्रकार के बीजगोरेज [illegible] बनाना अति के दाने लगे [illegible], कपड़ी भागसे, "**नैनाशोगिनी**" [illegible] है नैनाशोगिनी वस्तुतः "[illegible] में एक तीव्रतम सहायकित्व है जो [illegible] आनन्द विकासके लिए नितान्त [illegible]

कौवा [illegible] मूल्यका पुँजने के [illegible] और [illegible] पीने [illegible] एक [illegible] पीने [illegible] पीने [illegible] और [illegible] [illegible] पीने, [illegible] मूल्यका [illegible] [illegible] पीने [illegible] [illegible] [illegible]

विवाह कार्यके सम्पादनके लिये जैनोंके
दोनोंकी एक साक्षी मण्डप (मड़वा)का निर्माण
किया जाता है जिसकी भूमि पर, चावलके पिठारसे
चित्रित बनाकर आरेपनका आलेखन किया जाता है.
कन्या पक्ष द्वारा निर्मित चौरे भूमि पर कोबरके
नीचे पवित्र कुलिंगित्तन विधानमें इसका विशेष महत्व
माना जाता है। वर-पक्षके द्वारा बंधु आकारके
पीले मांडे बनाये जाते हैं दो कागज पर लाल रंगसे
कोलम के आकार का दुशालाया, एक पर कामदेव
और एक कागज पर रति रंगसे चौरा बनाकर लाया
जाता है। इसमें चित्रित चावले रखे होते हैं। इनको
चौरे पर लाकर कन्या पूर्व की ओर मुख किये
बैठाया जाता है। विवाहोपरान्त वधू-प्रवेशके
समय वधूके पहली पिठारी द्वारा अपने साथ, साथ
ले जाने का पीला रंगे धागा को वर चित्र और उसमें
चावलकी पोटली रखवाया जाता है। सन १९३५ ई०
के पूर्व विवाह के अवसर पर मात्र कागजी कपड़ों पर
चौरा देने की परम्परा थी, परन्तु अब कपड़े पर भी
चौरा बनाने की परम्परा प्रचलित हो गयी है।

उत्पादन और रोजगार

पाठ–8

बुंदी

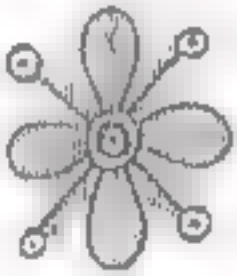

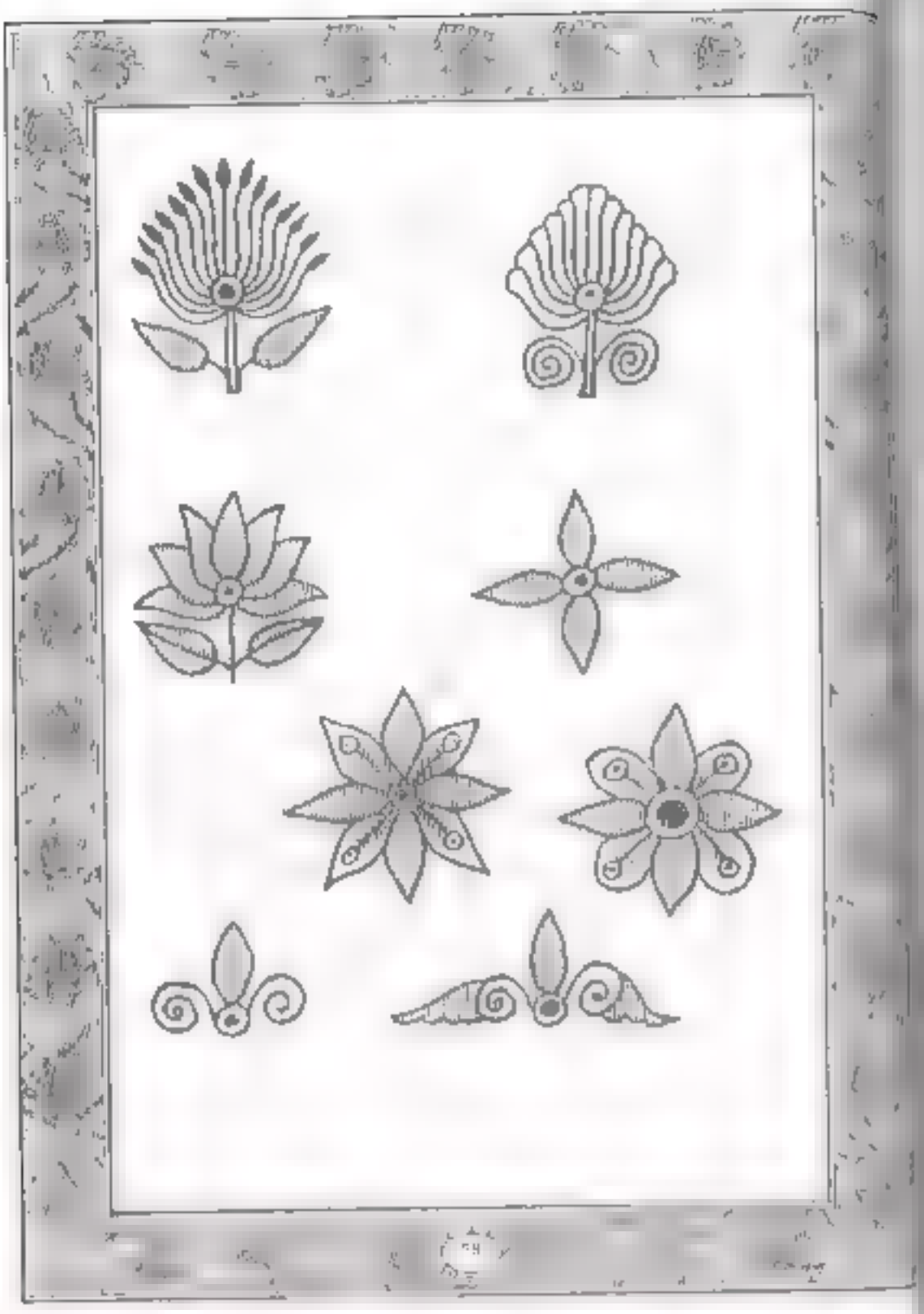

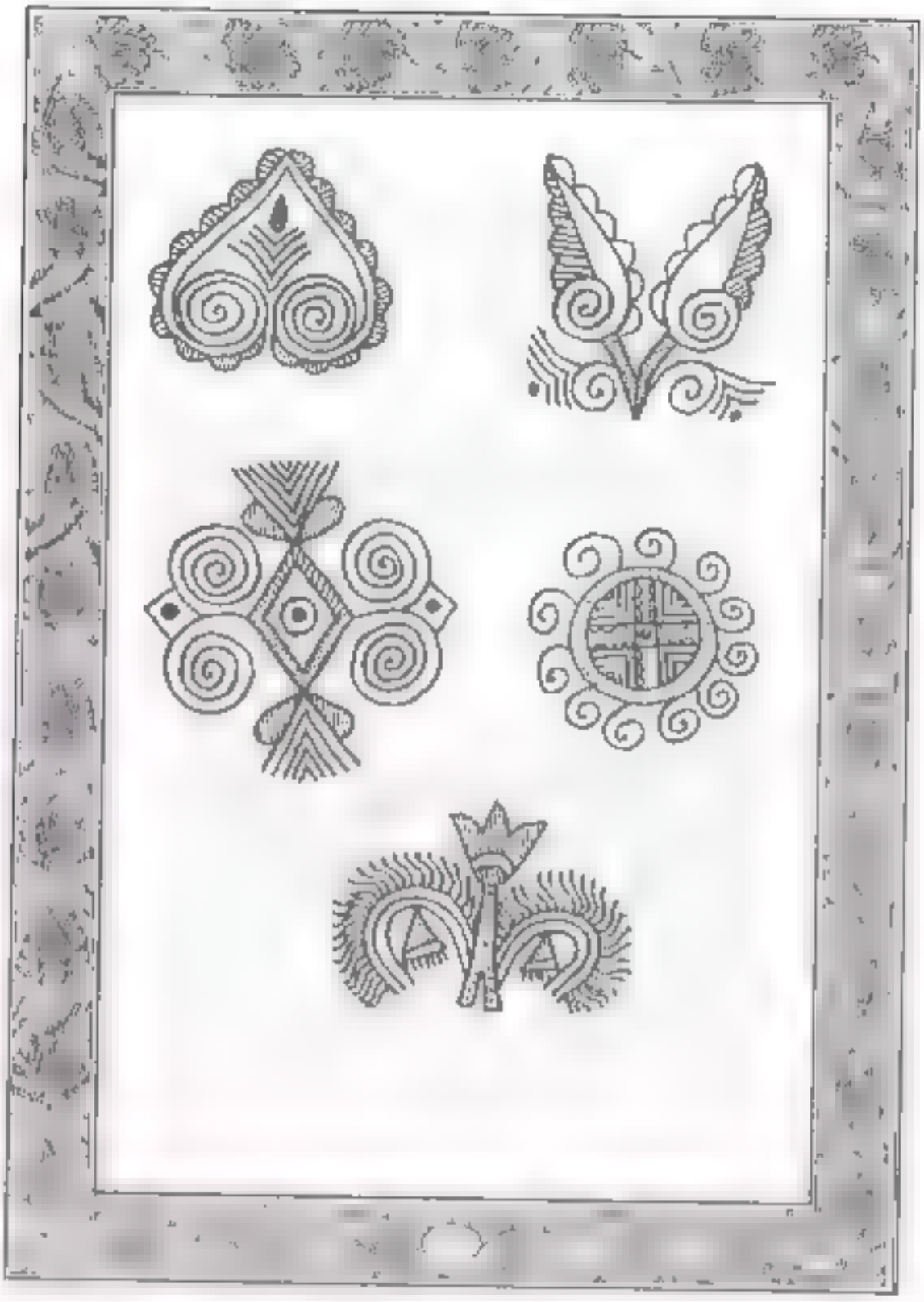

कोर (बोर्डर)

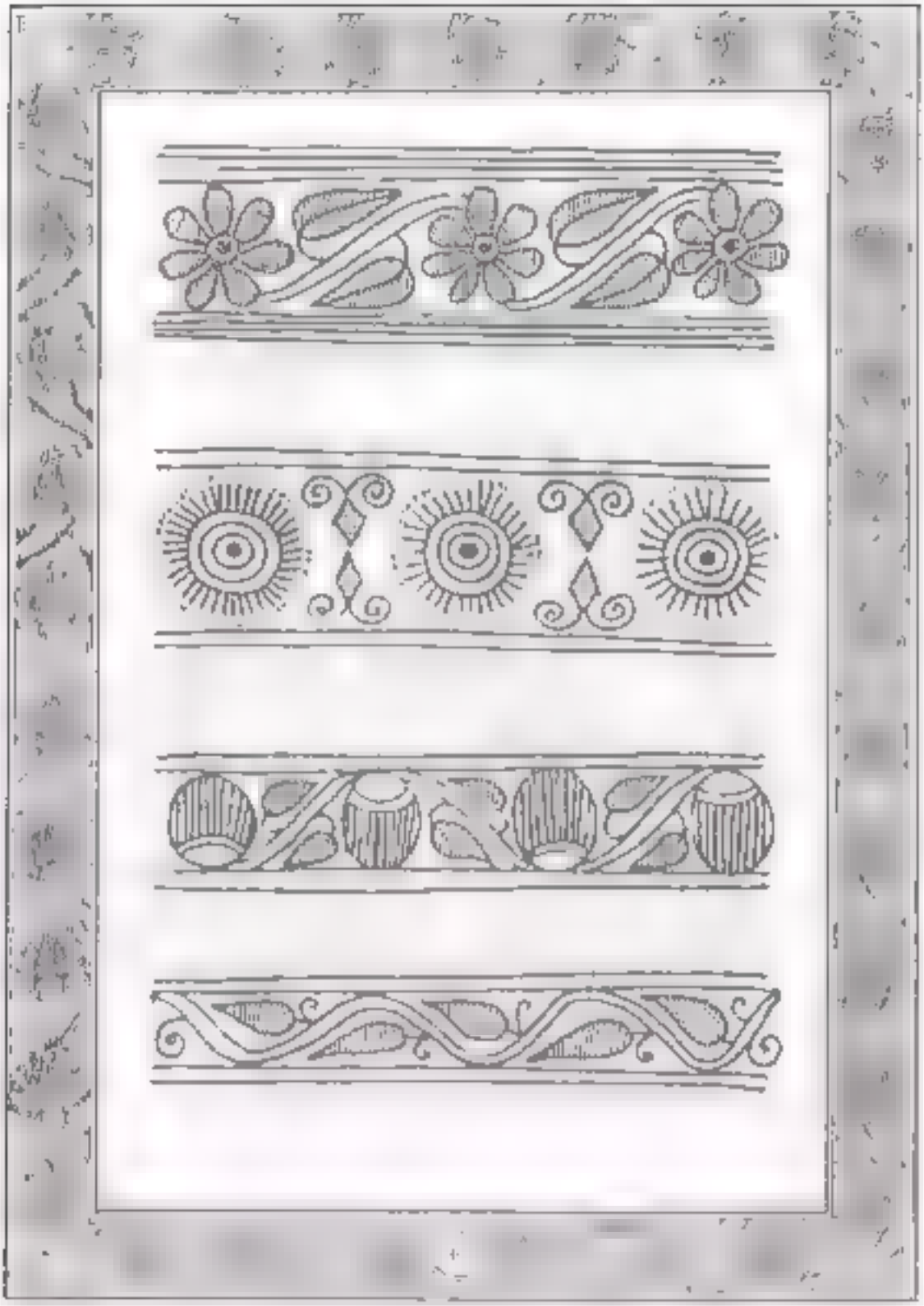

देवल मेर

मसनद (बोल्स्टर)

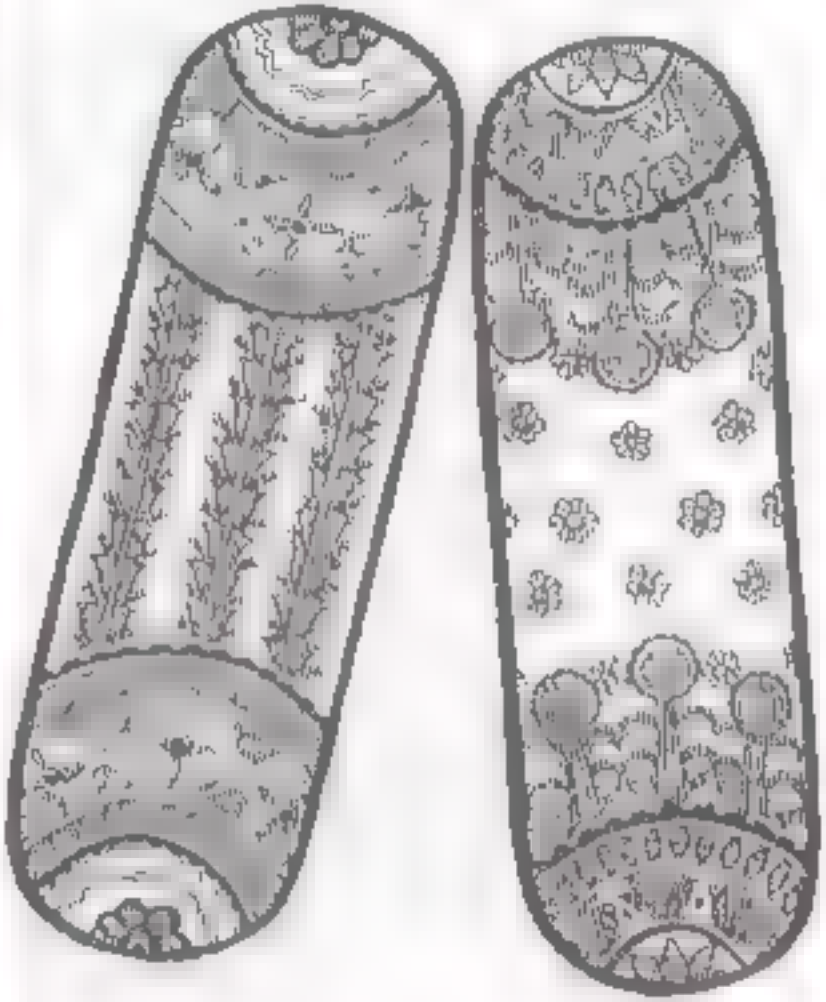

कुशन कवर

13h2

प्रतीक

पाठ - 9

जीवाजीवाभिगम के विशेष विवेचन हेतु संख्या नाम एवं प्रतिकृति के आधार पर सूचक चिह्न प्रयोगशाला उपकरणों से प्रयुक्त होने वाले उपकरण का आकारात्मक चित्रण से चयन के उपरान्त आपको प्रयोगशाला आसन पर कर सकते कुछ प्रतीक उपकरणों के संख्या नाम एवं चित्र के प्रतीक इनके उपयोग का आप स्वयं प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रतिकृति के आधार पर आप प्रतीकों के संख्या में इसे पुस्तक के अध्ययन में अध्ययन कर सकते हैं।

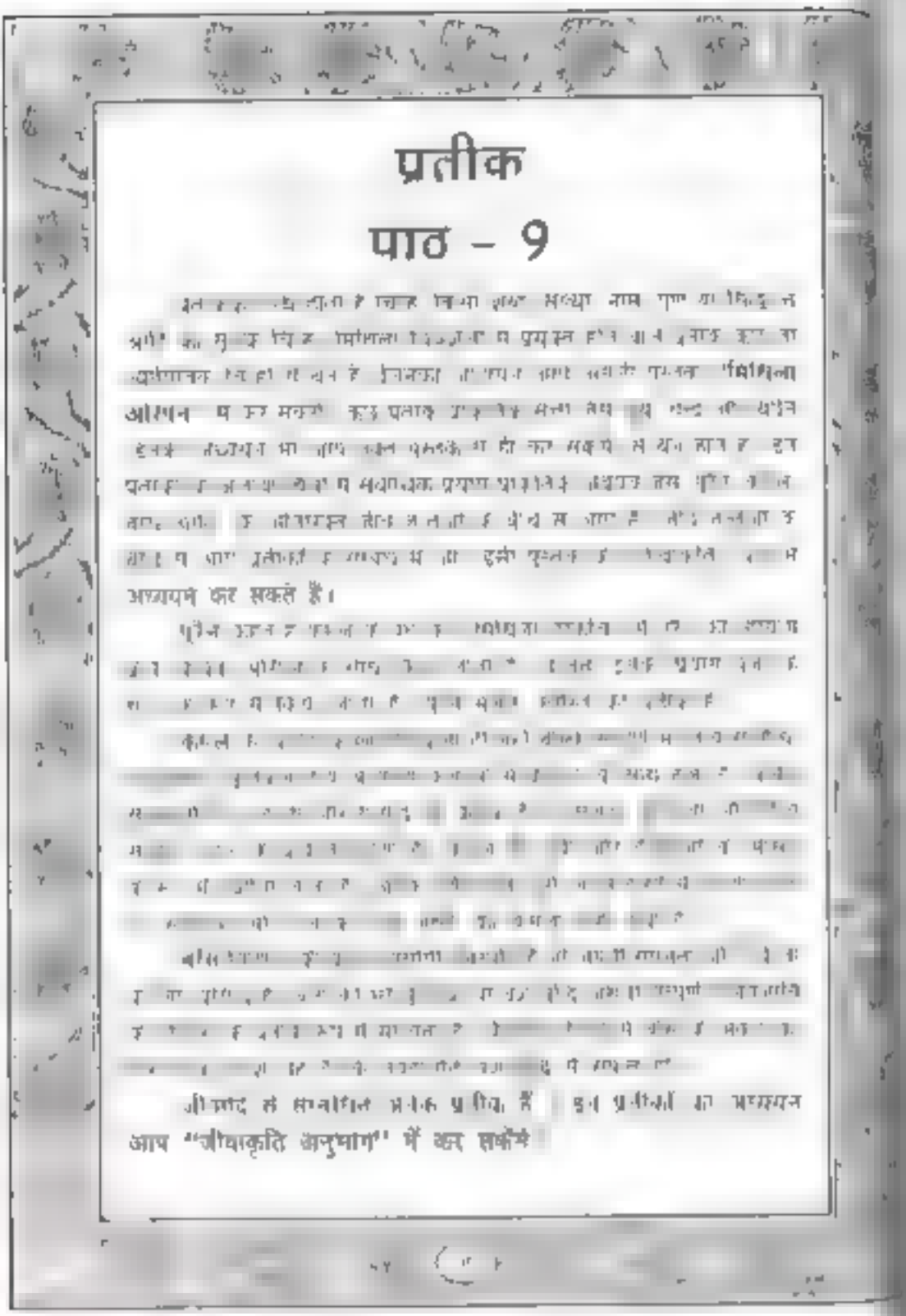

जीवाजी से सम्बन्धित अन्य प्रतीक प्रतिकृति हैं इन प्रतीकों का अध्ययन आप "जीवाकृति अनुभाग" में कर सकेंगे

आकृति-खण्ड

अनुभाग 1 आकृति

अनुभाग 2 देव कृति

अनुभाग 3 शांभव

अनुभाग 4 [illegible]

अनुभाग 5 [illegible]

अनुभाग 6 अंशाकृति

खण्ड - 2

अनुभाग -1

आकृति - रचना

आकृति

सबसे पहले चित्र का भाल बनाती हैं

अनुभव नहीं होता है। आँख में पुतली आ जाने के बाद टुकुर-टुकुर ताकता हुआ चित्र कलाकार की नाक देख कर भय से सिहर उठता है इसीलिए चित्र की शेष रचना पूर्ण होने के बाद कलाकार 'पुतली' बनाकर उसे प्राणवन्त बना देता है, चित्र में प्राण-प्रतिष्ठा हो जाती है

विशिष्ट चित्र में मुख्यतया चार प्रकार की आकृतियों के अलावा वनस्पति के आकार होते हैं — **देवाकृति, मानवाकृति, दानवाकृति और जीवाकृति।** आगे के पृष्ठों में आकृति-नियोजन के कुछ अभ्यास दिये जा रहे हैं आशा है, इन पाठों के अभ्यास से छात्र चित्र-निर्माण के कार्य

मुखाकृति

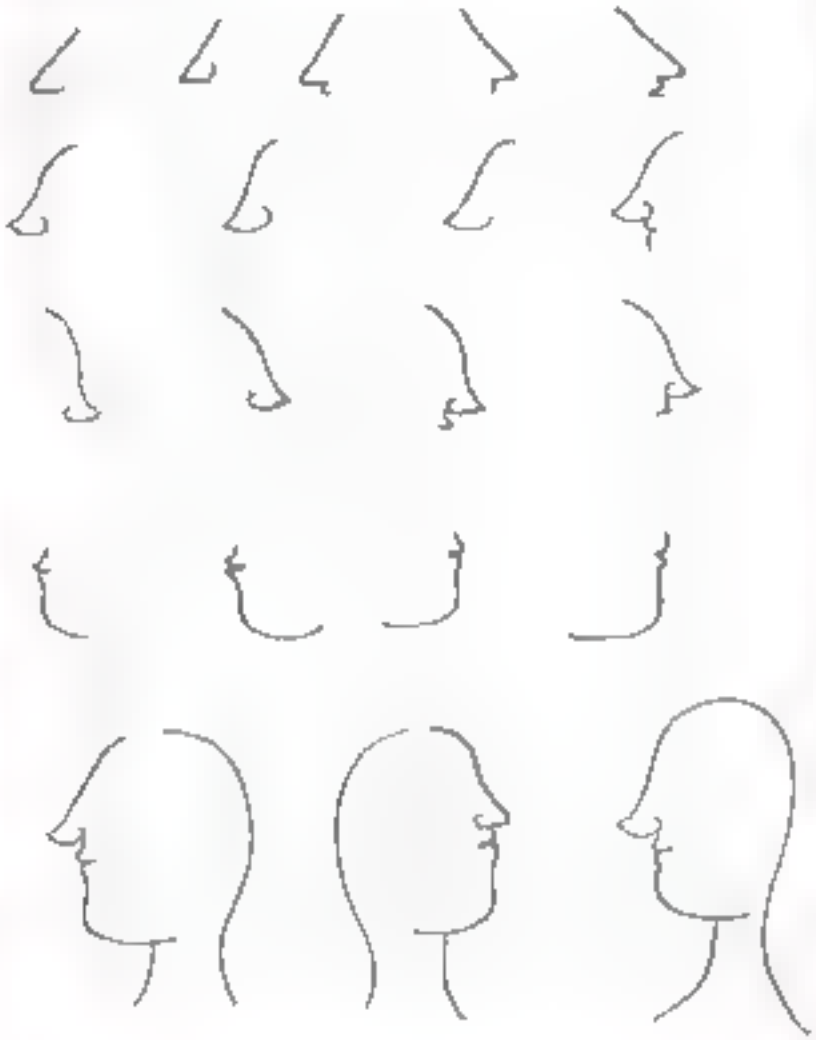

मुखमंडल

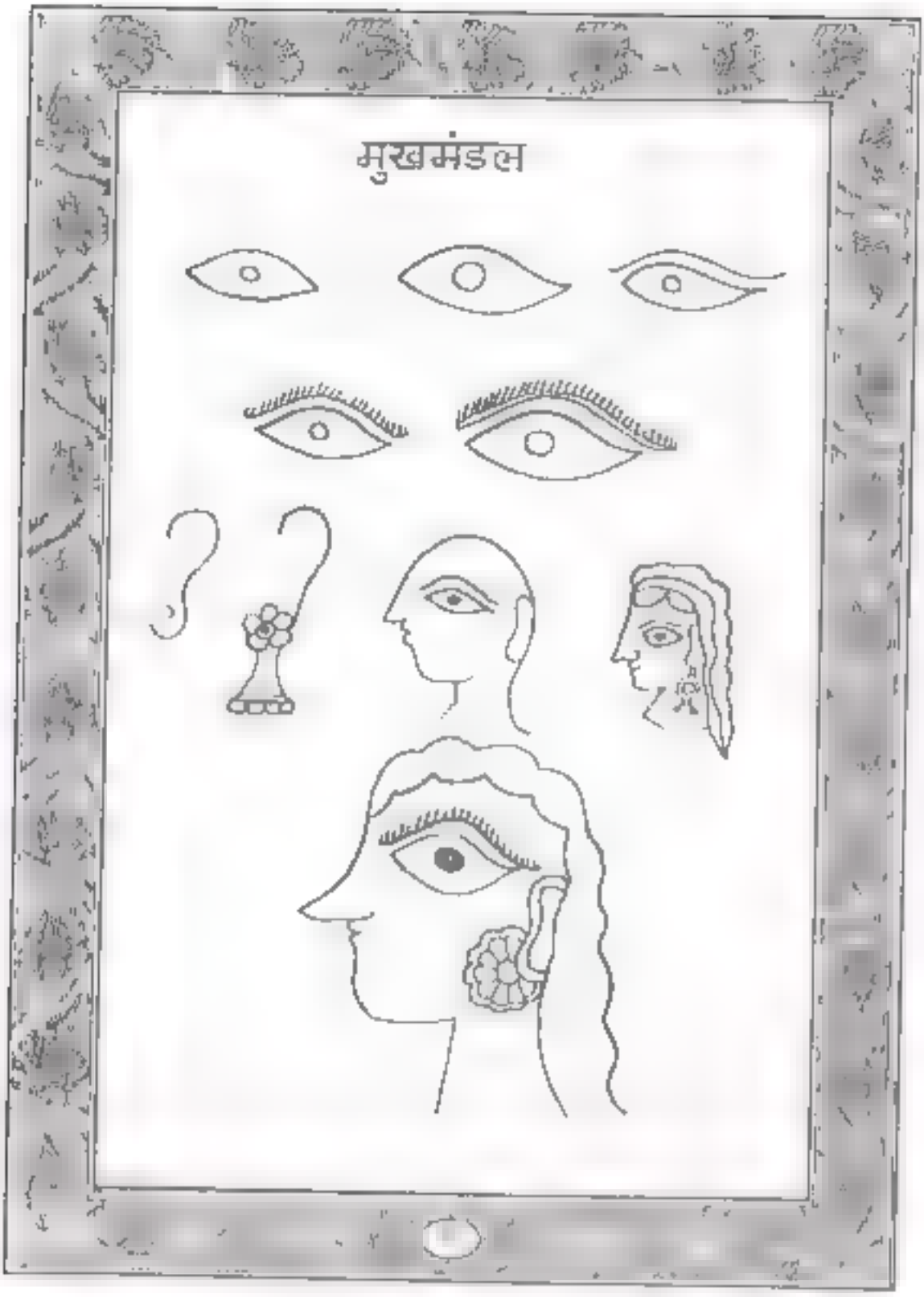

रूपांकन श्रीगणेशजी

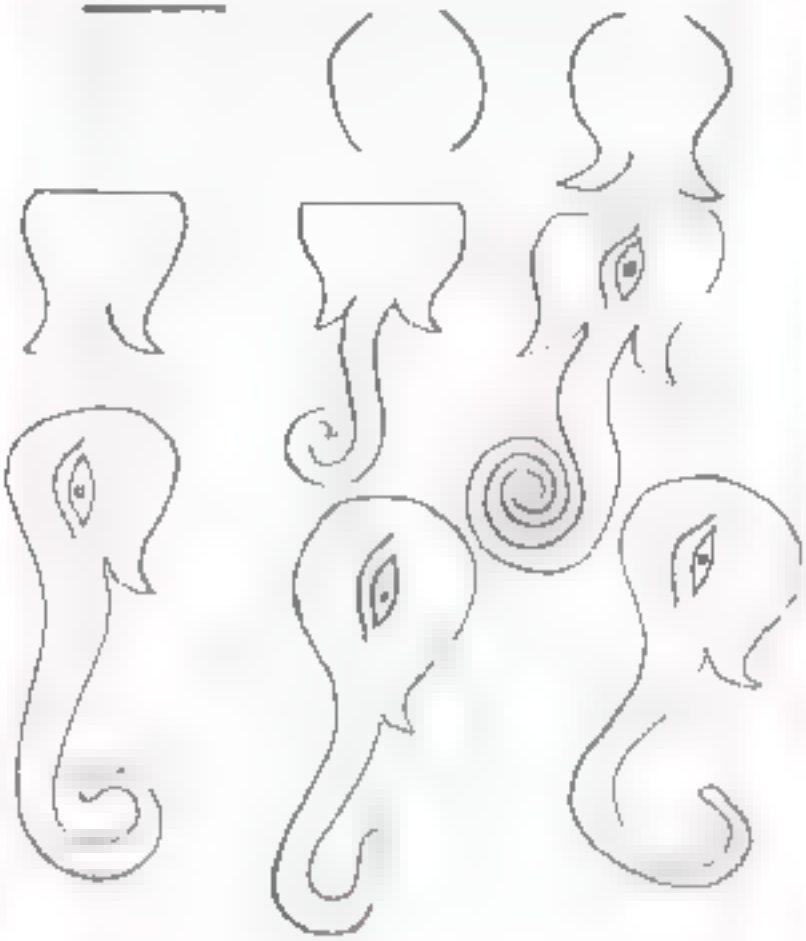

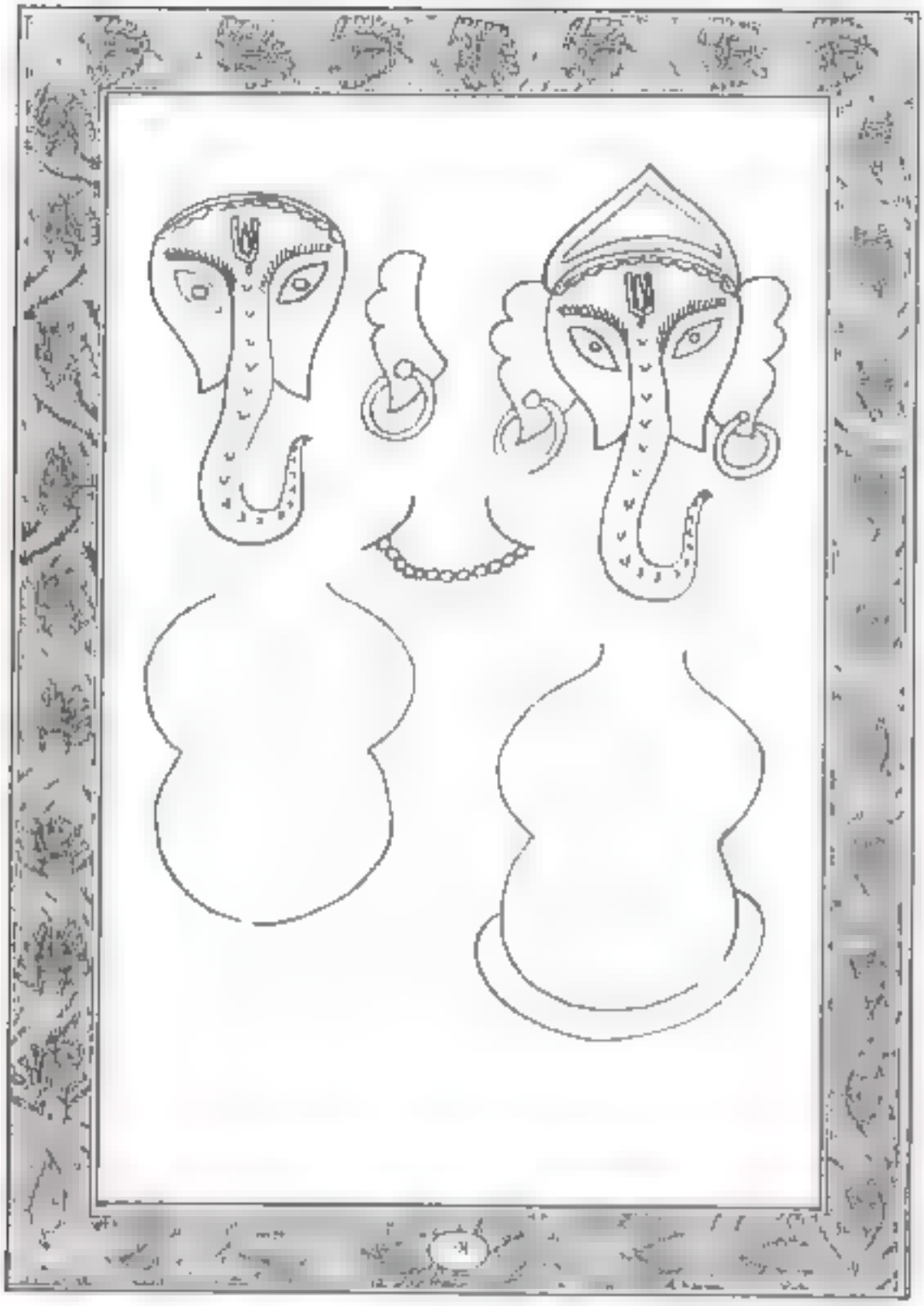

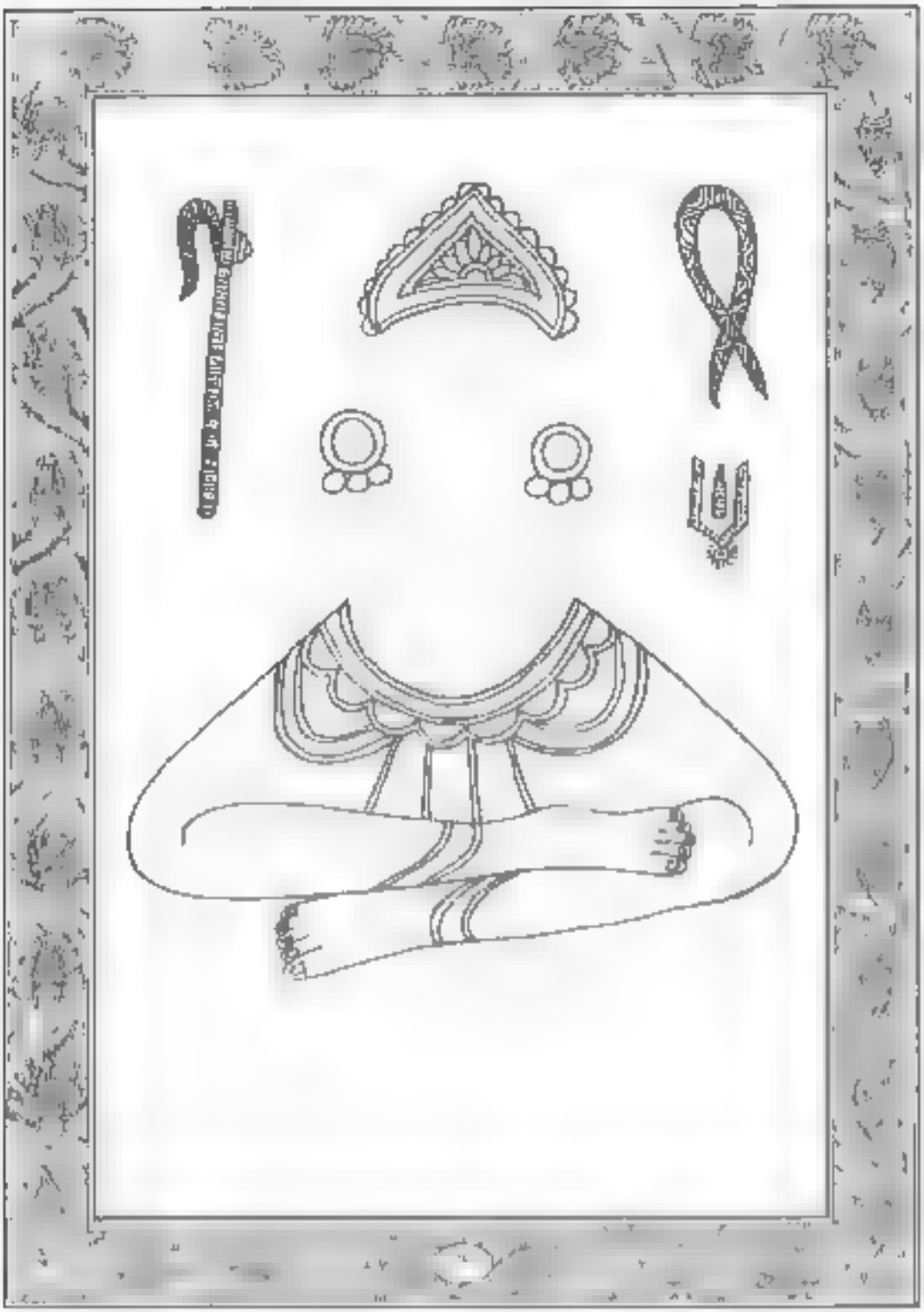

अनुभाग – 2
मिथिला चित्र में देवाकृति

यथा-कदा शुभ अवसरों पर परिवार में सप्रेम पधारते हैं।

के दिन मिथिला के घर-आँगन में पहुँचते हैं।

को धार्मिक से अधिक सामाजिक रंगों प्रधान करती है।

श्रीगणेशजी

तुलसीदासजी ने गणेश को 'ऋद्धि-सिद्धि' कहकर वन्दना की है —

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर बदन
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ।

(श्रीरामचरितमानस)

गणेश का पुनर्जन्म और मस्तकहीन की कथा क्या है मुख्य रूप से पुराणों का लक्ष्य है महाकाव्य गणेश के अनेक विचित्र रूपों सम्बन्ध में 'गणेश पुराण' में एक कथा है कि कोई राक्षस एक अद्भुत था जब वह गर्भ में था तब उसने माता पार्वती को बहुत परेशान किया था जब वह पैदा हुआ तो उसका सिर हाथी के सिर से जोड़ा गया था इसलिए उसे एकदंत कहा जाता है। उसने एक चूहे को अपना वाहन बनाया और आश्रम में रहने लगा। वहाँ उसने एक ऋषि की पत्नी को देखा और उसे पाने की इच्छा की। ऋषि ने उसे श्राप दिया कि उसका सिर कट जाएगा। जब उसका सिर कटा तो उसने एक हाथी का सिर लगा लिया। उसने अपना नाम गणेश रखा और अपने पास रख लिया।

हिन्दी मुहावरे में "श्रीगणेश" का अर्थ होता है प्रारम्भ करना।

महादेव

एक स्तुति है –

रूप मान्य है

माधवन और शाकार के सर्वोच्च प्रेमता हैं

और शिष्य बच्चे हो गये।

पति के प्रति मंगल कामना करती है

श्रीगणेशजी

महादेव

पंचानन शिव

अर्धनारीश्वर

[illegible]

'अर्धनारीश्वर' [illegible]

[illegible]

का क्रम आगे बढ़ा

[illegible]

पिता और माता हैं

अर्धनारीश्वर

अर्धनारीश्वर

ब्रह्मा

ब्रह्मा के प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हैं। किन्तु सामान्य रूप से ब्रह्मा को पुराणों में ही देखा जाता है। ब्रह्मा को प्रजापति भी कहा जाता है। ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना जाता है। ब्रह्मा को चार मुख वाला दिखाया जाता है। ब्रह्मा के चार मुख चार वेदों के प्रतीक माने जाते हैं। ब्रह्मा के चार हाथ होते हैं। ब्रह्मा के हाथों में वेद, कमण्डल, माला और स्रुवा होती है। ब्रह्मा का वाहन हंस है।

ब्रह्मा के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना करने के बाद अपनी पुत्री सरस्वती को देखा। सरस्वती अत्यन्त सुन्दर थी। ब्रह्मा उन पर मोहित हो गए। सरस्वती ने ब्रह्मा से बचने के लिए अनेक रूप धारण किए। ब्रह्मा ने भी उनके अनुरूप रूप धारण कर लिए। इस प्रकार ब्रह्मा के अनेक मुख हो गए।

प्रमुख कथा

एक बार ब्रह्मा और विष्णु में श्रेष्ठता को लेकर विवाद हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास किया। तब भगवान शिव एक विशाल अग्नि स्तम्भ के रूप में प्रकट हुए। ब्रह्मा और विष्णु ने उस स्तम्भ के आदि और अन्त का पता लगाने का निश्चय किया। विष्णु वराह का रूप धारण कर नीचे की ओर गए। ब्रह्मा हंस का रूप धारण कर ऊपर की ओर उड़े।

परमगुरु और मन्त्रों के अधिष्ठाता के रूप में मान्य हैं –

ब्रह्मा की चेली, इन्द्र की साली।

ब्रह्मा

विष्णु

विष्णु का प्रथम [illegible] में [illegible] इस [illegible] के रूप में [illegible] विष्णु [illegible] के [illegible] में [illegible] के पास [illegible] कार्य है —

[illegible] विष्णु ने तीन पैरों में त्रैलोक्य को [illegible] लिया। इसके [illegible] में देवता [illegible] हुए। [illegible] प्रसन्न की स्तुति के पात्र हैं। [illegible] पोषण [illegible] रक्षक के रूप में [illegible] 'तीन डग भूमि' माँग कर उसे त्रैलोक्य-विहीन कर दिया।

[illegible]

ईस्वी सन 1,097 के बाद हुआ

[illegible]

पौराणिक ग्रन्थों में विष्णु के सहस्र नामों का उल्लेख है। **अमरकोष** में विष्णु के नामों का उल्लेख इस प्रकार हुआ है— विष्णु नारायण कृष्ण वैकुण्ठ, विष्टरश्रवा दामोदर हृषीकेश केशव माधव स्वभू दत्तात्रि सर्वेश्वर सर्वदेवेश पीताम्बर अच्युत अनादि भूर्भुवः ईश्वर पुरुषोत्तम सहस्राक्ष सहस्रजित् त्रिविक्रम देवकीनन्दन श्रीश पुरुषोत्तम, श्रीपति वनमाला वासुदेव शार्ङ्गधन्वा गदाधर नन्दकी विश्वक्सेन जनार्दन हरि चक्रपाणि आदि।

यह कथनानुसार है। यदि जानकी के स्वामी नारायण का 'ना' अक्षर = घर स्थान, रायण = अयन का वाचक होने से नारायण के रूप में प्रयुक्त है। इन्हें भगवान् लक्ष्मी शोभा, समृद्धि और सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं।

विष्णु के अवतार

[illegible] कल्याण के लिए अनेक बार अनेक रूपों को धारण किया [illegible] समाज को उबारने के लिए भगवान अवतार ग्रहण करते हैं।

श्रीमद्भागवत पुराण में विष्णु के २४ अवतारों का उल्लेख है, किन्तु **दशावतार** का कल्पना सर्वाधिक लोकप्रिय है। दशावतार के अन्तर्गत दो पात्र बौद्ध मत्स्य और कच्छप हैं। अलंकारवादी बौद्ध वराह तथा नृसिंह, लघुपाषाण जाने वाले राम परशुराम दाशरथि राम और बलराम बुद्ध तथा कल्कि भावी है। महाभारत में बुद्ध के स्थान पर हंस का रखा गया है। भागवत में कृष्ण के स्थान पर बलराम का लिया गया है क्योंकि विशिष्ट व कृष्ण को दशावतार का प्रमुख माना जाता है। विशिष्ट के कृष्ण पात्र एक अवतारी नहीं बल्कि सच्चे परमेश्वर हैं। मैथिल कर्णकायस्थों के विवाह में वर पक्ष वाले दुल्हन के लिए साड़ी स्वरूप जो आभूषण ले जाते हैं, वह एक रंग के कागज में लपेटकर ऊपर से एक पट्टा लगाया जाता है जिस पर लाल रंग से कृष्ण एवं दशावतार के चित्र बनाए जाते हैं। कन्यापक्ष वालों के यहाँ प्रीतिभोज की विधि पर भोजनपत्र रूप से दशावतार लिखा जाता है।

मत्स्यावतार

भगवान विष्णु के प्रथम अवतार [illegible] प्रलयकाल होने पर [illegible] के पास से वेद [illegible] ले जाने पर [illegible] के रूप में [illegible] "मत्स्यावतार" के रूप में [illegible] की रक्षा से सृष्टि के [illegible] पौराणिक [illegible] पर आधारित [illegible] पौ आधार पर सृष्टि का प्रथम जीव मत्स्य ही है।

विष्णु

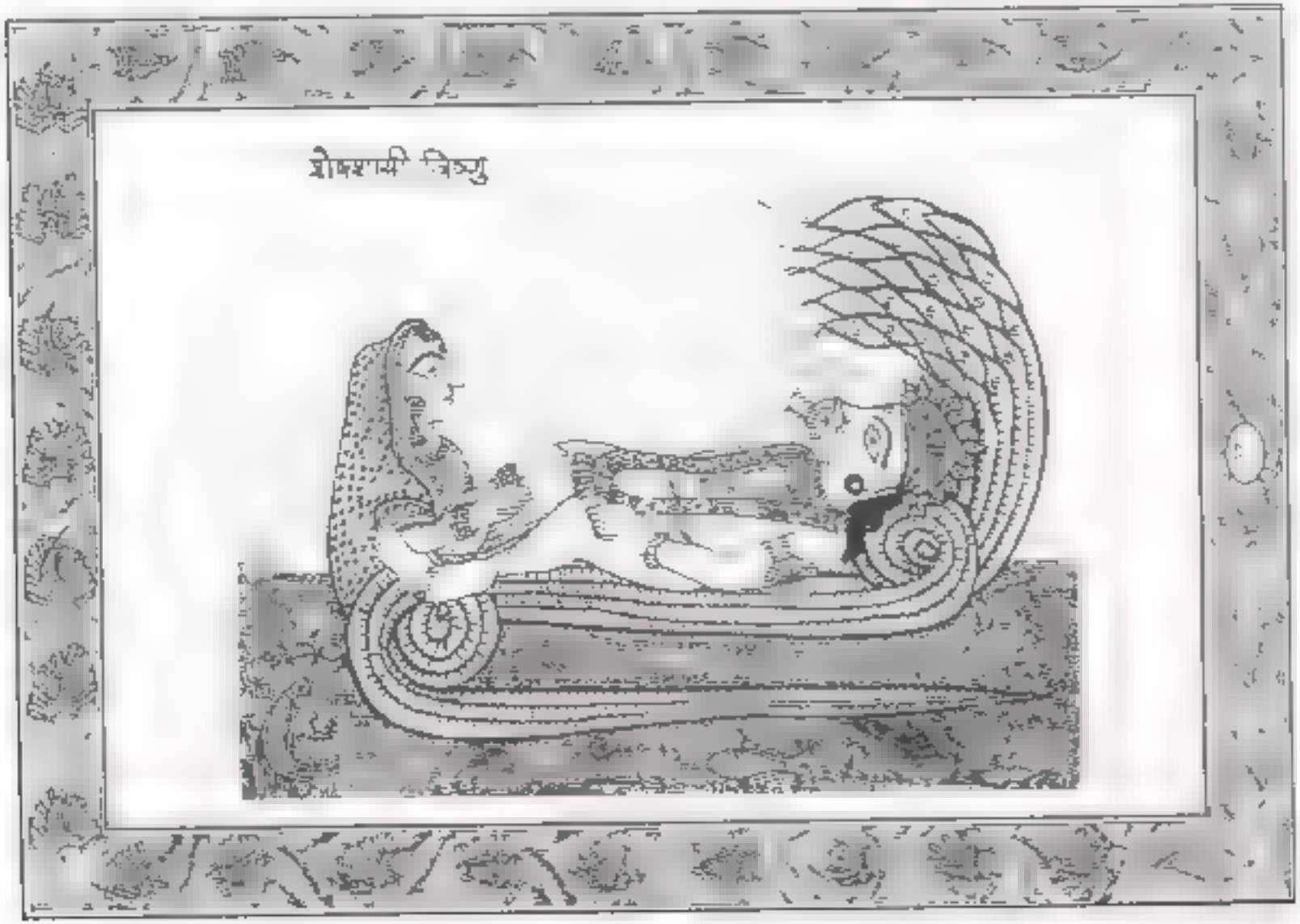
शेषशायी विष्णु

मत्स्यावतार

कच्छपावतार

देवताओं ने छल से सारा अमृत पी लिया, वे अमर हो गये

कच्छपावतार

वाराह अवतार

अपनी पत्नी बना कर द्वारका ले आये

वाराह अवतार

नृसिंह अवतार

पुराणों में कथा है कि ब्रह्मा से वर प्राप्त कर दैत्यराज हिरण्यकशिपु समझने लगा था कि वह अमर हो गया और वह इसी अहंकार में देवताओं मनुष्यों का उत्पीड़न करने लगा। दानवों के इस अत्याचार से पीड़ित होकर वे उद्धार के लिए भगवान की प्रार्थना करने लगे। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान ने प्रह्लाद के रूप धारण किया और हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए उसकी सभा में पहुंचे। नृसिंह अवतार लेकर उन्होंने अपने नाखूनों से उसे फाड़ कर मृत्यु प्रदान की। वे आधे नर के आधे सिंह के रूप का विग्रह थे। नरसिंह अवतार विष्णु का दूसरा नाम नरहरि भी है।

वामन अवतार

[illegible] राजा बलि से तीनों लोक छीन लिए। [illegible] बलि ने [illegible] के [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

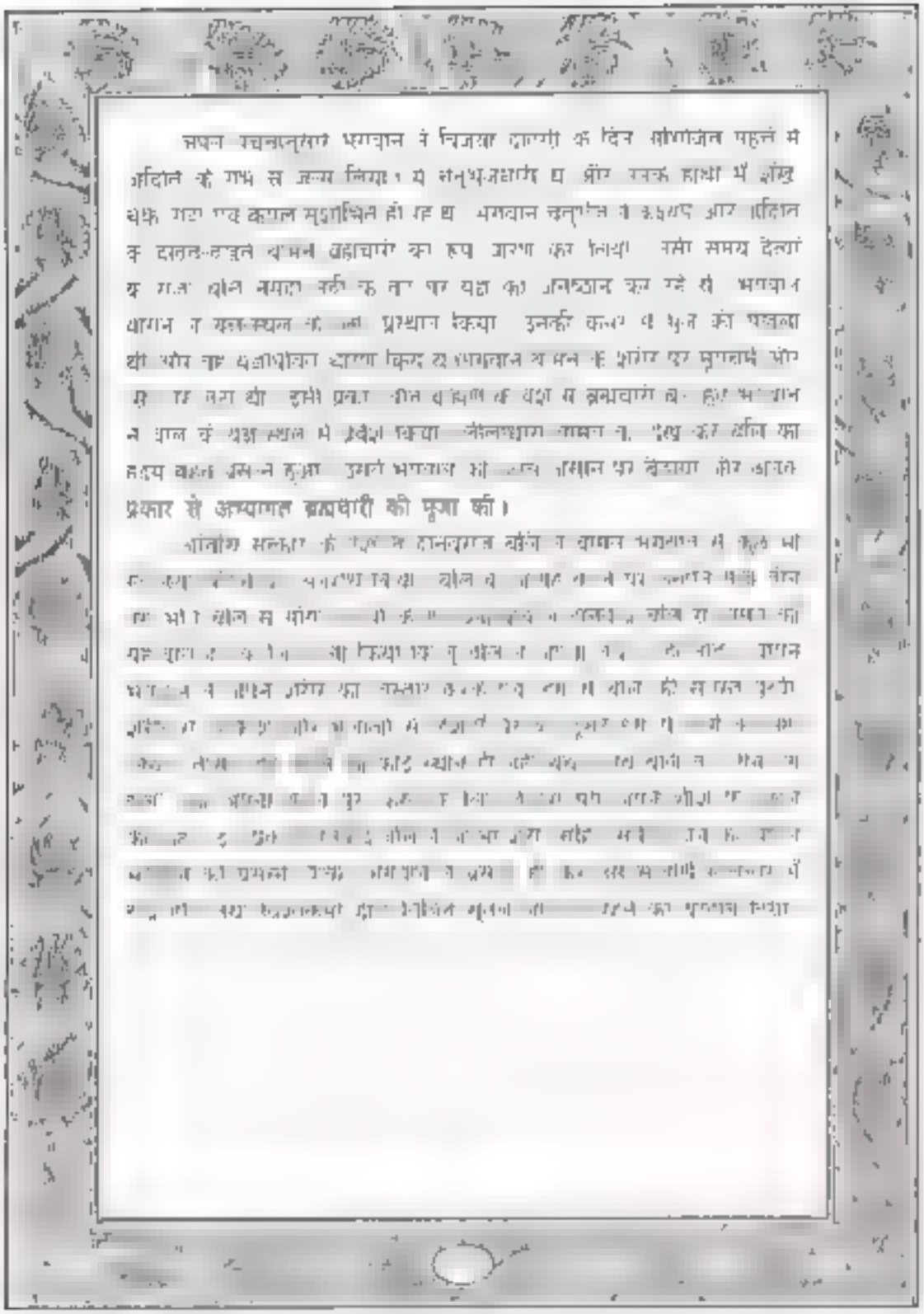

नृसिंह अवतार

वामन अवतार

परशुराम अवतार

[illegible] कथा है कि पृथ्वी पर [illegible] क्षत्रियों के अत्याचार [illegible] बढ़ गया था। सारे [illegible] में सदाचारी पुत्र आदि करने लगे। [illegible] के महर्षि विश्वामित्र के [illegible] कोपभाजन की पत्नी रेणुका [illegible] के [illegible] का अपहरण [illegible] रेणुका वापस [illegible] को सूचना [illegible] कर [illegible] [illegible] [illegible]

परशुराम अवतार

रामावतार

के गर्भ से राम के रूप में अवतार लिया

श्रीराम ने उस धनुष को तोड़ कर सीताजी को प्राप्त किया

श्रीराम ने रामराज्य की स्थापना की

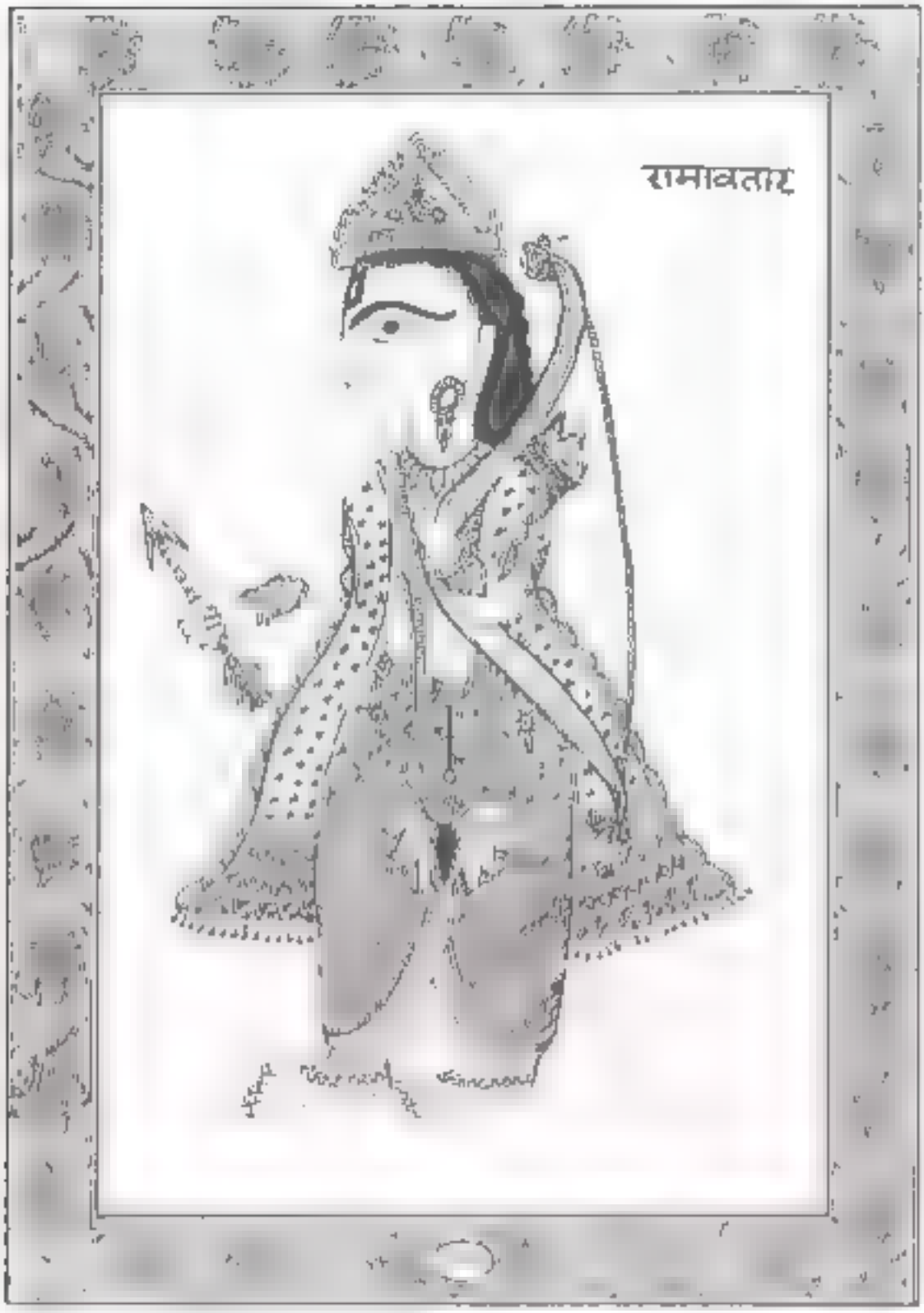
रामावतार

कृष्णावतार

भी कृष्ण का महत्व अधिक है

देवकी के सात पुत्र मृत शिशुओं कंस बिना देर किए पत्थर पर

पुत्र को पहाड़ की तलहटी में सुला दिया और उसकी सहजात कन्या को ले कर वे कात्यायन के लौट आए। सुबह होने ही वाली थी कि आठवें शिशु के जन्म का समाचार सुन कर कात्यायन वहाँ आया और देखकर भी उसने कुछ न लिया। एक अस्थिपिंजर के अतिरिक्त कुछ न जैसे इस शिशु का पत्थर पर पटकना चारों ओर से देखकर वह घोर्नी आकाश की ओर उड़ गई और विंध्याचल पर्वत पर विंध्यवासिनी देवी के रूप में प्रकट हुई।

इधर यशस अपने मृत्युदाता भाँजे को खोज में बिलखता हुआ वन में भटकता हुआ और उधर कोशला में चुपके से बालक शिशु को अपने अनाचारी साया की नजर बचा कर राजोला और बलभद्रा ने स्नान को ढोंग से पहले पात्र से ढक रखा था। आज बीस साल के हो चुके शिशु के मुँह का यह कालिक कृष्ण अप्रतिम सौन्दर्य ही लोकेश्वर तथा लोकेश्वरा के साथ साथ कोशलपुरम् के समस्त पशुपाल गोपियों को आकर्षित करने लगा था। कृष्ण की मनमोहन लीला से अभिभूत पशुपालन के महत्वपूर्ण पेशे को छोड़ कर ये गोपियाँ वहाँ पहुँचने लगी थीं जहाँ वह होता था।

बुद्धावतार

Tibet के तीसरे अवतार 'भगवान बुद्ध' के जन्म स्थान के बारे में कई मत-मतान्तर हैं। कोशलपुरम् वासी तो यही मानते हैं कि वे यहीं पैदा हुए थे। बुद्ध के पिता शुद्धोदन शाक्यों के राजा कपिलवस्तु के शासक थे। बुद्ध की माता का नाम माया देवी था। माया देवी कपिलवस्तु से मायके जा रही थीं कि रास्ते में लुम्बिनी नामक स्थान पर ही पास कुएँ के पास के पेड़ में बुद्ध का जन्म हुआ था। बुद्ध के जन्म के सात दिन के बाद ही माँ माया देवी का देहान्त हो गया था। माँ की मृत्यु के बाद बुद्ध का पालन पोषण उनकी मौसी और विमाता प्रजापति (गौतमी) ने किया।

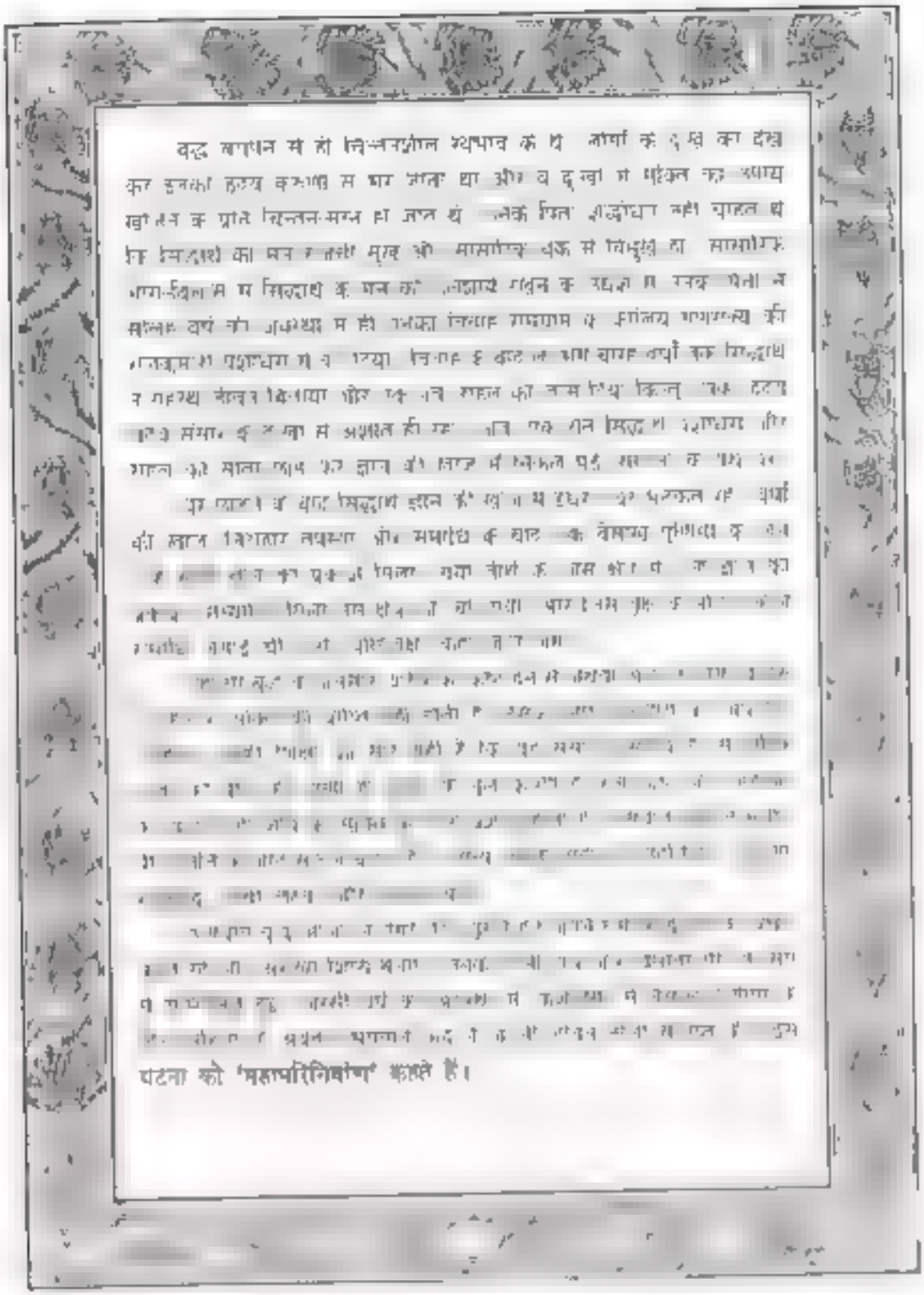

घटना को 'महापरिनिर्वाण' कहते हैं।

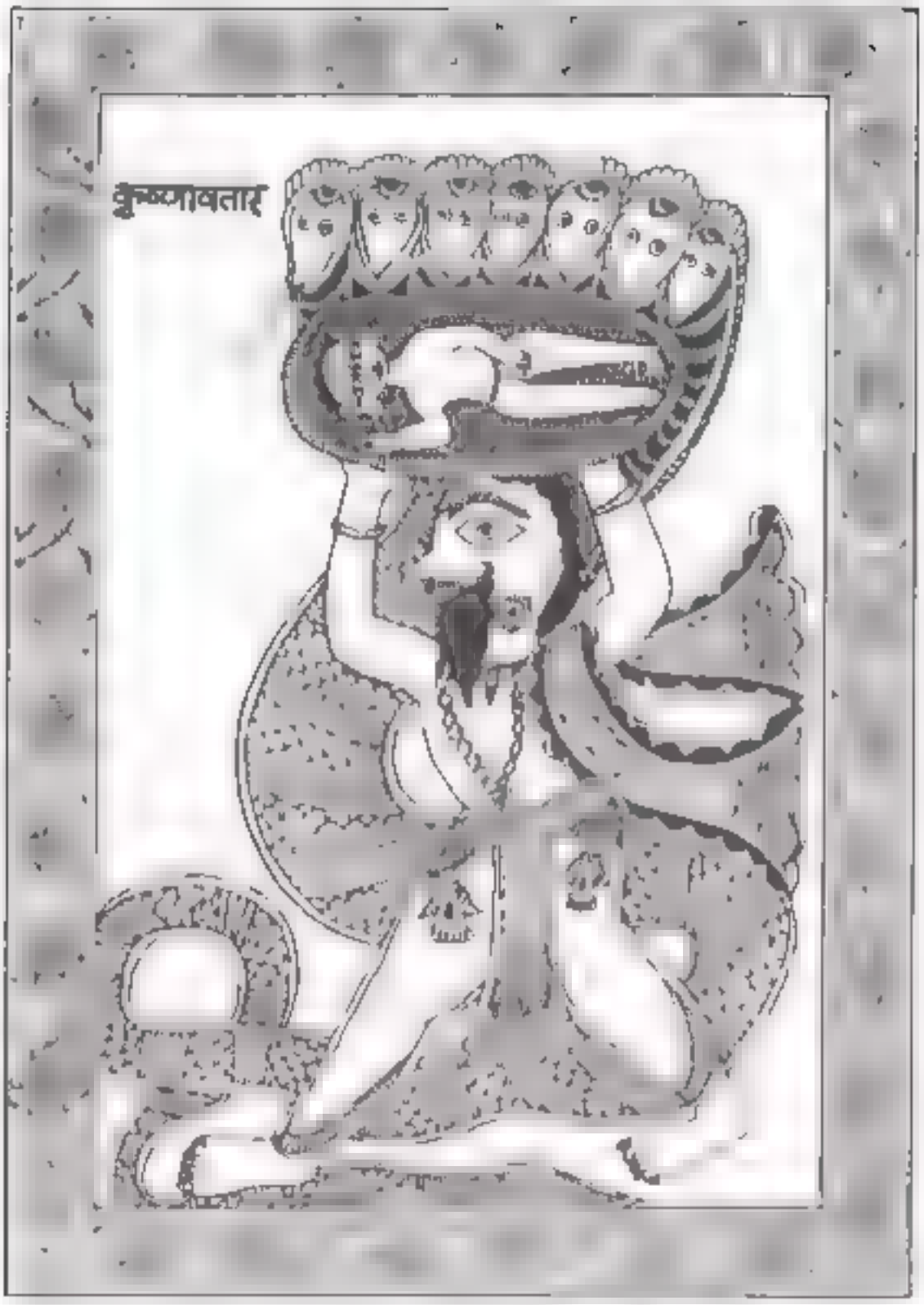
कृष्णावतार

कृष्ण

बुद्धावतार

कल्कि अवतार

विष्णु का अंतिम अवतार कल्कि अवतार माना गया है किन्तु पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार इन्हें अवतारों में न गिनकर वर्तमान समय को 'कलियुग' कहा गया है। यह माना है कि जब इस पृथ्वी पर कलियुग चरम सीमा पर होगा तब समाज में अधर्म, अनाचार, दुष्टाचार, भ्रष्टाचार के समान बढ़ता जायेगा और धर्म भी पाखण्ड, दिखावा और लालच की भेंट चढ़ जायेगा। इस युग में धन को मनुष्य की सच्ची खरी पहचान माना जायेगा। न तो पुण्य के लिए मन में कोई सम्मान और प्रेम होगा और न ही पाप के लिए मन में कोई डर। लोग अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक गिर जायेंगे। अधर्म, पापाचार, भ्रष्टाचार अपने चरम पर होगा और सर्वत्र इसका ही बोलबाला होगा। इस समय में ही भगवान विष्णु कल्कि अवतार लेकर पृथ्वी पर अवतरित होंगे और धर्म की पुनर्स्थापना करेंगे।

कल्कि पुराण के अनुसार कलियुग के अन्त समय पृथ्वी पर हिंसा और अधर्म अपने चरम सीमा पर होगा। सभी मनुष्य लोभ में धर्म की हत्या करने में संलग्न होंगे। इस समय में भगवान विष्णु कल्कि अवतार लेकर पृथ्वी पर अवतरित होंगे और धर्म की पुनर्स्थापना करेंगे। इस अवतार में भगवान श्रीहरि एक श्वेत अश्व पर आरूढ़ होकर अपने हाथ में देवदत्त नामक तलवार लेकर दुष्टों का संहार करेंगे। इस समय को **सत्ययुग का आविर्भाव होगा।**

[illegible] के दशावतार-पद गाने का प्रचलन है –

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् शृणु सुभदं शुभदं भवसारम्
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे।।"

[illegible] इस कल्कि अवतार में भगवान श्रीहरि के सम्पूर्ण शस्त्रों का कल्याणप्रद स्तुति को सुनें।"

कल्कि अवतार

हनुमान

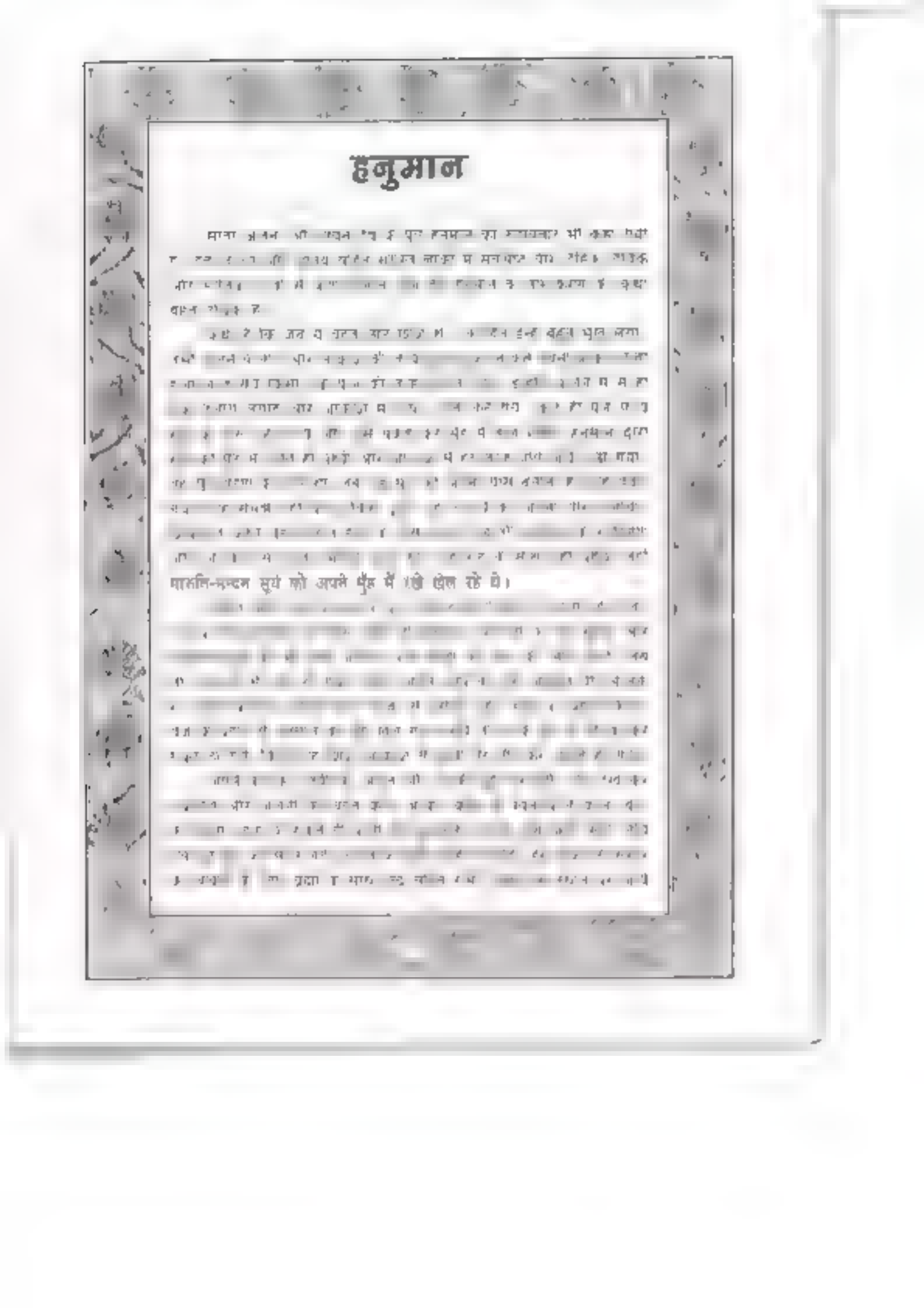

मालती-मन्दन सूर्य को अपने पैर में (छे खेल रहे थे।

माता माता अंजना और पवनदेव अपने अंजन पुत्र को पाकर फूले न समाए। उन्होंने बालक का नाम 'हनुमान' रखा। इस नामकरण के समय वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने इस बालक के हनुमान होने की घोषणा की। इन्द्र ने कहा कि इस बालक से इसका नाम 'हनुमान' इसलिए पड़ा है क्योंकि इसकी हनु टूटी हुई है। इसलिए आज से इसका नाम 'हनुमान' होगा। इस नामकरण संस्कार के समय वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने हनुमान को अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र दिए। इन्द्र ने कहा कि वायुदेव तुम्हारा यह पुत्र अजेय, विशाल और बलशाली होगा। लंका में सीता की खोज में यह तुम्हारे बहुत काम आएगा। ब्रह्मा

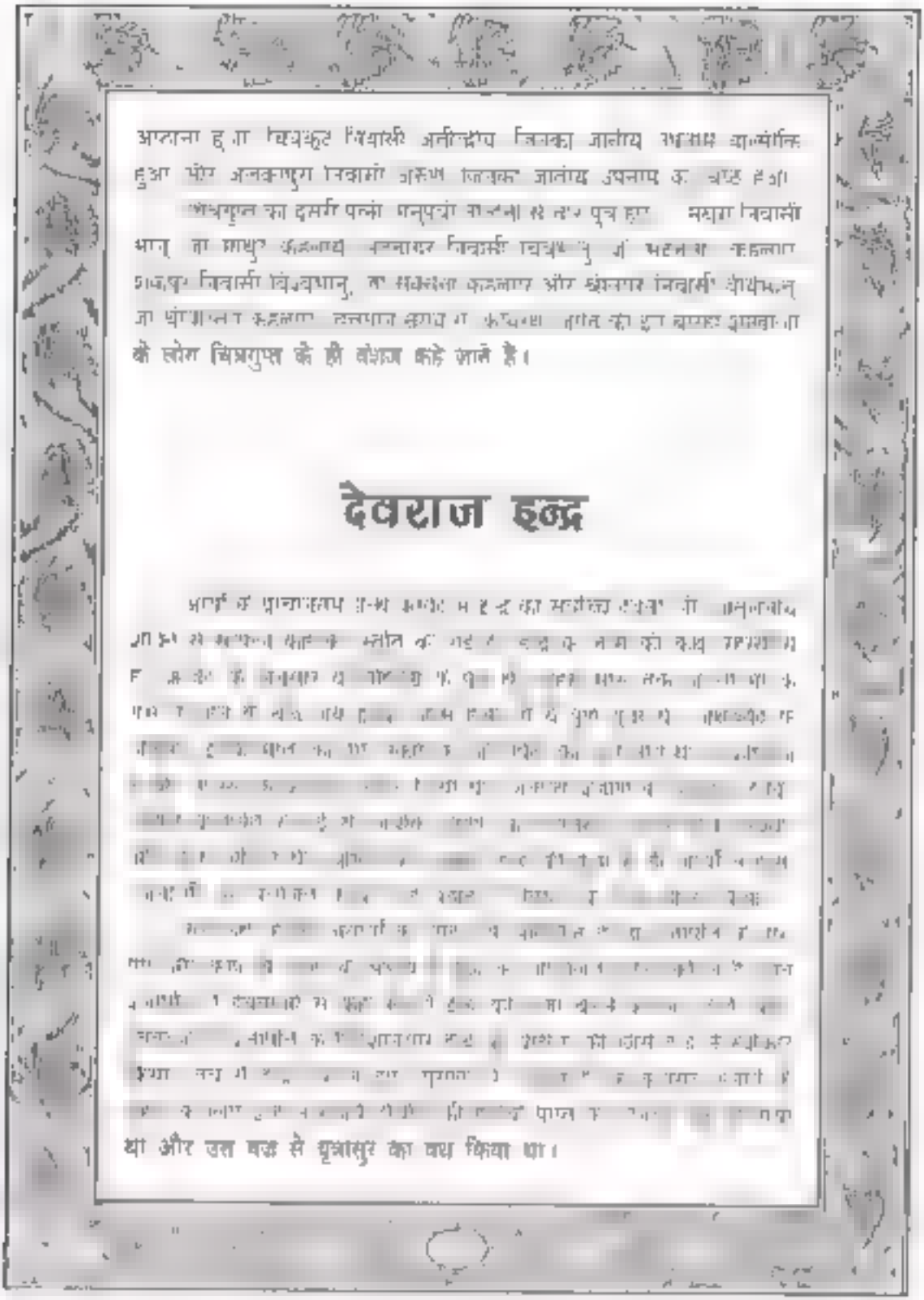

देवराज इन्द्र

रामायण महाभारत एवं अन्य पौराणिक साहित्यों में इन्द्र का सर्वाधिक भोग-विलास में डूबे रहने वाला, वृत्र-वध जैसे चोरी सुकार्यों के लिए विलासिता में डूबकर अपने यज्ञ का भाग न देने वाला, वृषाकपि की पत्नी इन्द्राणी पर मोहित होने वाला, अहल्या के साथ छल कर

हनुमान

चित्रगुप्त

कामदेव

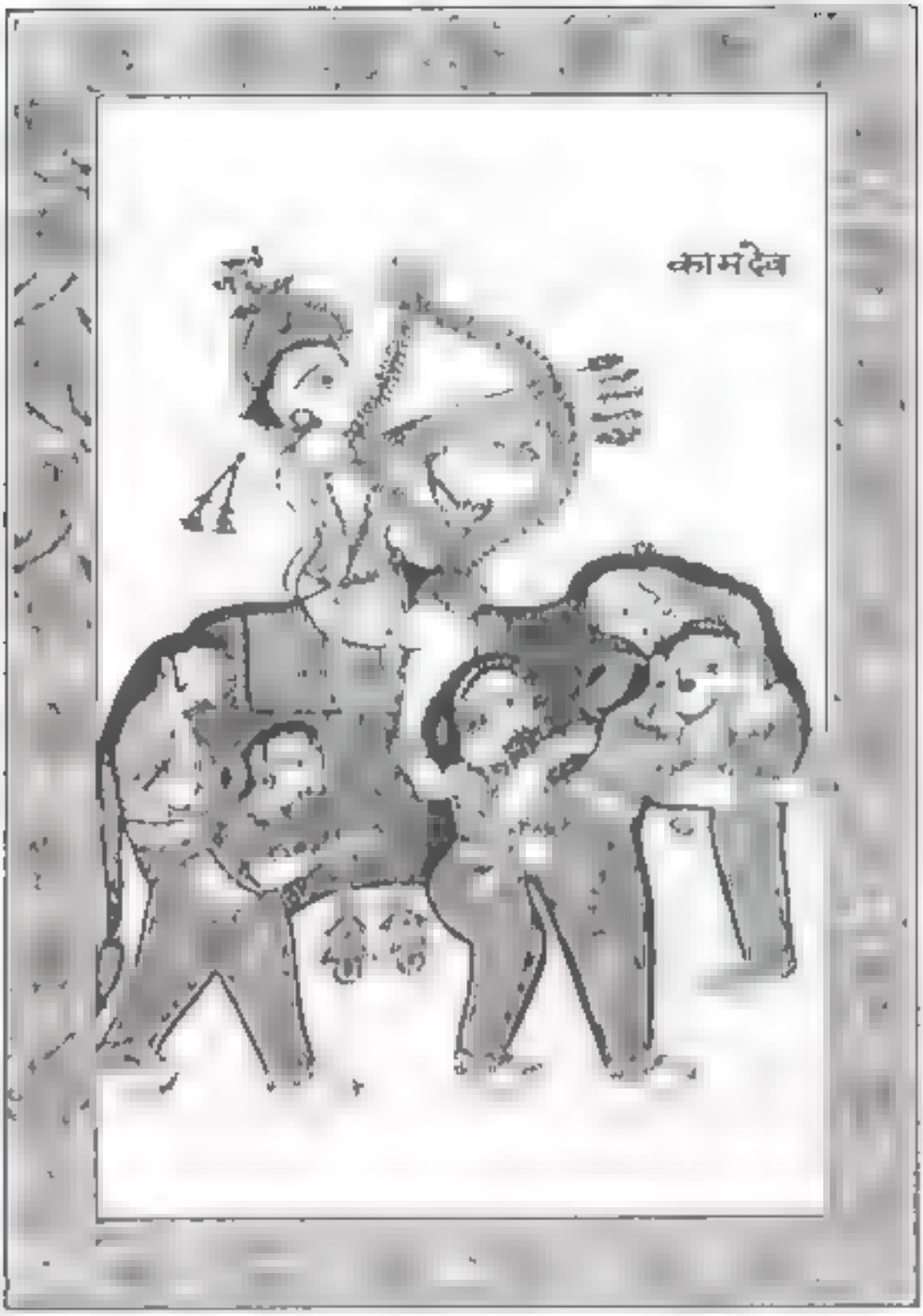
कामदेव

कार्त्तिकेय

[illegible] के [illegible] पर [illegible] के अनन्तर [illegible] [illegible] [illegible]

नारद

रूप पर मुग्ध हो कर मेरे गले में जयमाल डाल देगी उसके साथ मेरा विवाह हो जायगा फिर कुछ दिनों के बाद मैं आपको रूप वापस कर दूँगा भक्तों की अहंकार और अहंकार को नाश करने वाले भगवान विष्णु ने मन ही मन मुस्कराते हुए नारद से कहा कि वे यदि ऐसा ही चाहते हैं तो ठीक है और उन्होंने नारद को स्वयंवर स्थान पर जाने को कह दिया योगमायारी भगवान की माया से नारद का शरीर तो विष्णु जैसा हो ही गया जिसे देख देख कर नारद फूले न समा रहे थे किन्तु उनका मुँह बन्दर वाला हो गया था जिस वह स्वयं नहीं देख पा रहे थे। वानरमुख नारद को देख कर स्वयंवर-स्थल पर एकत्रित सब समूह हँसी से लोटपोट हो रहा था राजकुमारी अपनी सखियों के साथ जब स्वयंवर-मण्डप में आयी तो सबसे आगे खड़े 'वानरमुख नारद' को देख कर मुँह फेरते हुए आगे बढ़ गयी क्रोध विह्वल नारद की विचित्रावस्था देख कर किसी ने उन्हें एक दर्पण दिया दर्पण में अपना वानरमुख और शेष शरीर विष्णु जैसा देख कर नारद को समझते में आया कि विष्णु ने धोखा दे कर उनके साथ घिनौने मजे की और भी सहायता के लिये विष्णुलोक गये थे अपने हितैषी विष्णु को बहुत कुछ भला बुरा सुनाने के बाद उन्हें ने दिया तुमने मेरा सुन्दर मुख स्त्री सुख से वंचित किया है वैसे ही तुम्हें भी मनुष्यों वाला शरीर और विवाह के बाद फलित समय में तुम्हें बन्दर की सहायता लेना पड़ेगा विष्णु को शाप दे दी नारद को पुनः दिया शाप है जो नारद द्वारा दिए गये दोनों शाप रामावतार में फलित हुए।

नारद

अनुभाग – 3

शक्ति

[illegible] जब आदि शंकराचार्य ने भगवती आनन्दलहरी की रचना करने हेतु कैलास से कश्मीर स्थित सरस्वतीजी के पास का एक फूल लाने को कहा है। [illegible] तब सरस्वती कहती हैं कि मेरु पर्वत पर [illegible] यह फूल केवल वहीं पाया जाता है। [illegible] पार्वती के अनेक नाम हैं। [illegible] सर्प का अपने गले पर लिपटाये रहना है और भस्म से अपने शरीर को सजाये रखना है। [illegible] उनका तो यह हाल है। [illegible] पर [illegible] वे [illegible] समृद्धि [illegible] से अपने भिक्षुक पति का भरण पोषण करती हैं। [illegible] वे [illegible] हैं। [illegible] वे सदा [illegible] सुख समृद्धि [illegible] हैं।"

'वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा निवसनं,
श्मशानं क्रीडाभूस्तनुजनिवहो भूतगणकः ।
ममैवं सामग्री जगति विदुषेव स्मरहरो
यतस्तस्यैश्वर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा ।।'

[illegible] पार्वती [illegible] हैं। [illegible] वे [illegible] हैं। [illegible] वे [illegible] हैं। [illegible] वे

गीता में भगवान कहते हैं कि अज अजन्मा होते हुए भी निर्विकारस्वरूप होते हुए भी और समस्त भूतों के ईश्वर होते हुए भी वह अपनी प्रकृति के आधार पर स्थित हो कर संसार में अत्याचारियों के विनाश और सत्यव्यवस्था के विकास के लिए अपनी माया के बल से बार-बार जन्म लिया करते हैं वस्तुतः अपनी जिस शक्ति के बल से वह जन्म लेते हैं, वही माया है।

मायाशक्ति त्रिगुणात्मक है जिसमें ईश्वर सृष्टि पालन और संहार के महान कर्मों का सम्पादन करते हैं और सनातन धर्म परम्परा में त्रिदेव का उपदेश धारण करते हैं एक ही परमात्मा शक्तिसहित होने की स्थिति में त्रिगुण विस्तार निश्चित्य निर्विकल्प सत्ता है और वही पुरुष आद्या अपनी त्रिगुणात्मक मायाशक्ति से संबलित हो कर जगत नियन्ता हो जाता है ये तीन शक्तियाँ हैं **महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती**

एक ही परमशक्ति विभिन्न-विभिन्न नामों एवं रूपों में प्रकट हो कर अपने विभिन्न-विभिन्न कार्यों का सम्पादन करती है कहीं शक्ति कभी संहारकर्त्री के रूप में संहारात्मक कार्य करती है समाजसेवा परोपकार शान्ति-स्थापना और सामूहिक कल्याण के कार्य करवाती है और विश्व प्रसूता के रूप में सृष्टा ब्रह्मादि को भी उत्पन्न किया करती है और समाज में संहारात्मक शक्तियों में अपने विभिन्न सहायकों के द्वारा संहार और नाश के अभियान में लगे असुरों को और आसुरी प्रवृत्तियों से समाज को मुक्त करने के लिए उनके विरोध में खड़ी होती है और उनसे युद्ध करती है उनको मारती है और भगवान शिव और दूसरों और भगवान के साथ में विचरण करती है

यह मायाशक्ति कहीं पुरुष रूप में विद्यमान हो कर प्रकट होती है और कहीं स्त्रीरूप धारण कर के कार्य में लगती है यह माया स्वयं पुरुष और स्त्री दोनों रूपों में प्रकट होती है दुर्भाग्यवश आज समाज में स्त्रियों के प्रति होने वाले अत्याचार हिंसा और व्यभिचार जैसी आसुरी प्रवृत्तियों के मूल में इसी माया को ही प्रधान रूप से देखा जा रहा है

महाकाली

प्रतिष्ठित है, वहीं काली है

मूर्ति इस संहारतत्त्व का ही पुनीक है।

महावलि

छिन्नमस्ता

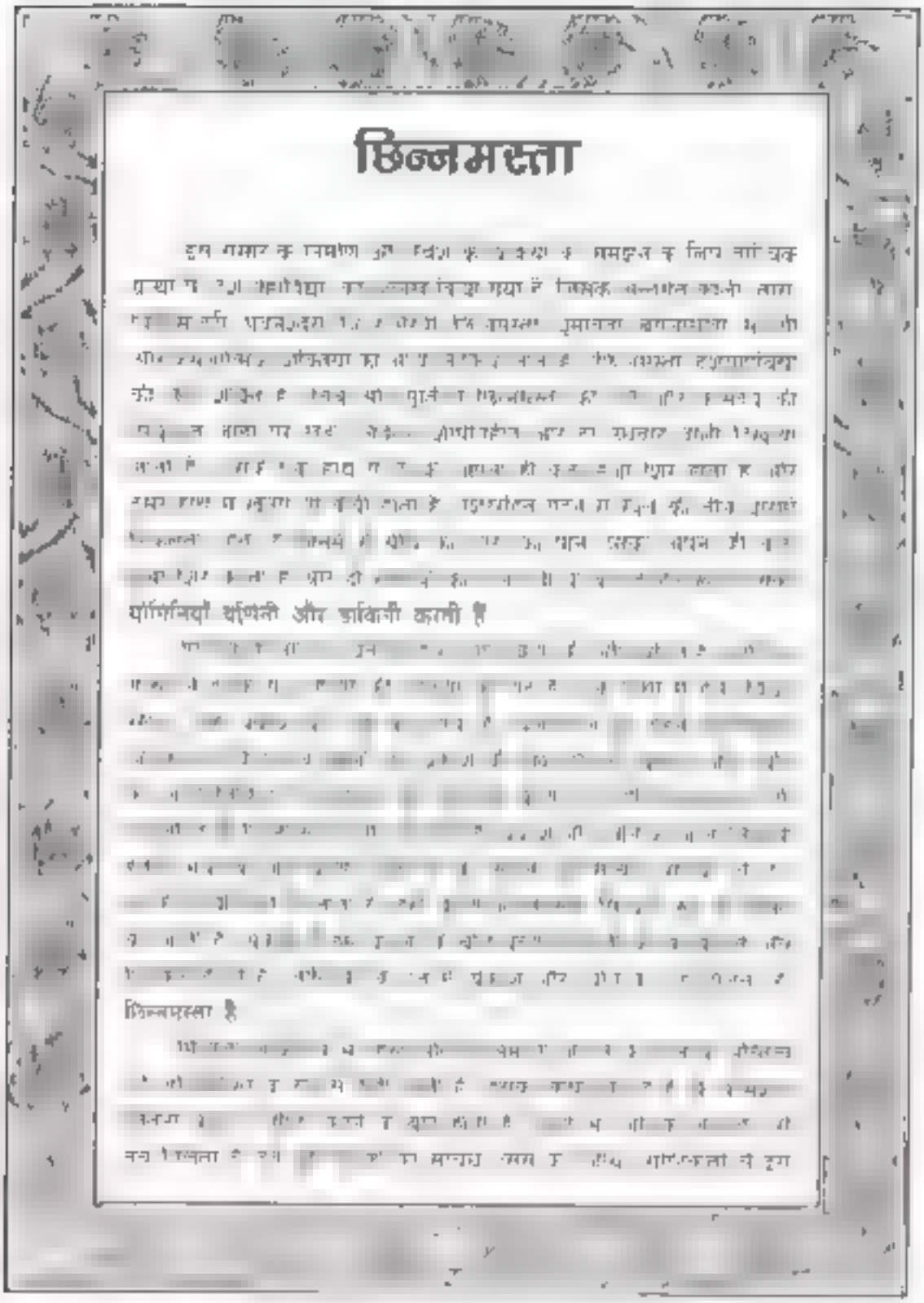

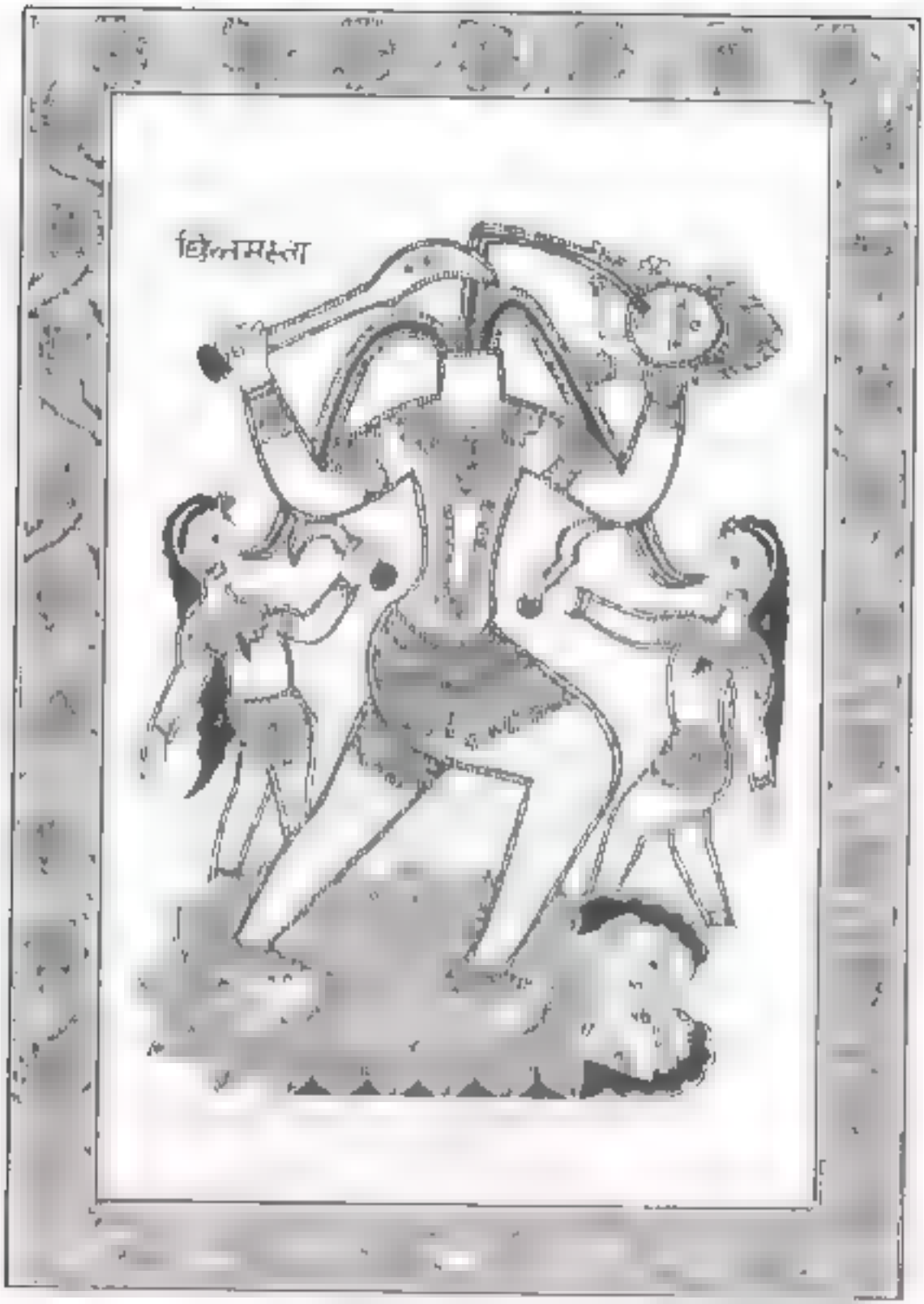
छिन्नमस्ता

महालक्ष्मी

दुर्गा

तथा सत्वगुण का उत्कर्ष माना जाता है।

अग्नि के तेज से नाना रंग के वस्त्र से कान और [illegible] के तेज से भौंह प्रकट हुए

[illegible] ने तेजराशि से [illegible] उस देवी के दिव्य रूप को देखने [illegible] [illegible] पर [illegible] के अंग-अंग से [illegible] [illegible] विश्वकर्मा को बुलाकर कहा, हे विश्वकर्मा! तुम [illegible] [illegible] [illegible]

दुर्गा

महासरस्वती

"एकाम्बिकतमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि॥"

[illegible] है। अम्बा शब्द का अर्थ होता है माता। अम्बितमा का अर्थ माता है तथा मानुका [illegible] है। ऐसे माता सरस्वती है [illegible] सरस्वती देवीतमा है।

[illegible] करते हैं। वसन्त पृथमी को श्रीपंचमी भी कहा जाता है।

सरस्वती

नयना योगिनि

[illegible]

"नयना योगिनी" कहा जाता है इस योगिनी का लौकिक वास-स्थान कामरूप- का माहुरा (असम) में बताया जाता है, किन्तु यह योगिनी सदैव पृथ्वी पर भ्रमणशील रहती है कोबरपर के समक्ष आपादमस्तक चित्रादि और नख-शिखान्तिम वर-वधू की किसी तान्त्रिक मारक शक्ति से रक्षा का भार इन्हीं के ऊपर होता है कोबरपर के चारों कोण में चित्ररूप में इनकी उपस्थिति होती है। यह देवी घूँघट से अपना आधा चेहरा और एक आँख ढके रहती है जिसको साधे पर बाँस की बनी एक डलिया

नयना योगिनी

[illegible]

कही गई है

नयना योगिनि

सीता - कथा

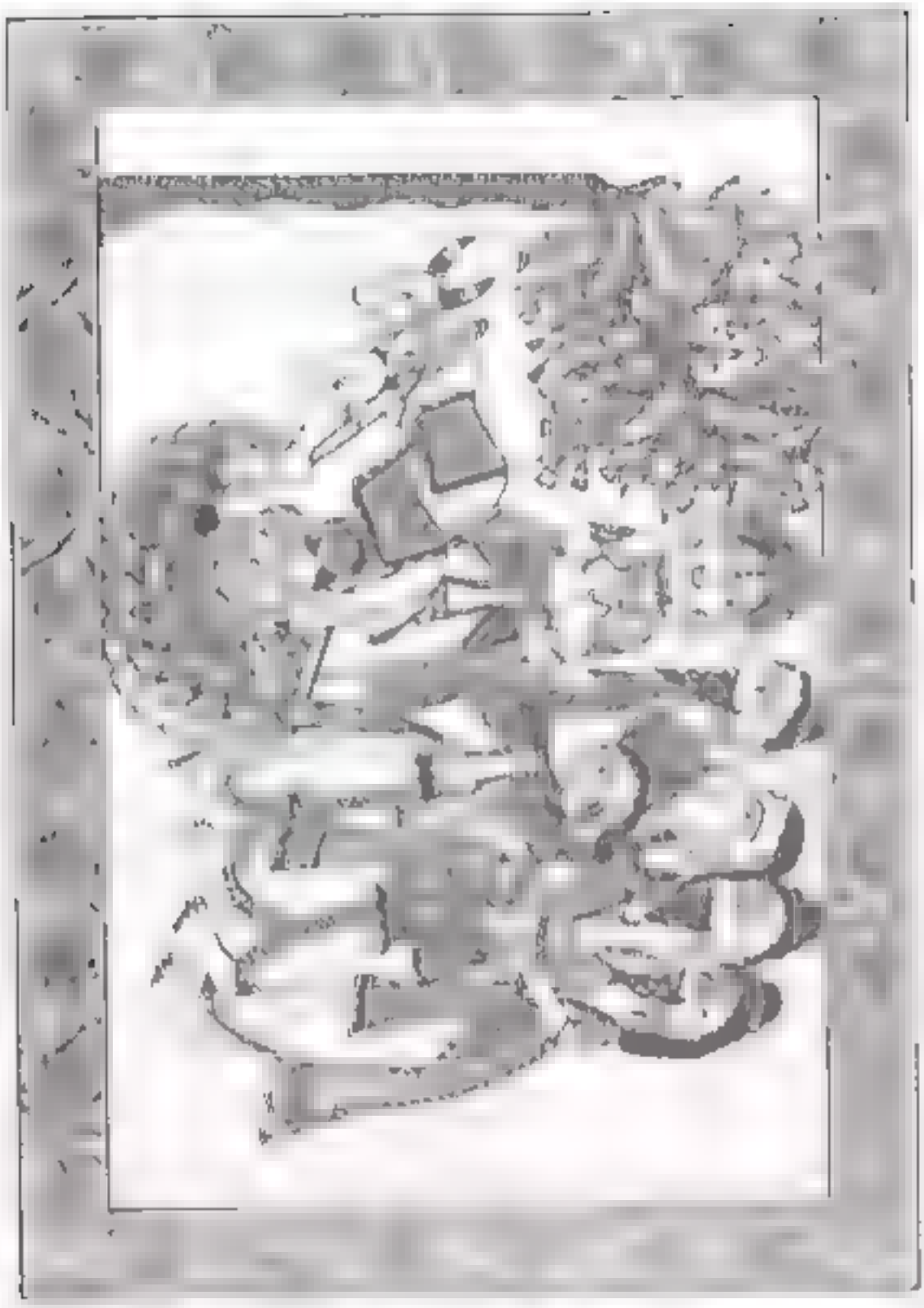

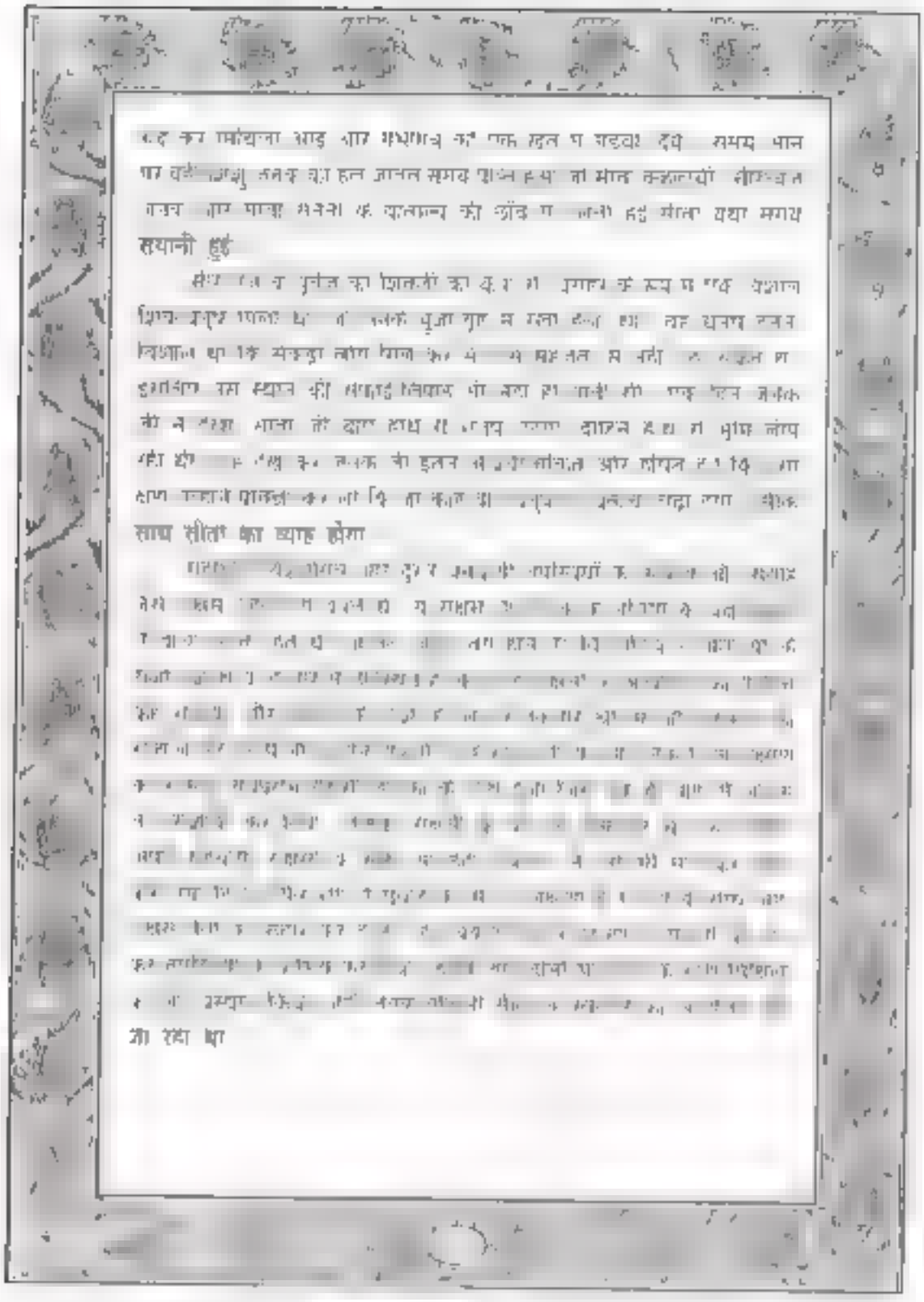

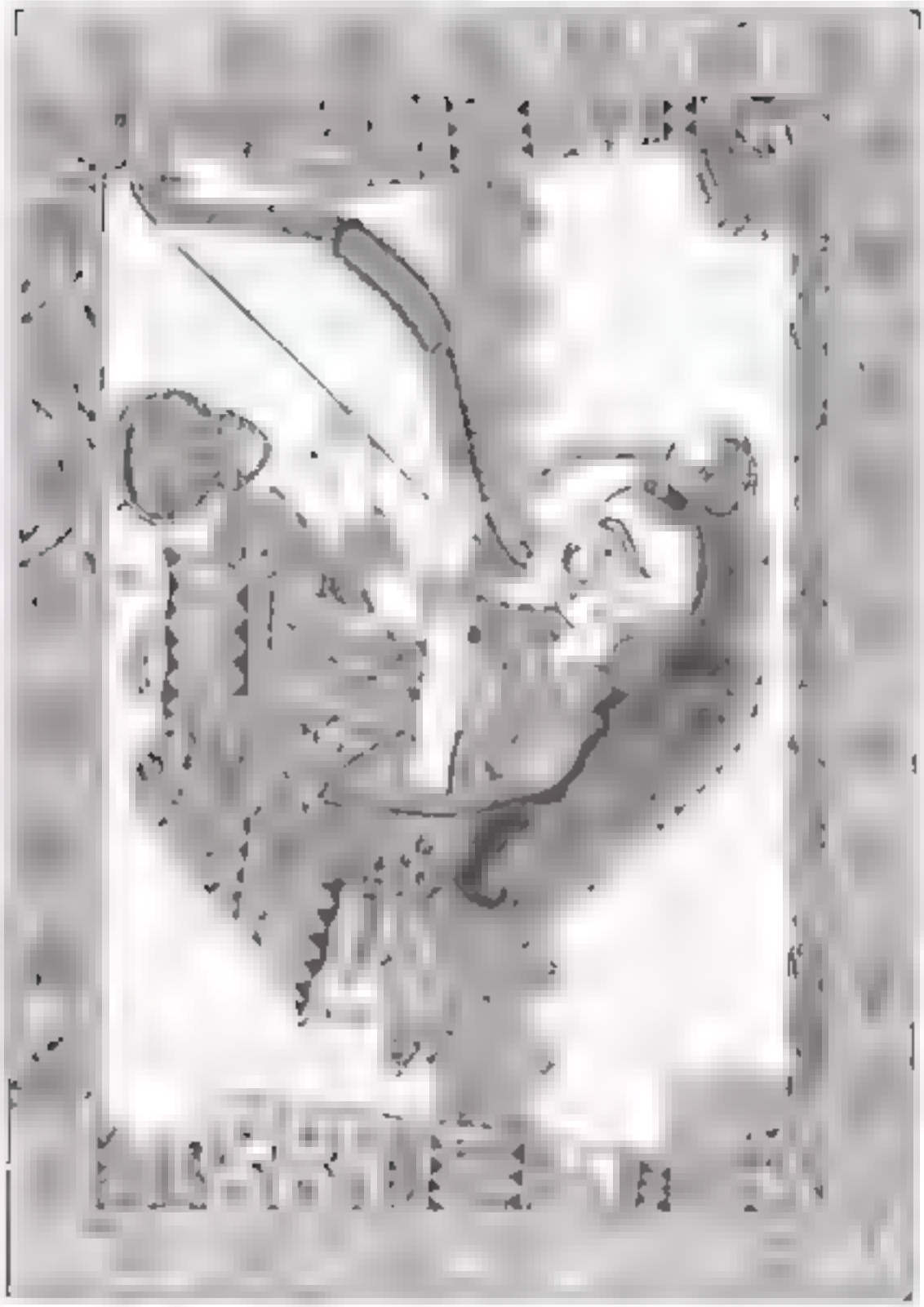

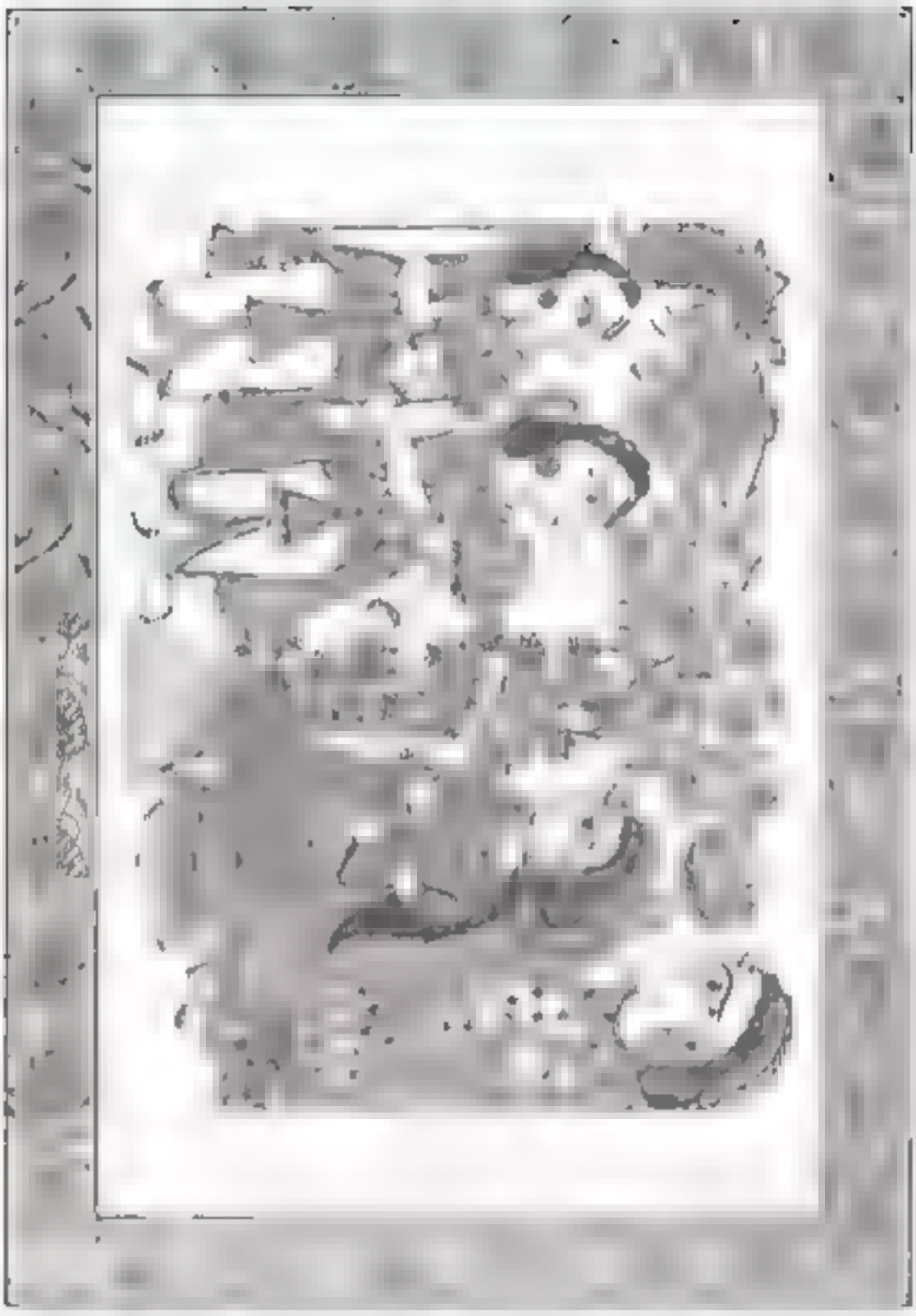

महर्षि विश्वामित्र सहित राम-लक्ष्मण का भावभीना स्वागत करने गए जनक ने उन्हें उत्तम निवास में ठहराया अगले दिन प्रातःकाल श्रीराम और लक्ष्मण पूजा के लिए पुष्प लाने तक जो की फुलवारी में पहुंचे सयोगवश सीता भी उसी समय फुलवारी स्थित पार्वती मन्दिर में पूजा करने गई थीं उनकी एक सखी ने फुलवारी में फुलवारी का समाचार देकर श्यामल राम-लक्ष्मण का रूप और नारि सुलभ लज्जा-संकोच सीता जी का मन्दिर से बुला लिया।

फुलवारी में श्रीराम को निर्निमेष श्याम छवि को देख कर सीता की सखियां उन्हें श्रीराम को सौंपकर स्वयं पुष्प चुनने लगीं सीता भी उसी स्थान पर खड़ी हो गईं श्रीराम और सीता के मुखमण्डल चन्द्रमा के दर्शन के लिए उत्सुक चकोर बन गए

स्वयंवर की सभा सजधज कर तैयार थी। दूर दूर से आए हुए राजा महाराजाओं के आसन लगे हुए थे। धनुष को भलीभांति परख कर और उसे सावधानी से रखा गया। फिर राजा जनक ने राजकुमारी सीता को बुलाने के लिए सखियों को भेजा। सीता के आने पर उन्होंने उनसे कहा कि वे सभा में जाकर धनुष को उठाएं और उस पर प्रत्यंचा चढ़ाएं। जो ऐसा करेगा, उसी के गले में वे जयमाला डालेंगी। सीता ने सभा में जाकर धनुष को प्रणाम किया और उसे उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाई। फिर उन्होंने जयमाला हाथ में ले ली। उस समय उनके मुख पर लज्जा के भाव थे। वे धीरे-धीरे चलती हुई राजा जनक के पास पहुंचीं और बोलीं –

"अब जानि कठिन शिवचाप यह मेरे बिलोकि जननी उर जासी।
तातें आनि नाथ सुनु धीरा। निज बिरद बड़ि भीर हरहु।।"

अब कठोर शिवधनुष को उठाने में मेरे कोमल गात पुरुषों सीता में श्रीराम को पाकर उनका हृदय प्रेम और सुख से भर गया। उन्होंने सीता का विवाह लिखा ही नहीं।

जनक जी के वचन सुन कर सभी सभा-सदों की दृष्टि श्रीराम पर

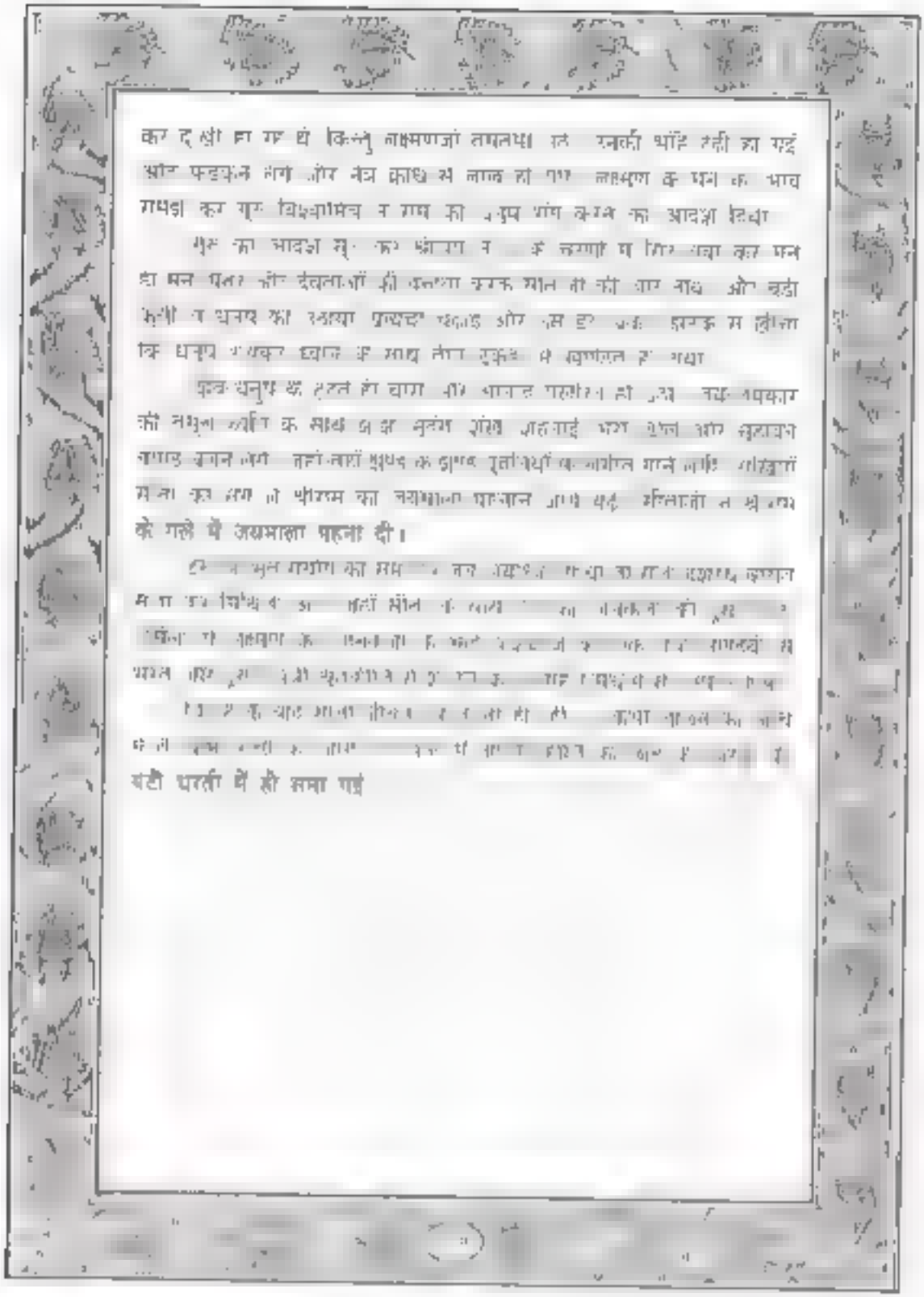

कर दक्षों का यज्ञ थे किन्तु लक्ष्मणजी लक्ष्मण की भौंहें तनी हुई थीं और फड़कने लगे और नेत्र क्रोध से लाल हो गए लक्ष्मण के मन के भाव समझ कर श्री विश्वामित्र ने राम को धनुष भंग करने का आदेश दिया

गुरु का आदेश सुन कर श्रीराम ने के चरणों में सिर नवा कर मन ही मन पितर और देवताओं की वन्दना करके मन ही मन बोले और बड़ी फुर्ती से धनुष को बायें हाथ में उठा लिया और इस को इस तरह से खींचा कि धनुष बीच से तड़ाक से टूट गया

धनुष के टूटने की धमाकेदार आवाज़ सुनकर सभी लोग एक साथ की तरह से आवाज़ से और खुशी से फूले समाए नहीं। तभी सीता ने राम के गले में जयमाला पहना दी।

सीता को राम के गले में जयमाला पहनाते देख कर परशुराम क्रोधित हो उठे और बोले

धरती में ही समा गई

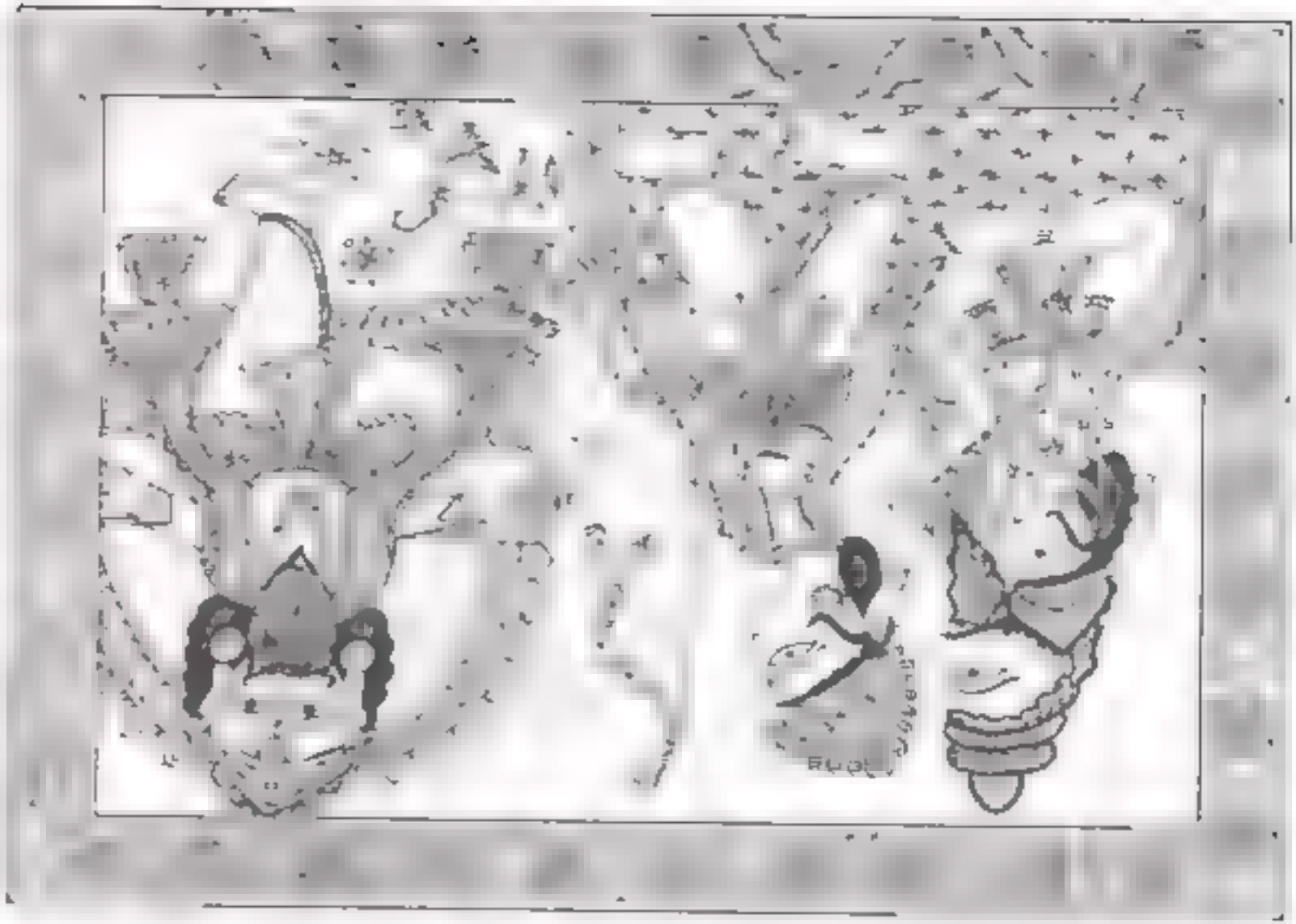

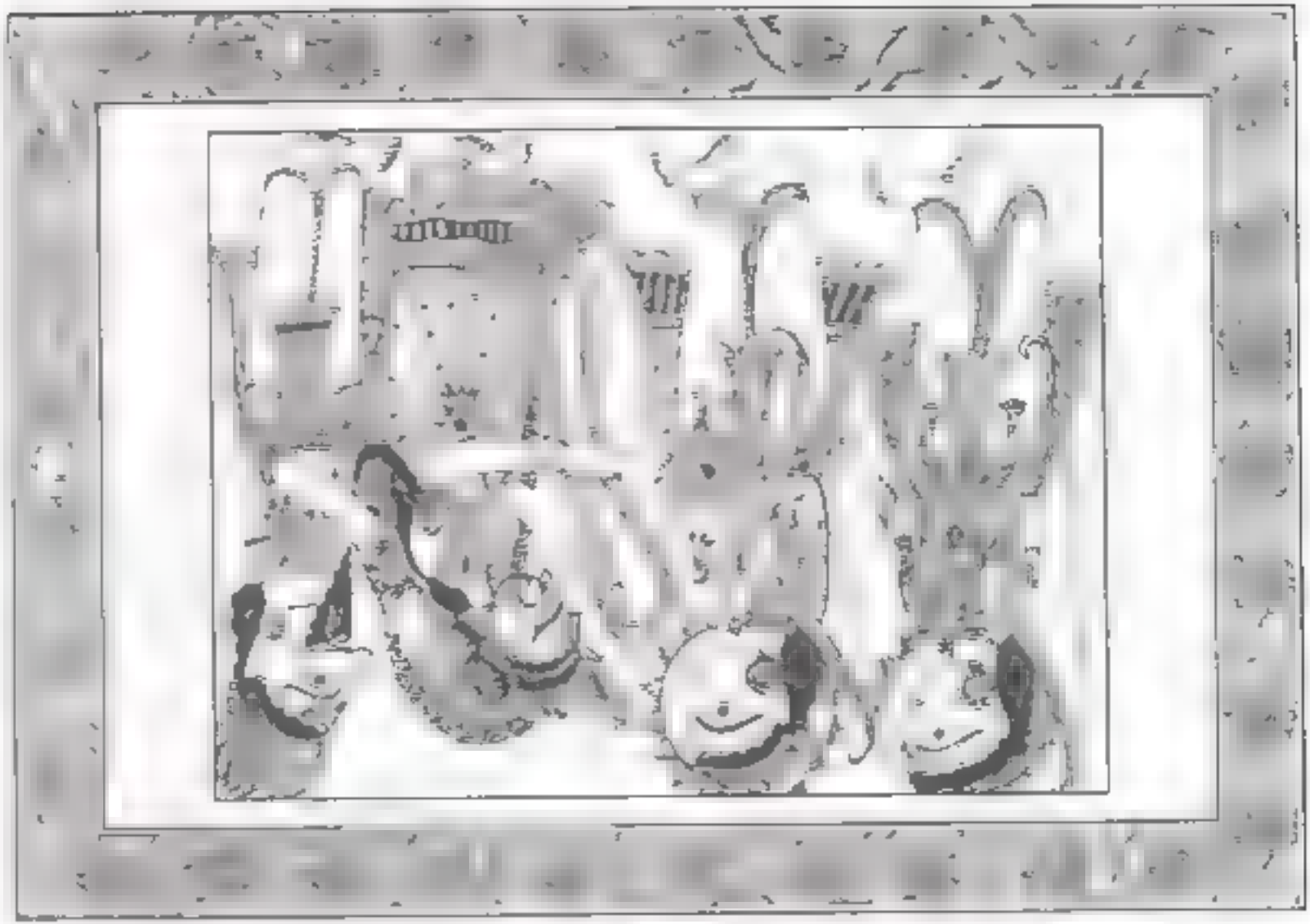

कृष्ण लीला

कर राधा के संग रासलीलाएँ प्रमुख हैं

प्राण की सोख लिये

[illegible] [illegible] [illegible] [

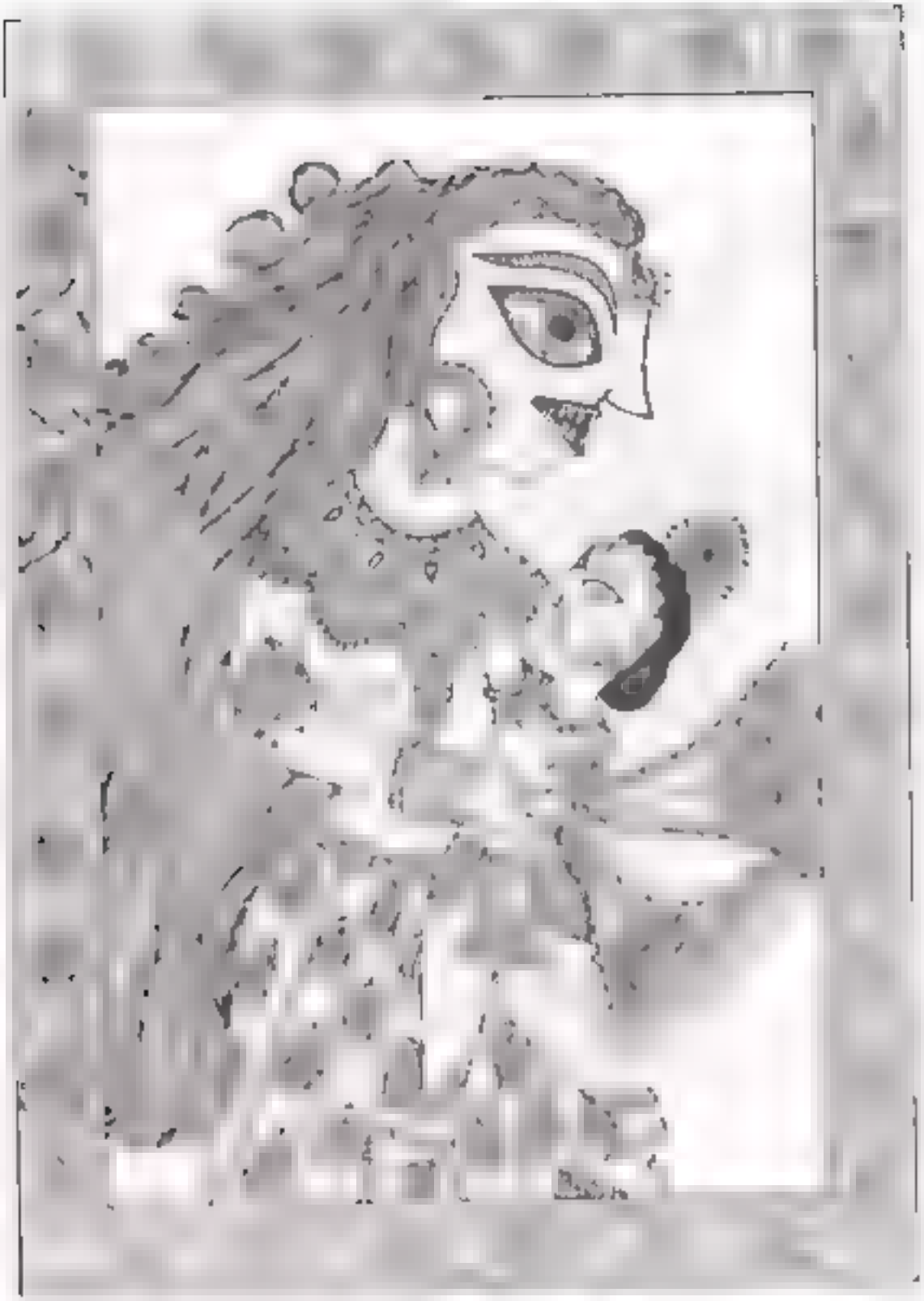

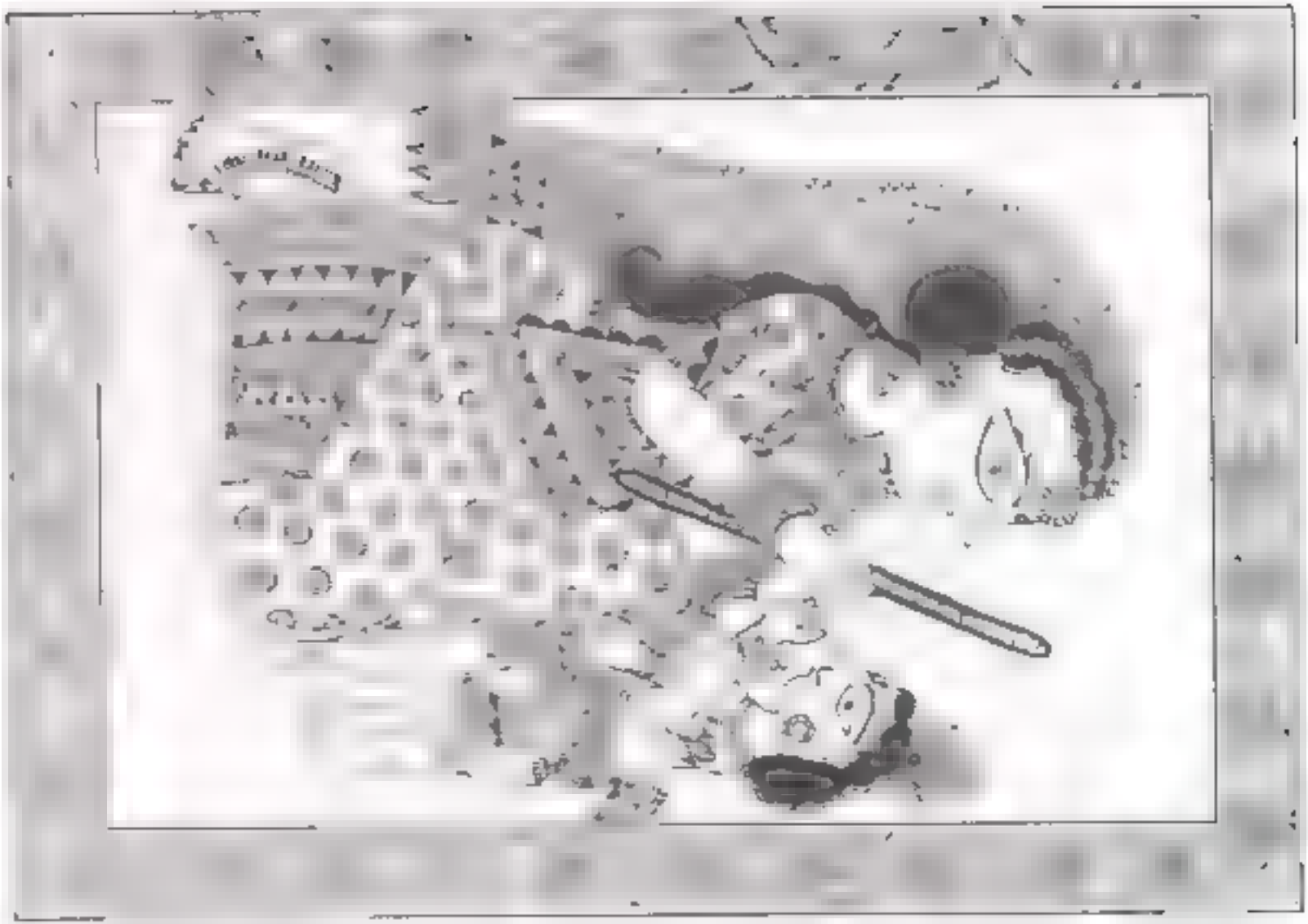

खण्ड – 2

अनुभाग – 4

मिथिला चित्र में मानवाकृति

मूल रूप में यह चित्रकला पौराणिक प्रसंगों पर आधारित थी और इसी कलेवर में इस पाश्चात्य दुनिया के व्यावसायिक बाजार ने स्वागत किया। पौराणिक प्रसंगों से लिपटी यह चित्रकला रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों के सौरभ से लिपटी रही और आज भी जबकि इसकी व्यावसायिक यात्रा अपने चौथे दशक में है, इसमें

रखे जा रहे हैं। साथ इन प्रसंगों से भी अपने विचार के अनुसार चित्रांकन की प्रेरणा निखार सकते हैं

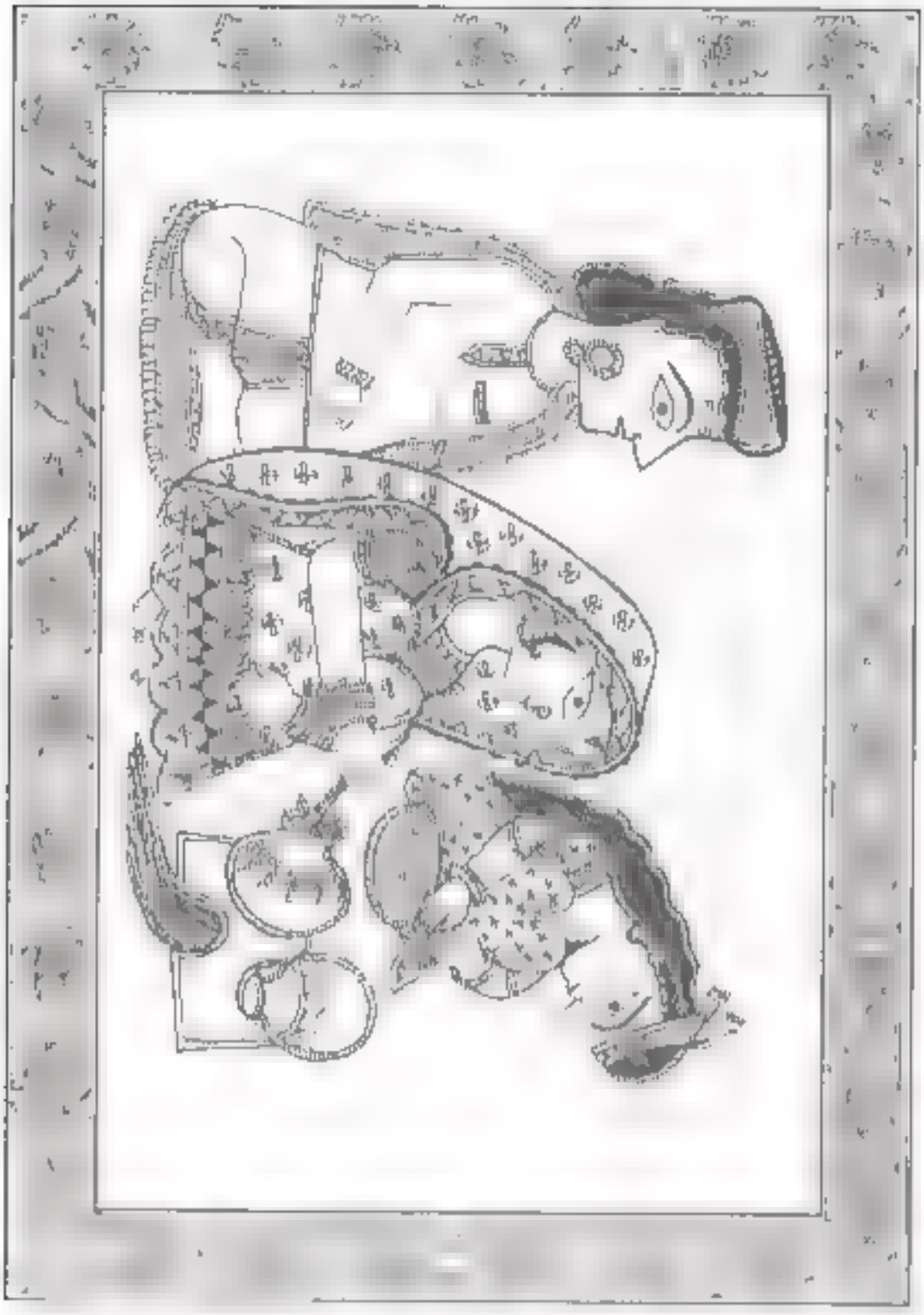

खण्ड - 2

अनुभाग - 5

मिथिला चित्र में दानवाकृति

के रूप में कल्पित पात्रों से धर्म शास्त्रों की रक्षा की

यज्ञमान पोथियों में रहती थी।

"सर्वे वेदविदः शूरा सर्वे सुपरिनिष्ठिता

कृतं पित्रा मह रक्षा यज्ञमाहनपर्वते ।" "ये सभी वेद के पण्डित शूरवीर

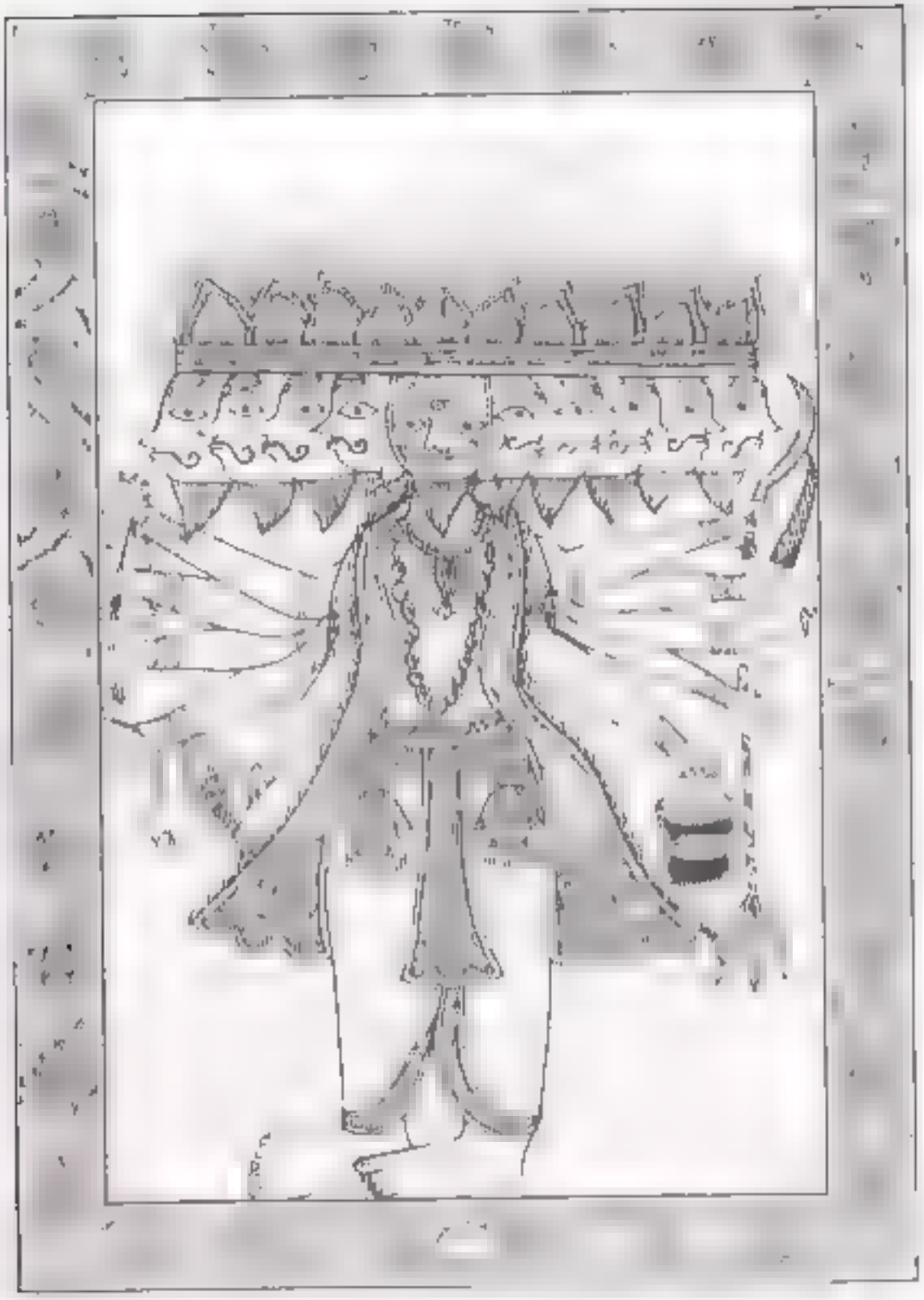

अनुभाग – 6
मिथिला चित्र में जीवाकृति

अपने पति के जीवंत रहने तक ही माछ बनाती हैं

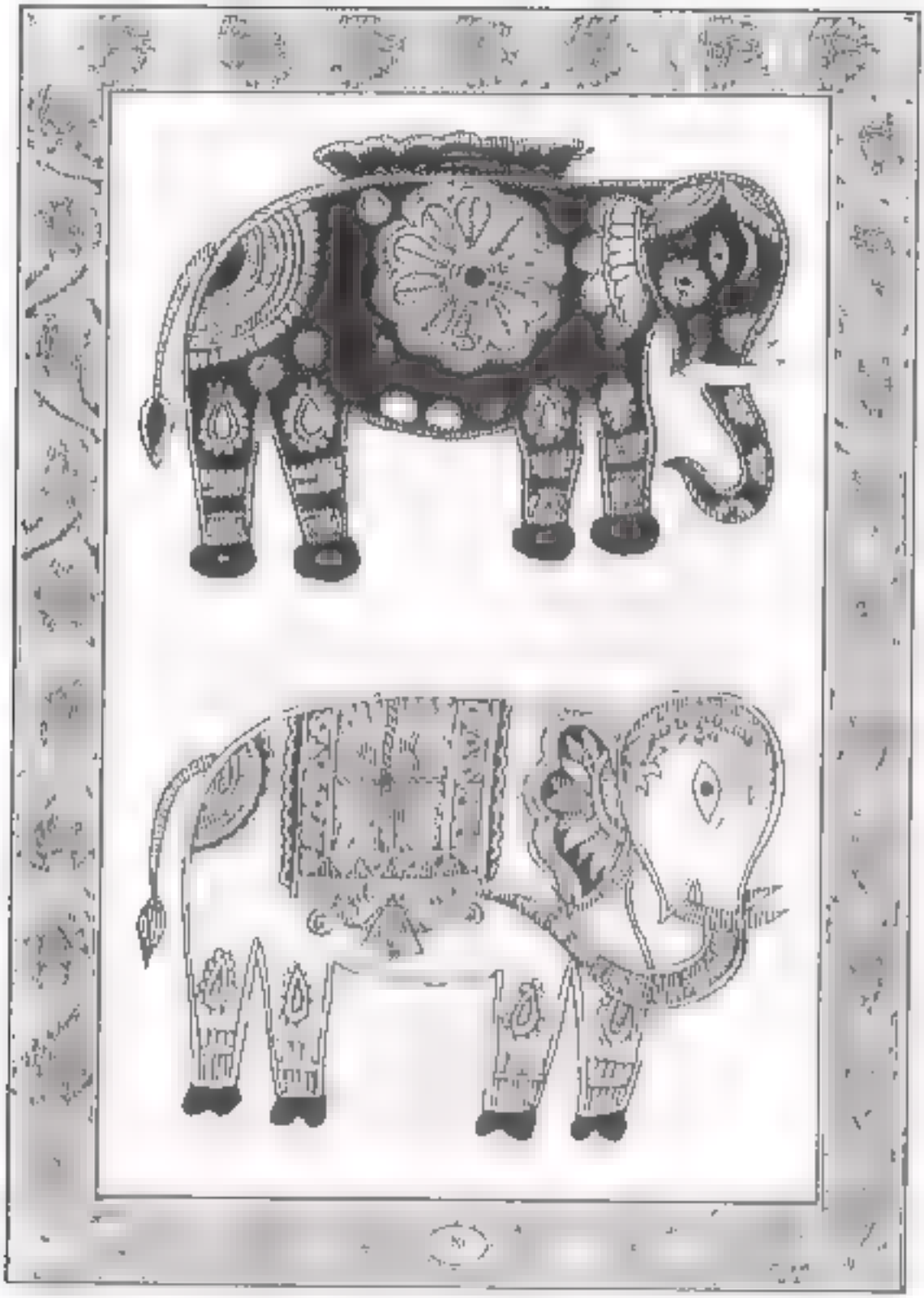

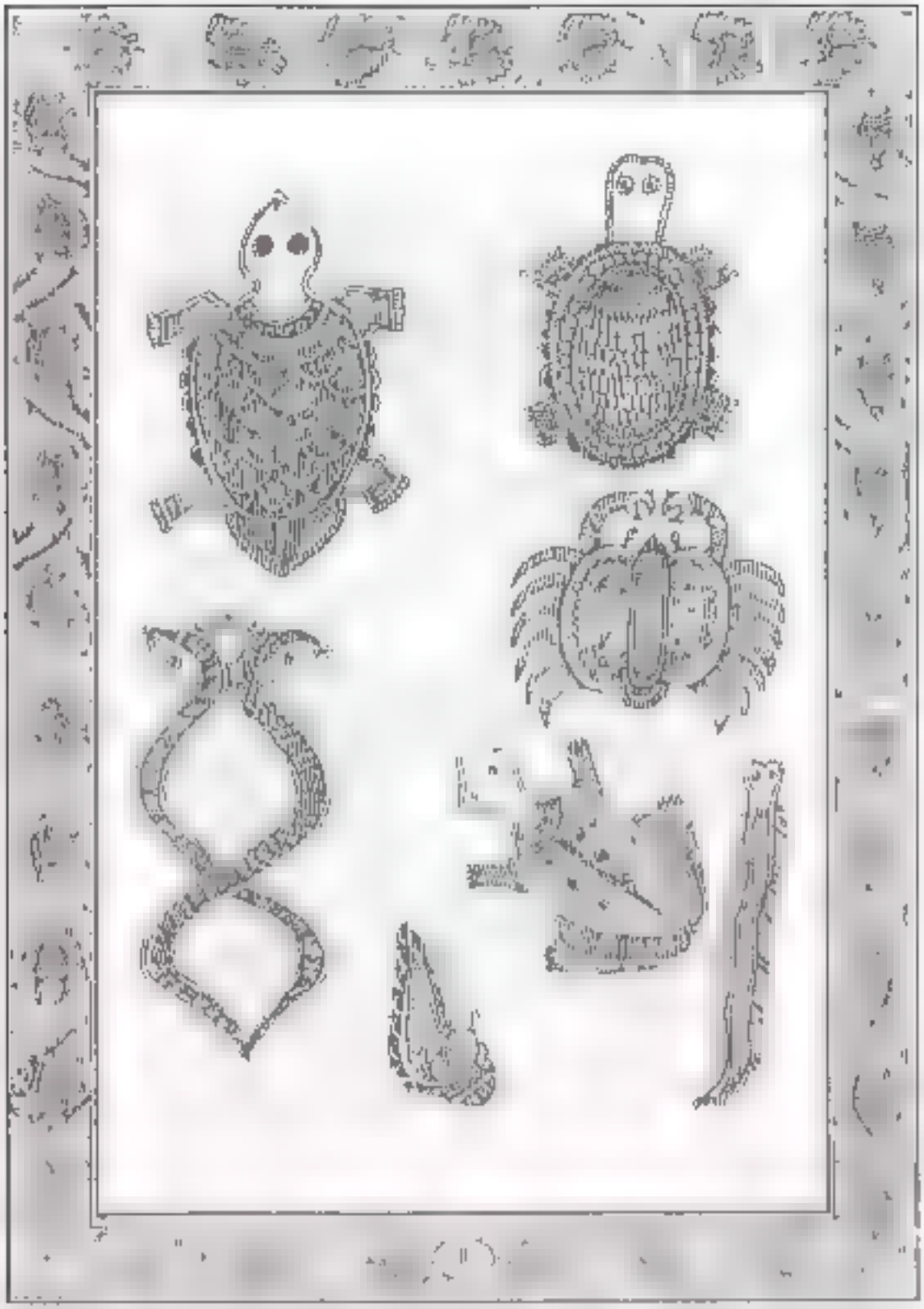

[illegal_text]

[illegal_text]

[illegal_text]

है नागकन्या को यद्यपि कि सिंहला चित्र में घोड़े जैसा नाग की तरह चित्रित किया जाता है किन्तु इसके पूरी मानवी रूप भी है रत्नप्रभा पटक्कथा में भोग दन्तकथा में इच्छारूपधारी सम्मोहनी अत्यन्त रूपवती स्त्री के रूप में इसका उल्लेख किया गया है पौराणिक कथा में भी नागकन्या का उल्लेख मिलता है नागकन्या रूपों में उलूपी से अर्जुन का विवाह हुआ था कृष्ण के रनिवास में भी नागकन्याएँ थीं इससे माता के रूप में नागिन का होना सम्भव है कि नागकन्याएँ किसी नाग जाति से सम्बन्धित थीं

पालिवाङ्मय सिंहला चित्र में घोड़े जैसे नाग का अभाव है किन्तु पौराणिक साहित्य में नाग के मनुष्य रूप में स्वीकार किया गया है सिंहला की दन्तकथाओं में एक नाग को उसके जाति के दो पक्षधारी है समस्याओं में और धनदेवी की साली के रूप में भक्त-भक्त लोगों के साथ में देवी जैसा का रक्षकों के रूप में सहायता करती है

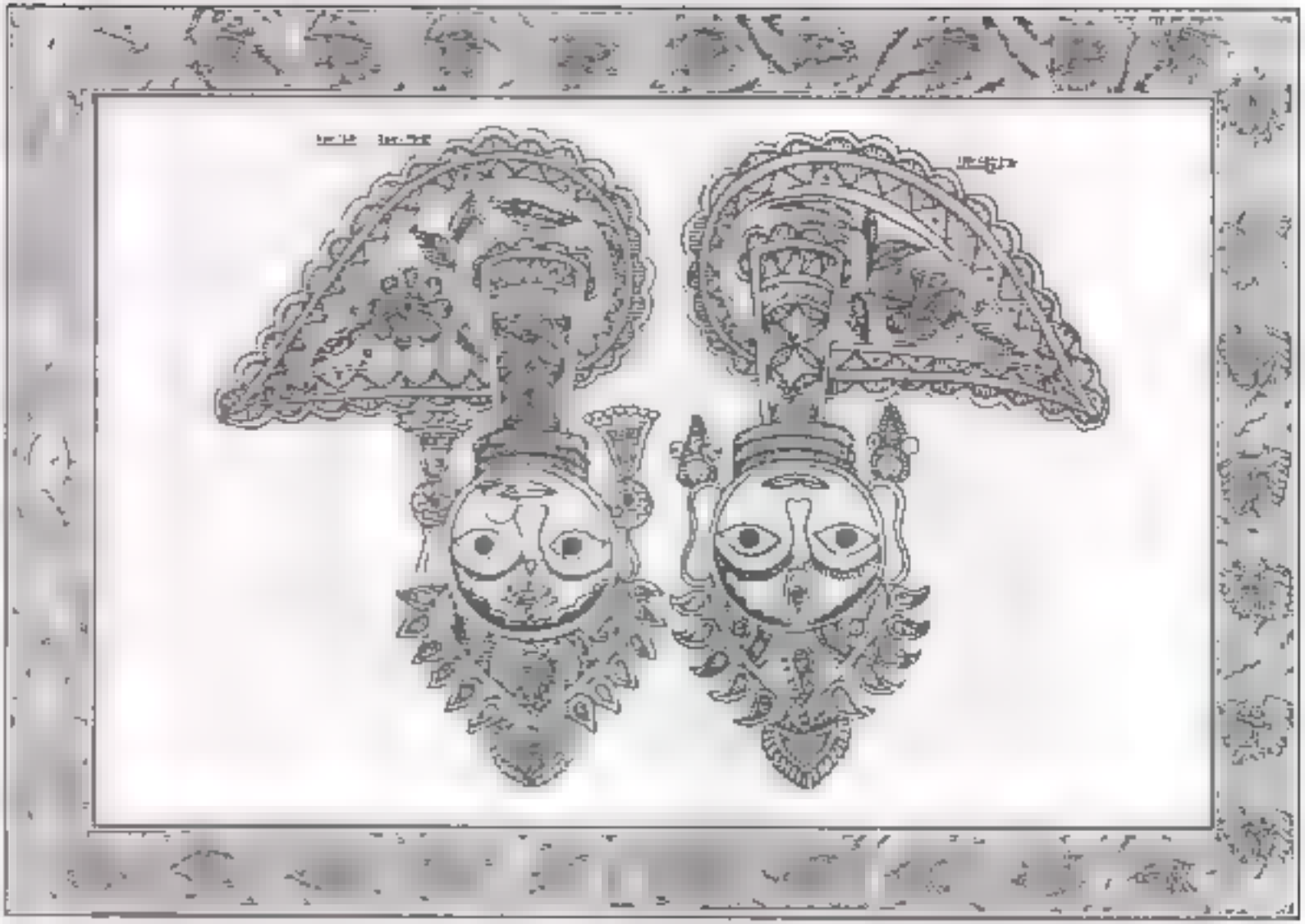

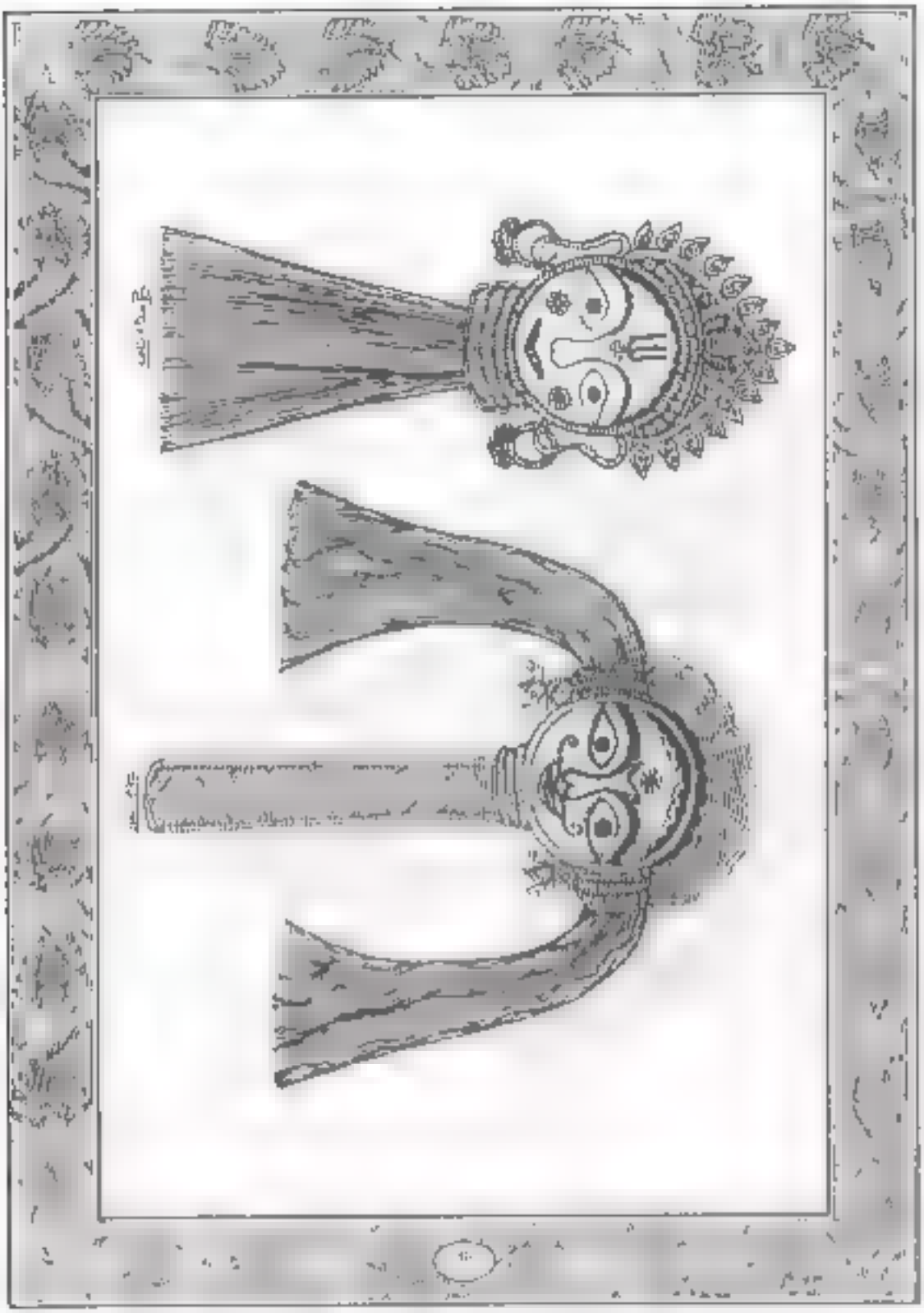

सामा-चकेबा

"सामा-चकेबा" मिथिला लोक-कलाओं का संगम-तीर्थ है, जहाँ मृण्मूर्ति-कला, लोकगीत, प्रेमगाथा, सामाजिक परम्परा और भाई-बहन का निर्मल प्रेम सदेह साकार होते हैं। किसी 'गीत-नाटिका' की तरह मैथिल स्त्रियाँ, (दिवाली के बाद) भातृ-द्वितिया से ले कर कार्तिक पूर्णिमा तक, प्रत्येक रात इस खेल का आयोजन करती हैं। बाँस के बने डाले में कच्ची मिट्टी, पटसन, सरी, फूस और बाँस के फट्टे से तैयार की गई सामा, चकेबा, साम्ब, चुगला, भौरा, डिहुली, वृन्दावन, सतभैया रखे जाते हैं। ये सभी पात्र मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, कीट और रास्ता हैं, जिनका मिथिला मृण्कला में मानवीकरण हुआ है।

इस खेल की सामा बहन का भाई साम्ब है, चकेबा या चकवाक पक्षी सामा का पति है, चुगला और डिहुली पति-पत्नी हैं जो कृष्ण के चरेरू नौकर हैं, वृन्दावन वन है, बाटो बहिन रास्ता (पथ) है, भौरा है, सतभैया (सात भाई) हैं और स्वयं लोकगीत देह धारण कर इस खेल में उपस्थित रहते हैं।

कथा है कि भगवान कृष्ण की पत्नी जाम्बवती से उत्पन्न बेटी श्यामा हर रोज वृन्दावन घूमने जाती थी। इसी क्रम में उसे किसी से प्रेम हो गया। इस बात की अधूरी-अधूरी जानकारी कृष्ण की चरेरू नौकरानी डिहुली को हो गई। डिहुली समझती थी कि श्यामा वृन्दावन में रहने वाले ऋषियों के साथ रास-रंग में लीन रहती है। डिहुली ने इस रहस्य को अधिक भयंकर बना कर अपने पति चुगला से बताया। चुगला उस व्यक्ति को कहा जाता है जो किसी के पेट की बात जान कर दूसरों के आगे उस बात को 'रहस्य' की तरह प्रकट कर देता है, अर्थात दूसरों से उसकी चुगली इस प्रकार करता है कि दो पक्षों में अनायास वैर, कलह, ईर्ष्या और शत्रुता का बीजारोपन हो जाता है।

एक दिन चुगला ने कृष्ण से उनकी बेटी श्यामा के प्रेम-प्रसंग की चुगली कर दी। चुगला ने कृष्ण को बताया कि घूमने के बहाने श्यामा नित्य वृन्दावन जाती है और वहाँ के ऋषियों के साथ प्रेम-क्रीड़ा करती है। उसने यह भी बताया कि श्यामा को इस काम में वृन्दावन, वृन्दावन जाने वाले रास्ते (बाटो बहिन) और भौंरा – सभी मदद करते हैं। जब भी अवसर मिलता था, चुगला किसी

न किसी तरह और अधिक नमक-मिर्च लगा कर कृष्ण से चुगली किया करता था। उस समय श्यामा का भाई साम्ब परदेश गया हुआ था। चुगले की चुगलपन से कोपित हो कर श्यामा और ऋषियों को कृष्ण ने शाप दे दिया – "तुम लोग पक्षी बन कर वन-वन घूमते रहो।"

कृष्ण के शाप से श्यामा 'सामा' पक्षी बन गयी। सात ऋषि भी पक्षी बन गए। सामा अब कैसे अपने प्रेमी से मिले? श्यामा के प्रेमी ने ऋषियों से प्रार्थना की, "हे ऋषिगण, आप सब अपने तपोबल से मुझे भी पक्षी बना दें ताकि मैं अपनी प्रेयिका से मिल सकूँ।" ऋषियों ने विकल प्रेमी पर दया करके उसे भी पक्षी बना दिया। अब सामा-चकेवा दोनों खुशी-खुशी वृन्दावन में साथ रहने लगे। पक्षी का जीवन, सर्दी-गर्मी, आँधी-वर्षा, सामा-चकेवा लाख दुःखों के साथ शापित जीवन बिताने लगे, लेकिन इतने पर भी दुष्ट चुगले को सन्तोष नहीं हुआ।

एक दिन चुगला को पता लगा कि वृन्दावन में सामा अपने प्रेमी चकेवा के साथ रहती हुई पहले से भी अधिक सुखी हो गई है। उसे इस बात से और भी जलन होने लगी। उसने बहुत चाहा कि सामा-चकेवा को किसी तरह मार दिया जाए लेकिन चंचल पक्षी उसके हाथ नहीं लगे। अन्त में हार-थीज कर उसने वृन्दावन में आग लगा दी। उसी समय संयोग से सामा का भाई साम्ब परदेश से घर वापस आ गया। घर में हर जगह खोजा, उसे श्यामा बहन कहीं नहीं मिली। बाटी बहन और भौरे ने साम्ब को सब कुछ बता दिया। साम्ब दौड़ा-दौड़ा वृन्दावन आया। वहाँ सब कुछ धू-धू जल रहा था। साम्ब ने पहले वृन्दावन की आग बुझायी, फिर अपनी बहन और बहनोई को खोज कर लाया। पक्षी बने बहन-बहनोई की दशा देख कर बहुत दुःखी हुआ। उसने अपने पिता कृष्ण की बहुत प्रार्थना की। दयालु कृष्ण का हृदय पसीज गया। कृष्ण ने सामा और चकेवा को शाप से मुक्त कर दिया। अपने भाई की सहायता से सामा फिर से मनुष्य का जीवन पा सकी और अपने पति के साथ सुख से रहने लगी।

इस कथा को आधार बना कर मिथिला की स्त्रियाँ कार्तिक मास में कच्ची मिट्टी से सामा बना कर अपने भाइयों के साथ से गीत गाती हैं, उनके यश-वैभव की कामना करती हैं और उनके दीर्घायु होने की भगवान से प्रार्थना करती हैं। इस खेल में चुगला अपने स्वभाव के कारण सबों से गाली ही सुनता रहता है लेकिन यह दुष्ट आपको आज भी कहीं मिल सकता है, अपने ही आस-पास में !

लोक कला को 'जीवन और शिक्षण' का माध्यम बनाने में साधनारत गुरु-शिष्या

कृष्ण कुमार कश्यप

शशिबाला
पिता : श्री उदनारायण लाल (बरहेता)
पति : प्रो. श्री उमेश कुमार कंठ (बिसहथ)

भारती विकास मंच, बरहेता, लहेरिया सराय, दरभंगा